Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

जन ज्ञान

(१६ सितम्बर १९८७ से १५ अक्तूबर १९८७ तक)

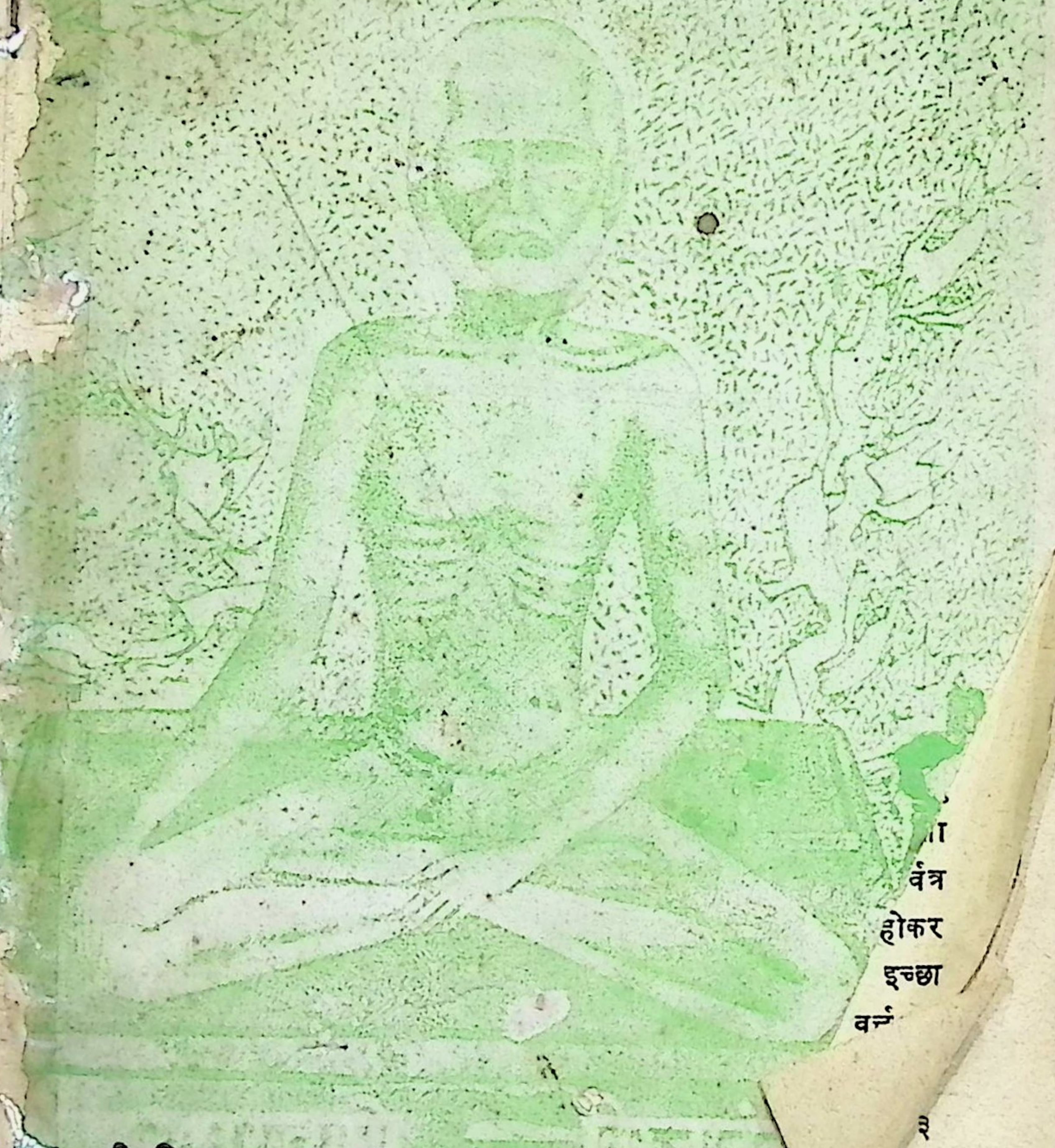

स्वामी विरजानन्द दण्डी
२० सितम्बर को जिनकी पुण्य तिथि है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सितम्बर को जिनकी पुण्य तिथि है

गुरुवर स्वामी विरजानन्द जी दण्डी

करतारपुर (जिला जालन्धर) के समीप गंगापुर ग्राम में संवत 1854 मे एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम बृजलाल रखा गया। पांच वर्ष की उम्र में बालक पर शीतला रोग का प्रबल आक्रमण हुआ। जीवन तो बच गया लेकिन बालक सदा के लिए चक्षुविहीन हो गया। अभी बालक ग्यारह वर्ष का ही था कि माता-पिता का देहान्त हो गया। घर वालों के दुर्व्यवहार से तंग आकर बालक बृजलाल घर छोड़ने पर विवश हो गया। यह किशोर करतारपुर से सीधा ऋषिकेश पहुंचा। सम्भवत: ऋषिकेश में ही बृजलाल ने अपना नाम विरजानन्द दण्डी रख लिया। यहाँ एक वर्ष तक गंगा जल में बैठकर वे गायत्री मन्त्र का जाप करते रहे। यहां से विरजानन्दजी कनखल चले गये और स्वामी पूर्णानन्द से व्याकरण पढ़ते रहे।

एक दिन विरजानन्द जी गगा में स्नानकर विष्णु स्तोत्र का पाठ कर रहे थे। अलवर नरेश विनयसिंह दण्डी जी के मधुर स्वर और शुद्ध उच्चारण से बहुत प्रभावित हुए। वार्त्तालाप करने पर वे युवा संन्यासी की अद्‌भुत प्रतिभा से चकित रहे गये। महाराजा उन्हें अपने साथ अलवर ले गये, जहां वे महाराजा को पढ़ाते रहे। कुछ समय सोरों में निवास के बाद भरतपुर जाकर वहां के महाराजा को भी पढ़ाते रहे। भरतपुर से मथुरा आकर स्थायी रूप से वहीं रहने लगे। संवत् 1916-17 में स्वामी दयानन्द सरस्वती अध्ययन के लिए दण्डी जी के पास आये और तीन वर्ष तक उनसे व्याकरण आदि विषय पढ़ते रहे। दण्डी जी ने उन्हें आर्ष प्रणाली से शिक्षा-दीक्षा दी, स्वामी जी और दण्डी जी का गुरु-शिष्यभाव वैसा ही था, जैसा बाद के दिनों में स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस में स्थापित हुआ।

आश्विन वदि त्रयोदशी संवत् 1925 को लगभग 82 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे स्वामी दयानन्द जी के माध्यम से वेदों के श्रेय के अधिकारी हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—राकेशरानी
वेदमंदिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-110036
फोन नं० 745325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज रोड,
दिल्ली-110005
फोन—5724741
वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
आजीवन 501 रुपये
विदेश में : 1501 रुपये
यह अंक : 3.50 रुपए
आश्विन, संवत् 2044
सितम्बर, 1987 : वर्ष 20, अंक 5

वेदोपदेश

परमेश्वर की पूजा करो

यो रायो३वनिर्महान्त्सुपारः
सुन्वतः सखा।
तस्मा इन्द्राय गायत
ऋग् १-४-१०

पदार्थ—हे विद्वान् मनुष्यो, जो बड़ों से बड़ा (सुपारः) अच्छी प्रकार सब कामनाओं की परिपूर्णता करने हारा (सुन्वतः) प्राप्त हुए सोमविद्या वाले धर्मात्मा पुरुष को (सखा) मित्रता से सुख देने तथा (रायः) विद्या-सुवर्ण आदि धन का (अवनिः) रक्षक और इस संसार के उक्त पदार्थों के जीवों को पहुंचाने और उनका देने वाला करुणामय परमेश्वर है, (तस्मै) उनकी तुम लोग (गायत) नित्य पूजा किया करो।

भावार्थ—किसी मनुष्य को केवल परमेश्वर की स्तुतिमात्र करने से सन्तोष न करना चाहिये, किन्तु उसकी आज्ञा में रहकर और ऐसा समझ कर कि परमेश्वर मुझको सर्वत्र देखता है, अधर्म से निवृत्त होकर और परमेश्वर के सहाय की इच्छा करके सदा उद्योग ही में वर्त्तमान रहना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

1. सम्पादकीय (उत्तिष्ठत जाग्रत……) 3
2. महात्मा वेदभिक्षु : की अमर वाणी (धर्म और क्रान्ति) 7
3. मेरी माता का जय गौरव—(पं० भारतेन्द्रनाथ) 9
4. जागृत जातियां ही क्रान्ति का सृजन करती हैं—रतनलाल जोशी 11
5. राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने का षड्यन्त्र—पंडिता राकेश रानी 17
6. मैं कौन हूं ? (अध्यात्मधारा)—विक्रमादित्य 'बसन्त' 20
7. सामयिक विचार—सत्यपाल शास्त्री 37
8. क्या हिन्दू साम्प्रदायिक हैं ?—आनन्द शंकर पंड्या 40
9. आप ही के पत्र 47
10. भारत की आवश्यकता—त्यागी मन्त्री, मिली-जुली सरकार—सीताचरण दीक्षित 51
11. स्वाधीनता संग्राम में भारतीय प्रेस का योगदान—विपिन चन्द्र 58
12. हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दुस्तान—डा० कैलाशचन्द्र कोरिया 76
13. पपीता एक : व्यंजन अनेक—आभा 91

(आवश्यक नहीं कि लेखकों द्वारा अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से सम्पादक सहमत ही हो)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

उत्तिष्ठत जाग्रत...

स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर देश के युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने लाल किले से राष्ट्र का आह्वान किया कि वह साम्प्रदायिकता के विरुद्ध संघर्षरत हो। देश के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति श्री रामस्वामी वेंकटरामन ने राष्ट्र के नाम संदेश में देश के समक्ष विद्यमान अनेक समस्याओं की चर्चा की तथा उपनिषद् का महान् सन्देश दिया कि "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" अर्थात "उठो जागो और श्रेष्ठों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो।" स्वतन्त्रता दिवस के इस अवसर पर प्रत्येक राष्ट्रभक्त के मन में इतिहास की वह घड़ी भी उभरी होगी, जब मातृभूमि की पराधीनता का पाश तो कटा था किन्तु भारत माता का विभाजन भी हुआ था १५ अगस्त १९४७ का ही वह दिन था जब साम्प्रदायिकता के अजगर से स्वदेश को मुक्त कराने की चाह में हमारे इतिहास पुरुषों ने मातृभूमि का क्रूर विभाजन होते देखा था। जब भारत माता का एक अंचल पाकिस्तान की संज्ञा पा गया था। जब लव कुश का स्मृति स्थल लाहौर पराया हो गया था और पुष्पपुर (पेशावर), मोहनजोदड़ो आदि पराये बन गए थे। भारत माता की भुजाए कटने के साथ ही उसका आंचल भी उसके ही लाखों पुत्रों और पुत्रियों के लहू से सराबोर हो गया था तथा अपनी सैकड़ों बेटियों का शीलहरण और अनेक बन्धुओं को वैधव्य की काली चादर ओढ़ते हुए पथराई आंखों से निहारा था।

सिर कटाकर सिर दर्द की दवा खोजने वाले मनीषियों ने सोचा था कि मातृभूमि के विभाजन का वज्रघात सहकर ही सही हमने साम्प्रदायिकता के अजगर से मुक्ति पा ली है। परन्तु आज चालीस साल बीत जाने के बाद भी वह अजगर अपनी प्रबल फुफकारों से राष्ट्र को दग्ध ही नहीं कर रहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपितु सुख-समृद्धि और शान्ति को भी लील जाने को आतुर है। अतः राष्ट्र-नेताओं को साम्प्रदायिकता के बढ़ते उन्माद पर चिन्ता अभिव्यक्त करने से रोग का उपचार नहीं होगा। यह निर्धारित करना होगा कि साम्प्रदायिकता वास्तव में है क्या ? क्या परिभाषा है इसकी ? साम्प्रदायिक हैं कौन ? धर्म-निरपेक्षता (सैक्युलिज्म) की परिभाषा क्या है ? संविधान के मान्य हिन्दी रूपान्तर में सैक्युलर के लिए 'पंथनिरपेक्ष' शब्द का प्रयोग किया गया है। पंथ का तात्पर्य है कोई विशेष उपासना पद्धति। अत: पंथनिरपेक्ष राज्य का तात्पर्य हुआ कि राज्य ऐसा हो, जो किसी उपासना पद्धति से जुड़ा न हो। इस दृष्टि से भारतीय संविधान का पंथनिरपेक्ष एक ऐसा तत्त्व है, जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता।

सम्प्रदाय का अर्थ है परम्परा से चली आ रही पूजा-पद्धति का अनुगामी समूह अतः साम्प्रदायिक वह नहीं है जो अपने सम्प्रदाय का हित चिन्तन करे अपितु वह है जो सम्प्रदाय एवं राष्ट्र को परस्पर विरोधी भूमिकाओं पर खड़ा करने की बात करता है। दूसरे शब्दों में भारतीय राज्य संस्था के पंथ-निरपेक्ष चरित्र को नष्ट करने का प्रयत्न ही साम्प्रदायिकता की व्याख्या कही जा सकती है। स्वतन्त्रता के पश्चात् इस देश के कर्णधारों के विभिन्न समुदायों को यह समझना चाहिए कि भारतीय राजनीति का आधार सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम होगा, साम्प्रदायिक मानसिकता नहीं। क्योंकि सम्प्रदायनिरपेक्ष राजनीति में जनमानस की अविचल निष्ठा ही पंथनिरपेक्ष राज्य के निर्माण की एकमात्र शर्त है। इस निष्ठा को खंडित करने वाले सभी कार्य साम्प्रदायिक मनोवृत्ति में अपराध घोषित कर दिए जाते तो सम्भवतः साम्प्रदायिकता के विषधर की फुफकारें राष्ट्र की एकता और अखण्डता को दग्ध नहीं कर पातीं।

भारत में विभिन्न समुदाय हैं और रहेंगे। परन्तु विभिन्न सम्प्रदायों के अनुगामियों को समझना होगा कि सम्प्रदाय के स्वार्थ राष्ट्रीय हितों पर वरीयता प्राप्त नहीं कर सकते। इस परिप्रेक्ष्य में पारसी समुदाय का आचरण ठोस उदाहरण है। यह सम्प्रदाय अपने हितों का संरक्षण करते हुए और अपनी साम्प्रदायिक पहचान बनाए हुए राष्ट्रीय हितों के संवर्धन में एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भरपूर योगदान करता आ रहा है। होना तो यही चाहिए था कि भारत में बाहर से आये मत-मतान्तरों को इस तथ्य का बोध विशेष रूप से कराया जाता, जिससे उनमें अल्पसंख्यकों की असुरक्षा की भावना उदय न होती। हुआ यह कि सत्ता प्राप्ति तथा प्राप्त सत्ता के बनाए रखने के स्वार्थ ने इस इतिहास बोध को धूमिल कर दिया और भारतीय राजनेताओं का एक बहुत बड़ा वर्ग जाने-अनजाने शुद्ध साम्प्रदायिक स्वार्थों के बनाए रखने में लिप्त हो गया। कुछ नेताओं और दलों ने ऐसे नारे दिए कि अल्पसंख्यकों की सुरक्षा केवल उन्हीं द्वारा सम्भव है। यह डिमडिमनाद भी किया गया कि भारत की धर्मनिरपेक्षता को हिन्दू साम्प्रदायिकता से बड़ा खतरा है। ऐसा शोर मचाया गया कि हिन्दू स्वयं को हिन्दू कहने में भी कतराने लगा। ऐसा सोचने वालों ने हिंदू को अन्य मतालम्बियों से द्वेष रखने वाले संकीर्ण सम्प्रदाय के रूप में चित्रित करके स्वस्थ राष्ट्रीयता के विकास का मार्ग ही अवरुद्ध-सा कर दिया है। इसी विकृत चिन्तन का एक प्रमाण दूरदर्शन पर भी रामानन्द सागर द्वारा दिखाये जारहे धारावाहिक रामायण को लेकर सामने आया है। कतिपय "मनीषी" बड़े दुखित हैं कि रामायण के माध्यम से हिन्दुत्व का प्रचार हो रहा है।

हिन्दुत्व कोई सम्प्रदाय या मजहब नहीं है। वह तो एक जीवन पद्धति है, जिस पर आचरण करके ही भारत को भारत रखा जा सकेगा। भारत को अपनी पितृभूमि, मातृभूमि और पुण्य भूमि मानने वाले बौद्ध, जैन और सिख सभी इस संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं। हिन्दू किसी उपासना पद्धति से बंधा नहीं है। हिन्दू को सम्प्रदाय रूप में देखना या एक साम्प्रदाय के समकक्ष स्थापित करना देश की संस्कृति के प्रवाह को ही पलटना है। हिन्दुत्व इस देश की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गरिमा का प्रतीक है। विश्व में विविधता है और रहेगी। इस विविधता को विभेद न मानकर सृष्टि का सौन्दर्य समझना हिन्दुत्व की विशेषता है। इसी भावना की अभिव्यक्ति करते हुए पृथ्वी सूक्त के ऋषि ने गाया था —

"जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथ्वी यथौकसम्।"

संकीर्ण साम्प्रदायिकता तो इस देश की पावन संस्कृति को स्पर्श भी नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर सकती। भारत के संसद् भवन के द्वार पर ऋग्वेद का यह मन्त्र लिखा है—"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् एक सत् तत्त्व का वर्णन विद्वान् अनेक प्रकार से करते हैं। यह मन्त्र भारत की संस्कृति का अद्भुत चिन्तन सूत्र है—और हिन्दुत्व का आधार है। जब तक सम्प्रदाय और धर्म शब्द को एक ही धरातल पर खड़ा करना जारी रहेगा, तब तक राष्ट्र साम्प्रदायिकता की विभीषिका से मुक्त नहीं हो सकेगा। देश के कर्णधारों को उन तत्त्वों का दमन करना होगा जो साम्प्रदायिक हितों को राष्ट्र हित पर वरीयता देते हैं। यह तथ्य भी समझना होगा कि तुष्टीकरण के माध्यम से साम्प्रदायिकता के भस्मासुर को खड़ा कर वोट बैंक का सृजन करने वाले साम्प्रदायिकता के प्रचारक हैं। यह भी तथ्य है कि जहां-जहां हिन्दुत्व के अनुगामी संख्या में कम हुए हैं, वहीं सैक्युलरिज्म की कब्र खुदती चली गई है। पाकिस्तान का उदय इसी तथ्य का साक्षी है। हमारा आह्वान है प्रत्येक उस राष्ट्रभक्त से जिसने भारत माता को अपनी श्रद्धा और आस्था में बद्धमूल कर इसके कण-कण को पावन और कंकर-कंकर को शंकर माना है, क्योंकि भारत भूमि में पुन: विखंडन के बीज बोने वाली शक्तियों से चाहे वे देशी हों या विदेशी, सावधान और सतर्क रहकर जीवित-जागृत और अविभाज्य मातृभूमि कीवन्दना में ही सुख-समृद्धि का वरदान समाहित है। आओ मेरे भाइयों और बहनों, जागो, जागो। महिमामयी माता के सपूतो, कर्तव्य का स्मरण करो और संकल्प ग्रहण करो कि हम अपनी जननी की भी जननी परम पुनीता भारत माता का रक्त और दूध कभी लज्जित नहीं होने देंगे। "सत्यमेव जयते" को अपनी आस्था का आधार बनायेंगे और सुजलाम्-सुफलाम् चैतन्यमयी मातृभूमि को उसका गौरव प्रदान कराओ। इतिहास की उन भूलों से शिक्षा ग्रहण करो जिनके कारण मातृ भूमि को विभाजन की घड़ी देखनी पड़ी थी। उनका परिमार्जन और प्रायश्चित्त ही प्रत्येक राष्ट्र भक्त और भारत पुत्र का कर्तव्य है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने हमारे समक्ष यह सत्य उजागर किया है कि मनुष्य में देवत्व है। इस देवत्व का साक्षात्कार कर जीवन स्तर को ऊपर उठाना ही मानवीय विकास है। इसी में सारा हिन्दुत्व समाया हुआ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु : की अमर वाणी

धर्म और क्रान्ति

क्रान्ति का अर्थ है परिवर्तन—विकास, आनन्द और शान्ति के लिए। दुःख समाप्त करने के लिए उठाए जाने वाले पगों का, कार्यक्रमों का नाम क्रान्ति है। क्रान्ति जीवन देती है, मृत्यु को निर्माण में बदल देती है। सर्वनाश की आंधी में जीवन का संगीत बजाने का नाम क्रान्ति है। तूफान में अडिग रहने का चिह्न क्रान्ति है।

क्रान्ति अमृत है, प्यार है, संगीत है, प्रेरणा है और सबसे बढ़कर वरदानों की गंगा है। उसके द्वारा हम वृद्ध को युवा, रोगी को सशक्त बना देने का उपक्रम करते हैं।

धर्म की स्थापना और अधर्म की समाप्ति क्रान्ति का उद्देश्य है। धर्म किसी लकीर पीटने का नाम नहीं, धर्म तो मनुष्य को मनुष्य बनाने के दर्शन की व्याख्या है। धर्म वह आधार है, जिसके द्वारा मनुष्य सुख-शान्ति और आनन्द प्राप्त करता है।

जहां सुख है वहां धर्म है, जहां शान्ति है वहां धर्म है, जहां आनन्द है वहां धर्म है। या यह कह लीजिए कि जहां ये तीनों हैं वहां धर्म है। धर्म की स्थापना मनुष्य की मूलभूत प्रारम्भिक आवश्यकता है।

वर्त्तमान शिक्षा में सब कुछ है पर धर्म नहीं है। आज का सन्देश—युग धर्म उस देह के चारों ओर रहता है जो नाशवान् है। आत्मा को भुलाकर, शरीर को सजाकर आधुनिक चिन्तन उन्नति की ओर बढ़ रहा है। किन्तु उन्नति अवनति की चरम सीमा बनती जा रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या लाभ उस ज्ञान का, जो शांति न दे सके ? क्या करें उस धन का, जो दुःखों को जन्म दे ? आज का प्रवाह सशक्त है किन्तु हमारा विश्वास है कि कल फिर हमारा होगा। वर्तमान को अपनी भूल स्वीकार कर धर्म की शरण ग्रहण करनी होगी—उस धर्म की, जिसका मार्गदर्शन स्वयं प्रभु ने आदि सृष्टि में मानव मात्र के लिए किया था।

क्रन्दन के गीतों को सुनकर हमारा मन व्यथित है। रुदन के स्वर ने हमें अधर्म को ललकारने का सामर्थ्य दिया है। हमारे प्राणों की मेधा ने वर्तमान को देखकर भविष्य की कल्पना की है और हम अपनी आहुति देकर भी कल का निर्माण उस गहरी नींव पर करना चाहते हैं जिसे धर्म कहते हैं। धन और भौतिक साधनों के अभाव में भी विश्व को बदलने की बात आपको भले ही पागलों की बहक लगे, पर एक अणु जब शक्ति से विस्फोट करता है तो प्रलय आ जाती है।

हम धर्म के धन से, ज्ञान की शक्ति से और प्रभु की प्रेरणा से क्रांति यज्ञ का आह्वान कर रहे हैं। आज आप साथ दें या न दें, हमें भले ही ठुकराते रहें किन्तु आने वाला कल निश्चय ही हमारा होगा। हम धर्म की स्थापना करेंगे। क्रान्ति होगी, अधर्म मिटेगा। हमारे गुरु ने जो सपना देखा था, उसे प्राण देकर भी पूर्ण करना हमारा एकमात्र लक्ष्य है।

क्रांति और धर्म के यज्ञ में क्या आप हमारे साथ आहुति बनेंगे ?

(जनज्ञान (मासिक) के मार्च-अप्रैल सन् १९७९ के संयुक्त अंक से उद्धृत)

डाकियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य हो : पंडिता राकेश रानी का संचारमन्त्री के नाम पत्र

नई दिल्ली। दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी जी ने भारत सरकार के संचारमन्त्री श्री अर्जुनसिंह को एक पत्र लिखकर मांग की है कि भारत के अहिन्दीभाषी प्रदेशों के डाकियों के लिए अनिवार्य हिन्दी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी माता का जय गौरव

मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।
मेरे सपनों की आशा है, युग फिर से शान्ति-सुधा पाए।।

मेरी जननी वह संस्कृति है, जिसकी छाया में मानवता।
पलती रहती, बढ़ती रहती, चिरता, रुचिता, मधु-प्राण-लता।।
जिसके चरणों पर झुक जाते, युग-मूर्ति स्वयं, युग मदमाते।
जिसकी आशा में बढ़ते हैं, सारे ही मानव इठलाते।।

वे पा न सके पर पार, इसी से कहता हूं, यदि पा जाएं।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।।

यह दानवता, यह भोगवाद, यह अर्थ, रूप की छलनाएं।
यह घोर युद्ध के घन गर्जन, फैली ये क्रूर कुटिलताएं।।
यह सर्वनाश की प्यास मधुर है मानव जिसको समझ रहा।
पर हाय अभागा जिस पीछे है, प्राणों से भी उलझ रहा।।

क्या रहने पाएं किसी छोर यदि राह अभी भी पा जाएं।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।।

मैं श्वास-श्वास से जीवन की, झंकृत वीणा को गा दूंगा।
जो रूठ चुके हैं भाव उन्हें संसृति में फिर से ला दूंगा।।
मैं कह दूंगा अभिशापों से, उस पार नहीं इस पार चलो।
मैं कह दूंगा वरदानों से, उस पार नहीं इस पार रहो।।

जो प्राण लुटाए जगती ने, उनको पाकर वह मुस्काए।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए।।

फिर करवट ले, जागें जीवन की फुलझड़ियां।
फिर टूक-टूक हो बिखर जाएं, ये क्रूर कुटिलता की लड़ियां।।
यह महानाश की आग बुझे, फिर शान्तिसुधायुत बरसाए।
यह सर्वनाश का राग बन्द हो, और हृदय-जग मुस्काए।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह नहीं कठिन, पर सब मिलकर, यदि शाश्वत गीत बजा पाएं
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए ।।

मैं आज चला यह ध्येय लिए, तुम सुनो ! सजग हो जग वालो ।
यह लक्ष्य तुम्हारे सम्मुख है, तुम सोचो, समझो कुछ पा लो ।।
जो भी कण्टक बनकर आए, उसको ना जीता रहने दूं ।
जो मानवता का शत्रु कहो, उसकी क्या सीमा रहने दूं ?

पाखण्ड पाप औ' भेद-भाव, सब दूर करो, जो ज्वालाएं ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए ।।

मैं आज अकेला चलता हूं, जो बन सकता साथी आए ।
है कौन विश्व में आज कहो, जो मानव दुःख समझे-गाए ।।
इस गायन में है छिपा हुआ, स्वर रोदन का जगती-भर के ।
उससे हिल जाती है करुणा, अब हिलें दुर्ग आडम्बर के ।।

युग-युग का दारुण चीत्कार, जो धू-धू कर जलता जाए ।
मेरी माता का जय गौरव फिर से धरती पर छा जाए ।।

—पंडित भातेन्द्रनाथ (महात्मा वेदभिक्षुः)
(५ अगस्त सन् १९५२ के "आर्य" से उद्धृत)

राजधानी में वेदगोष्ठी सम्पन्न

नई दिल्ली । श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री स्मारक समिति के तत्त्वावधान में एक वेदगोष्ठी १८ अगस्त को दिल्ली विश्वविद्यालय की ट्यूटोरियल बिल्डिंग के टैगोर हाल में सम्पन्न हुई । वैदिकशोध विद्वान् डा० फतहसिंह ने निबन्ध पाठ किया, जिसका विषय था—एकंसद् विप्रा बहुधा वदन्ति (विद्वान् लोग उस एक तत्त्व को अनेक प्रकार से बतलाते हैं ।) अगले दिन आर्यसमाज करौल बाग में शंकासमाधान हुआ ।

गोष्ठी का सभापतित्व प्रसिद्ध इतिहास लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार और संयोजन श्रद्धानन्द कालेज के प्राध्यापक डा० वेदव्रत 'आलोक' ने किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जागृत जातियां ही क्रान्ति का सृजन करती हैं

—रतनलाल जोशी

"क्रांतियां संजीवनियां होती हैं, नहीं तो मनुष्य की नस्ल अपने ही चुल्लू में डूबकर कभी की खत्म हो गयी होती।" वाल्तेयर के भाषण की ये पंक्तियां जब पेरिस के अखबारों में छपीं तो नगर में मानो भावावेश का ज्वार ही उमड़ आया। महलों और अट्टालिकाओं के खंभे जहां कांपने लगे, वहां छात्रों- बुद्धिजीवियों एवं आम जनता की भीड़ वाल्तेयर के निवास को घेरकर उसका जयजयकार करने लगी। अभिवादन करता हुआ वाल्तेयर छज्जे में आकर खड़ा हो गया। लोगों को संबोधित करते हुए बोला, "यह सच है कि गरजने वाले बादल बरसते नहीं। ओ, फ्रांस-निवासियो, बंद करो यह कोलाहल। अपने-अपने घर जाओ और ढोते-ढोते मरते रहो शाहों-सामंतों के विलास का बोझ! धन्य तो है समुद्रपार की अंगरेज जाति, जिसने एक ही झोंके में उलटे दिया अपने सम्राट् का सिंहासन। उससे भी धन्य हैं अमरीका के वे नरपुंगव, जो मनुष्य द्वारा मनुष्य को दास बनाने वाले के ईश्वरीय अधिकार के चिथड़े-चिथड़े बिखेर रहे हैं ......!"

१६८८ में इंगलैंड में क्रांति हुई। सम्राट् और संसद् के संघर्ष में संसद् की विजय हुई। जनता स्वयं अपनी भाग्य विधात्री बनी। धर्म, सामाजिक आचरण की बजाय वैयक्तिक आचरण में ढल गया। शिल्प, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान के लिए नयी प्रतिभाओं को उन्मुक्त विकास का वातावरण मिला। अंगरेजी भाषा और साहित्य इस काल में खूब फले-फूले! एलेक्जेंडर पोप की कविताएं और हेनरी फील्डिग के उपन्यास 'टाम जोस' पर इस क्रांति की छाप स्पष्ट है। सोमर्सेट मॉम ने 'टॉम जोंस' उपन्यास को संसार के दस श्रेष्ठ उपन्यासों में गिना है। इसके काफी बाद लिखे गये जेन आस्टिन के उपन्यास 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' की गणना भी सोमर्सेट मॉम के मूल्यांकन में दस श्रेष्ठ उपन्यासों में हुई है। किन्तु इस क्रांति के युगांत की महान् देन है—रिनेसां' के चैतन्य में उद्भूत रोमेंटिसिज्म' की अजर-अमर काव्य-संपदा, जिसके तीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्रष्टा काव्य जगत् की आज भी सदाबहार विभूतियां हैं। शैली, कीट्स और बायरन—तीनों ही क्रांतिपूत के साथ-साथ क्रांतिदूत भी थे। रूढ़िवादी समाज की जीर्णशीर्ण दीवारें उनकी विद्रोहिणी मनीषा एवं निपट-निबंध जीवनचर्या के आघातों से लड़खड़ाने ढहने लगीं। शैली का शंखघोष सबसे बुलंद था। आत्मा के जिस विद्रोह को वह वाणी देता था, उसे वह उसी विदग्धता से जीवन में उतारता भी था। उसकी एक कविता 'द मास्क आफ एनार्की' ('अराजकता की रकाब') फ्रेंच क्रांति से लेकर आज तक की प्राय: सभी क्रांतियों के श्रीगणेश में वीणा वादिनी का स्वर रही है। बायरन तो स्वयं तुर्की के खिलाफ यूनान के स्वातंत्र्य-युद्ध में भाग लेने के लिए मोर्चे पर गया और वहां लड़ते-लड़ते शहीद हो गया।

क्रांति की देन

१६८८ की इंगलिश क्रांति के साथ-साथ यूरोप में 'औद्योगिक क्रांति' का दौर भी तेजी से अपनी मंजिलें तय कर रहा था। इतिहासकार टायनबी ने लिखा है कि 'जेम्स वाट के स्टीम एंजिन ने जिस क्रांति को जन्म दिया, उसने मनुष्य को समृद्धि के अपार स्रोत के साथ अभिशापों की अंतहीन सर्पकुंडलियों के बीच भी खड़ा कर दिया है। अगणित राजनैतिक-सामाजिक क्रांतियों के अग्निकुंडों के अलावा दो महायुद्धों के दावानल में भी मानव सभ्यता को झोंकने का एकांत दायित्व इस औद्योगिक क्रांति पर ही है। नाममात्र के लिए मनुष्य कहलानेवाले जीवों को परमाणु-शक्ति के बाड़े में भेड़-बकरियों की तरह घेर-कर कालरात्रि के साये में जीने का दंड भी इसी क्रांति की देन है।'

औद्योगिक क्रांति मनुष्य एवं मशीन के संबंधों को इतने आयामों में बहु-संख्यक करती हुई अग्रसर है कि 19वीं सदी एवं 20 वी सदी में इसके आतंक,

दो महायुद्धों के दावानल में भी मानव सभ्यता को झोंकने का एकांत दायित्व औद्योगिक क्रांति पर ही है।

प्रभाव, एवं प्रेरणा में जितने साहित्य का सृजन हुआ, उतना पिछले दो हजार बरसों में नहीं हुआ। बात यह है कि इस क्रांति की कोख से भावनाओं एवं विचारों के बवंडरों का ऐसा तांता पैदा होता जा रहा है कि अभिव्यक्ति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिवाय मनुष्य की संवेदनशीलता के सामने और कोई परित्राण अथवा परितोष ही नहीं बच पाया है। विभ्रम, आत्म भ्रांति एवं दिक्शून्यता के इस युग में मनुष्य के विकल्पों का जिक्र करते हुए पाल गोगां ने अपनी डायरी में लिखा था, "भौंकते रहो, रोते रहो, हंसते रहो—बस, अपने को व्यक्त करते रहो, हमारी पीढ़ी के भाग्य में यही लिपि लिखी है।"

औद्योगिक क्रांति एवं फ्रेंच क्रांति के फलस्वरूप जिस नये मानव का विकास हुआ वह अपने सामने निर्मित हो रहे नित्य नये मार्गों से सुख-शांति की मंजिल तक पहुंचने का प्रयास कर रहा था। उसकी चेतना के कई प्रसुप्त पक्ष जागृत हो रहे थे। फ्रेंच उपन्यासकार बाल्जाक (1799-1850) और ह्यूगो (1802-85) की कृतियों में चित्रित इस युगदर्शन ने तीन-चार ऐसे अनमोल रत्न 19 वीं सदी के साहित्य को दिये हैं, जो आज भी अपने अर्थबोध में वैसे ही हृदयस्पर्शी हैं। 'ओल्डमैन गारियो' बाल्जाक का श्रेष्ठ उपन्यास है। विक्टर ह्यूगो सफल उपन्यासकार के साथ उच्चकोटि का कवि और नाटककार भी था। उसके दो उपन्यास 'नोट्रेडेम डि पेरिस' तथा 'ला मिजराबिल' आज भी कथारस की ऐतिहासिक कृतियाँ मानी जाती हैं। ईश्वर को संबोधित उसकी एक कविता कई वर्षों तक ह्यूगो के पाठकों के कंठों से गूंजती रही है। कविता का भावार्थ इस प्रकार है—

> **तुम्हारे अस्तित्व की आड़ में मनुष्य कब से अपने गुनाहों को छिपाता आ रहा है।**
> **कवि का मन विद्रोह करे उससे पहले या तो अपना अस्तित्व समेट लो अथवा मनुष्य को भय से मुक्त जीवन जीने दो !**

क्रांति की प्रेरणा में विकसित साहित्य सृजन का यह प्राणोन्मेष मनुष्य के मन के हर रसघट को पुरातन से रिक्त करता और नूतन से पूर्ण करता हुआ जेम्स ज्वाइस, काफ्का एवं कामू को पार कर जब सार्त्र तक पहुंचा तो पाश्चात्य मनीषा के तेवर ही बदले-बदले नजर आये। अपने को सफलतम समझ रहे युग के साहित्यकार को क्रांति के हर पड़ाव पर बर्गसां की यह चेतावनी ही ध्वनित-प्रतिध्वनित सुनाई पड़ी, "जो है वह सत्य नहीं है, क्योंकि वह सीमित है। सत्य तो सीमातीत है।"

वेदांत का प्रभाव

बात यों हुई कि एक ओर क्रांति यूरोपीय बौद्धिक जगत् को अपनी चेतना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में झकझोर गई थी। इसका मूल तो टाल्स्टाय और रोम्यां रोलां की वेदांत के प्रति श्रद्धा थी, किंतु बाद में हक्सले, मॉम, जेराल्ड हर्ड, क्रिस्टोफर ईशरवुड के प्रयत्नों से बुद्धि और भावना के ऊंचे से ऊंचे कगारों को भी वेदांत के विचार दर्शन ने प्रक्षालित किया। मॉम के 'द' रेजर्स एज' और हक्सले के 'द ब्रेव न्यू वर्ल्ड' वेदांत -बोध के ही सांचे में ढले उपन्यास हैं।

फ्रेंच क्रांति के कालपुरुष द्वारा निर्मित जगत् के जैसे कुशल चित्रकार टाल्स्टाय हुए हैं, वैसा और कोई नहीं। कार्लाइल ने भी फ्रेंच क्रांति का इतिहास लिखा है, जो वास्तव में इतिहास न होकर कमोबेश ऐतिहासिक उपन्यास-जैसी ही कृति है। किंतु कार्लाइल नेपोलियन की प्रशस्ति में डूबकर अपने ध्येय से भटक गये।

टाल्स्टाय का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास 'वार एंड पीस' है। यह अभी तक संसार का सबसे बड़ा उपन्यास है। इसके पात्रों की संख्या 500 से ऊपर है। भारत के 'महाभारत' के बाद इतनी बड़ी कथाकृति अभी तक प्रकाश में नहीं आई थी। सामर्सेट मॉम का कहना है कि जैसे टाल्स्टाय को परिभाषा में बांधना दुःसाध्य है, वैसे ही 'वार एंड पीस' के लिए तराजू खोजना भी मुश्किल है—और कहां है 'वार एंड पीस' की नटाशा-जैसी हीरोइन दुनिया के साहित्य में ? साहित्य के किस शिल्पी की छैनी से नारीत्व की मोहकता, मानवीयता एवं रमणीयता की ऐसी मूर्ति निर्मित हुई है ?

क्रांति का प्रेरणा स्रोत

टाल्स्टाय को अपने साहित्य-सृजन में फ्रेंच क्रांति से प्रेरणा मिली थी; फ्रेंच क्रांति की छाप ही 'वार एन्ड पीस' पर सर्वाधिक है, किन्तु उनका यह उपन्यास बाद में रूसी क्रांति का प्रेरणा स्रोत भी बना, इसे स्वयं लेनिन ने स्वीकार किया है। लेनिन ने कहा था कि टाल्स्टाय ही सबसे पहले उपन्यासकार हैं, जिन्होंने उपन्यास में एक व्यक्ति को नायक बनाने की परम्परा भंग कर जनता को ही 'वार एन्ड पीस' का नायक बनाया है। वास्तव में टाल्स्टाय के उपन्यास 'वार एंड पीस' में कोई नायक नहीं है। नायिका नटाशा जरूर है। गोर्की तो टाल्स्टाय के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित था कि अनीश्वरवादी होते हुए भी कहता था कि जब टाल्स्टाय बोलते हैं तो मुझे लगता है कि स्वयं ईश्वर बोल रहा है।

संस्कृति के नये आयाम

पिछले दो महायुद्धों ने मनुष्य के चिंतन को दर्जनों क्रांतियों से अभिभूत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया। साहित्य-सृजन के कई नए उत्स प्रकट हुए। मूल्य, माप और परिभाषाएं ही नहीं बदलीं, शिल्प और मुहावरे भी बदल गये। कार्ल मार्क्स के विचारदर्शन को लेनिन ने अपनी कसौटी पर कसकर रूस में मूर्त किया। किन्तु पूंजीवाद के पतन के साथ पाश्चात्य जगत् के भी पतन की मार्क्स की भविष्यवाणी झूठी साबित हुई। मार्क्सवादी से गांधीवादी बन गये रोम्यां रोलां ने लिखा था कि भीड़ का नहीं, व्यक्ति का उत्थान ही सफल काम होगा क्योंकि दायित्व जितना अपना वैयक्तिक होता है, उतना सामाजिक नहीं। बुद्ध और गांधी इसके प्रमाण हैं।

इग्लैंड में फ्रेंच क्रांति का वैचारिक प्रभाव काफी अर्से तक अंग्रेजी साहित्य पर प्रकट होता रहा। चार्ल्स डिकेंस का सुप्रसिद्ध उपन्यास 'ए टेल आव टू सिटीज' पूर्णतया फ्रेंच क्रांति पर आधारित है। किन्तु बाद में क्रांतिमूलक साहित्य का स्थान देशकाल की परिवर्तित परिस्थितियों के द्वंद्वात्मक संघर्ष के चित्रण ने ले लिया—रूसी क्रांति के बाद तो इसमें भी परिवर्तन हुआ और यथार्थवाद के नाम पर मानवीय आचरण की खूब खाल खींची गई। आखिर इंग्लैंड में हक्सले, टी. एस. इलियट और अमरीका में थोरो-इमर्सन एवं वाल्ट ह्विटमैन के बाद, हेमिंग्वे और राबर्ट फ्रास्ट ने क्रांति को अपने रचनात्मक विग्रह में ग्रहण कर मानवीय संस्कृति को एक-के-बाद-एक श्रेष्ठ रचनाएं दीं।

इलियट का 'फोर क्वार्टेट' स्वयं में क्रांतिकारी काव्य-वैभव है। हक्सले की जिज्ञासा एवं शोध उसे नये-नये 'स्वर्गों' तक ले गई और अपनी अनुभूतियों की समरसता में उसने दो-तीन उत्तम उपन्यास अपने वाङ्मय को दिये, जिनमें 'द ब्रेव न्यू वर्ल्ड' एवं 'आईलेस इन गाजा' प्रमुख हैं।

क्रांति की रसायनशाला में

अमरीका में महायुद्धों के अवकाश एवं उसके बाद के साहित्य पर हेमिंग्वे की मोहर स्पष्ट है। क्रांतियों की रसायनशाला में मनुष्य के चिंतन ने जिस अमृत की सृष्टि की, वह और भी तप का आकांक्षी है, किन्तु फिर भी हेमिंग्वे और फ्रास्ट की कलम से जो मानव-मधु निःसृत हुआ, आज के जगत् की त्रस्त चेतना के लिए वह भी कोई नगण्य नियामत नहीं है।

भारतीय साहित्य में भी क्रांतियों की प्रेरणा में साहित्य सर्जन की लम्बी लोकयात्रा है। रामराज्य की स्थापना अपने युग की महान् क्रांति थी, जिसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यजाति के के भविष्यपथ को ही बदल दिया। वाल्मीकि रामायण उसके द्वारा उत्पन्न रस स्फूर्ति का ही फल है। महाभारत युद्ध भी तत्कालीन भारत की सर्वग्राही क्रांति की देन है जिसकी फलानुभूति को व्यास जी ने महाभारत का रूप दिया। बुद्ध के धर्माभिमान ने जिस-बौद्धिक आध्यात्मिक क्रांति की सृष्टि की उसकी प्रेरणा तो आज तक कवियों एवं साहित्यकारों को नित-नूतन साहित्य सृजन के लिए प्रेरित कर रही है। अश्वघोष का 'बुद्धचरित' कालिदास के काव्यों की समता का ही महाकाव्य है।

क्रांति देती ही नहीं लेती भी है

किन्तु क्रांति सदैव देती ही नहीं है, देने के लिए लेती भी है। जागृत जातियां ही क्रांतियों का सृजन करती हैं। अवांछित अशुभ को बदलने के लिए वे अपना रक्त तक अर्पण करती हैं। भारतीय समाज वैयक्तिक है। यहां क्रांति का जनक एक व्यक्ति ही होता है। राम, कृष्ण, बुद्ध एवं गांधी इसके प्रमाण हैं। गांधीजी से बड़ा क्रांतिकारी इस देश में कोई नहीं हुआ, क्योंकि स्वयं को आचरण की सर्वोच्च भूमि पर ले जाकर भी वे सामान्य—अति सामान्य—बने रहे और सारे समाज की मन-बुद्धि को आन्दोलित कर प्रचलित व्यवस्था को आमूल-चूल बदलने के लिए क्रांति को उन्होंने जनता के पराक्रम में ही मूर्त किया। उनके इस अद्भुत कर्तृत्व से क्रांति को ही नई परिभाषा नहीं मिली, साहित्य के धरातल पर भी क्रांति के बीज नये कुंजों में फूले-फले।

वियतनाम स्वनामधन्य क्रांति स्रष्टा स्व. हो ची मिन्ह की एक सुविख्यात कविता है—'क्रांति'। गांधी जी के बलिदान के बाद हो ची मिन्ह ने यह लम्बी कविता लिखी थी। क्रांति एवं क्रान्तिपुत्रों का ऐसा ओजस्वी परिचय शायद ही और कहीं हो। रहस्य यह है कि कवि ने स्वयं इस कविता का शब्द-शब्द जिया था। अपने भारत प्रवास के समय हो ची मिन्ह ने इस कविता के कोई अंश दिनकरजी के अनुरोध पर सुनाये भी थे। मेरी स्मृति के अनुसार कविता का संक्षिप्त भावार्थ इस प्रकार है—

क्रांति दूध है सिंहनी का! पीते हैं सिंह-शावक ही उसे! या पीते हैं वे—दहक रहा है दावानल दु:खियों के दु:ख का दिलों में जिनके! अन्यथा आसान है क्या पचाना सिंह की खुराक को—जीते-जी अमर बना देने वाले उस मूर्त शौर्य को!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने का षड्यंत्र

—पंडिता राकेशरानी

आज देश में जहाँ हिंसा, आतंकवाद और पृथक्तावाद का खतरा मंडरा रहा है, वहां एक अप्रत्यक्ष आक्रमण इन सबसे घातक है, और वह है भारत की राष्ट्रीय पहचान को मिटाने का षड्यंत्र। यह खतरा सबसे खतरनाक इसलिए है कि राष्ट्रीय अस्मिता ही नष्ट हो गई तो राष्ट्र के लिए संघर्ष करने की प्रवृत्ति कहाँ बचेगी। वह तो इसके साथ ही समाप्त हो जाएगी।

बाहरी हमलों तथा आन्तरिक अराजकता से हमें तब तक कोई खतरा नहीं, जब तक लोगों के मन में राष्ट्रीय अस्मिता का गर्व है। यही कारण है कि अनेक समस्याओं से घिरे भारत राष्ट्र ने पाकिस्तान और चीन के हमलों का मुंहतोड़ उत्तर दिया था और उन अवसरों पर देश के नागरिक ऐक्यबद्ध होकर खड़े हो गए थे। विराट् एकता की ऐसी अनुभूति इसीलिए हो सकी थी, क्योंकि राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान प्रत्येक नागरिक के मन में अक्षुण्ण बनी रही थी। वे प्राचीन भारत की सांझी और गौरवपूर्ण विरासत का स्मरण कर हर चुनौती का जवाब देने के लिए खड़े हो गये थे। किन्तु 1965 और 1971 के बाद 1987 में (केवल 16 वर्ष बाद) स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। राष्ट्रीय पहचान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए खुले नारे और आह्वान सुनाई देते हैं। उसी का नतीजा है कि देश में अनेक विघटनकारी ताकतें पनप रही हैं। राष्ट्र से अलग अपनी-अपनी पहचान बनाने की साजिशें इसी षड्यंत्र का प्रतीक हैं। अलग पहचान की साजिशें ठीक वैसी ही हैं, जैसे जैसी 1947 में द्विराष्ट्रवाद का नारा लगाकर मुस्लिम लीग ने भारत का विभाजन कराया था। आज ऐसा षड्यंत्र किसी एक वर्ग, जाति या प्रदेश से नहीं पनप रहा अपितु देश के कोने-कोने से ऐसे स्वर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुनाई दे रहे हैं। फिर से एक अलग पाकिस्तान की धमकी देने वाले बुखारी और खालिस्तान की मांग करने वाले उग्रवादी ही ऐसे नहीं हैं बल्कि गोरखालैंड, झारखंड, कोल्हनिस्तान, दलितस्तान जैसे कई नये पृथक्तावादी आन्दोलन भी काफी पनप चुके हैं। मेघालय, नगालैंड, मिजोरम आदि पूर्वोत्तर वर्ती राज्यों मे ईसाइयों ने अलग पहचान की लड़ाई छेड़ी हुई है और इन क्षेत्रों में वनवासी बन्धुओं को भड़काकर उनकी अलग पहचान और पृथक् होमलैंड के नारे लगवाये जा रहे हैं।

किन्तु इन पृथक्तावादी नारों और अलग पहचान के षड्यंत्रों के पीछे मूल शक्तियां दो ही हैं—ईसाई मिशनरी और कट्टरपथी मुस्लिम तत्त्व।

इन तत्त्वों द्वारा भारत की समग्र राष्ट्रीय पहचान को खत्म करने के लिए बड़े सुनियोजित षड्यंत्र रचे जा रहे हैं।

माध्यमों में घुसपैठ

इस षड्यंत्र का सबसे कारगर हथियार है माध्यमों में घुसपैठ। इस प्रकार की फिल्में बनाई जा रही हैं, जिनसे राष्ट्रीय पहचान की कड़ियों पर चोट पहुँचा कर उन्हें दुर्बल किया जा सके। निहितस्वार्थ तत्त्व मूल्यहीनता के लिए ऐसी ही फिल्मों को धन देते हैं।

दूरदर्शन पर ऐसे कार्यक्रमों का विरोध किया जाता है, जो भारत की राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक समृद्धि के परिचायक हैं। उदाहरण के लिए दूरदर्शन पर प्रदर्शित होने वाले रामायण सीरियल का विरोध किया गया। योजनाबद्ध रूप से देश भर के अखबारों में इसके खिलाफ जहाद छोड़ा गया। देश की कम्युनिस्ट लाबी भी इस सशक्त पहचान को खत्म करने में खास दिलचस्पी लेती है। कम्युनिस्ट अखबारों ने इस पर अधिक हमले किये। सवाल यह है कि मनुष्य के कर्त्तव्यों का चित्रण करने वाले इस सीरियल में आपत्तिजनक भला क्या था ? साफ बात है कि भारतीय संस्कृति की रचनात्मक क्षमता और प्रतिष्ठा से भयभीत लोग जानबूझकर इसके प्रेरक तत्त्वों पर हमला करते हैं ताकि राष्ट्र को इसकी संजीवनी शक्ति का लाभ न मिल सके और वे बीमार राष्ट्रको आसानी से अपने खूनी पंजों में जकड़ सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी प्रकार पाठ्यक्रम को प्रभावित कर इसमें से भी राष्ट्रीय पहचान समाप्त करने के प्रयास किये जा रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व प्रारम्भ पाठ्यक्रम में ऐसी पुस्तकें पाई गई थीं, जिनमें सरदार पटेल जैसे नेताओं को साम्प्रदायिक बताया गया था। समय समय पर कट्टरपंथी, ईसाई और मुस्लिम लाबी द्वारा पाठ्य पुस्तकों में से रामायण और गीता जैसे ग्रन्थों में निहित नैतिक आदर्शों को निकालने और शिवाजी, राणा प्रताप जैसे राष्ट्रीय महापुरुषों के इतिहास को हटाने की भी माँग की जाती है। इन तत्वों को सन्तुष्ट रखने के लिए आक्रान्ताओं के इतिहास में आवश्यक परिवर्तन नहीं किया जाता।

सरकार की शिक्षा नीति तो इस मामले में और भी घातक सिद्ध हो रही है। उसने अल्पसंख्यकों की पहचान कायम रखने के नाम पर उन्हें अपनी विशिष्ट शिक्षा पद्धति जारी रखने की छूट दी है, जबकि बहुसंख्यक समाज को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर राष्ट्रीय साहित्य के पठन-पाठन की भी सुविधा नहीं। दुनिया के इतिहास में बेजोड़ विषमता है कि कोई बहुसंख्यक समाज अपने धर्म और संस्कृति के पठन-पाठन से वंचित रहे, जबकि अल्पसंख्यकों को ये विशेषाधिकार दे दिए जायें कि वे शिक्षा के नाम पर पृथक्तावाद को भड़काते रहें। इसके कारण राष्ट्रीय जीवन में विष व्याप्त हो रहा है।

इसीके परिणामस्वरूप अल्पसंख्यकों को राष्ट्रीय ध्यान से पृथक् रखने के षड्यंत्र सफल हो रहे हैं और अनेक वर्ग आक्रामक होकर पृथक्ता का आन्दोलन चला रहे हैं।

यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। राष्ट्रीय पहचान को नष्ट करने के इस अभियान को रोकने के लिए राष्ट्रभक्तों को जागृत होना होगा। यह तभी संभव होगा जब राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के लिए एक सशक्त अभियान छेड़ा जाए। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं कौन हूँ ?

—विक्रमादित्य 'वसन्त'

मानव जीवन जिज्ञासाओं से भरा है। जिज्ञासु जब अपनी जिज्ञासा को शांत कर लेता है, तो उसे तृप्ति की अनुभूति होती है। जिज्ञासायें मानव जीवन में ज्ञानवर्धन का साधन हैं। जिन पदार्थों और विषयों से हम अनभिज्ञ होते हैं, उन्हें अपनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से देखने, सुनने, सूंघने चखने और छूने के उपरान्त उनके सम्बन्ध में जिस ज्ञान से हम लाभान्वित होना चाहते हैं, उनका आधार यही जिज्ञासायें हैं। जन्म से मरणपर्यंन्त मानव भौतिक और आध्यात्मिक जिज्ञासाओं की तृप्ति में लगा रहता है पर क्या कभी उसने इस महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा को तृप्त करना चाहा है कि वह कौन है ?

मैं कौन हूं, क्या बोल रहा हूं, मेरी दुरवस्था का कारण क्या है, ये आधियां मुझे घेर कर क्यों नष्ट कर रही हैं ? मेरी स्वस्ति किसमें अन्तर्निहित है ? इनका बोध ऋग्वेद के इस मन्त्र में कराया गया है।

वेदमन्त्र—

अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित्।
तं मा व्यन्त्याध्यो वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी ।।

(ऋ० 1/105/7)

अन्वय—

अहम् सः अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित्। तम् मा व्यन्ति आ+ध्यः वृकः न तृष्ण+जम् मृगम् वित्तम् मे अस्य रोदसी ।।

व्याख्या—

परमात्मा की सृष्टि में जितने भी चेतन प्राणी हैं, उनमें मानव सर्वश्रेष्ठ है। जीव जगत् में जहां अन्य समस्त प्राणी कर्म करने में परतन्त्र हैं, वहां मानव एकमात्र ऐसा प्राणी है जो कर्म करने में सर्वथा स्वतन्त्र है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यद्यपि उसका फल भोगने में वह भी परतन्त्र है। मानव की श्रेष्ठता और कर्म की स्वतन्त्रता का मूलाधार है उसका विकसित मस्तिष्क जो उसका विचार केन्द्र है। इस केन्द्र में पदार्थों को जानने और समझने की अद्भुत शक्ति है। यही कारण है कि मानव सदा से जिज्ञासु रहा है। उसके भीतर असंख्य जिज्ञासायें उत्पन्न होती रहती हैं, जिनकी तृप्ति में उसका जीवन व्यतीत हो जाता है परन्तु फिर भी वह अतृप्त रहता है।

क्या कोई ऐसा साधन है जो मानव को उसके जीवन में तृप्त कर सके ? स्वयं जिज्ञासु होने के कारण मैं ने इसका समाधान खोजने का प्रयास किया है और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ है कि भौतिक जिज्ञासाओं की पूर्ति से न कभी किसी की तृप्ति हुई है और न कभी होगी। परमात्मा का संसार असीम और अनन्त है। इसमें जितने भी जड़ पदार्थ तथा चेतन प्राणी हैं, वे भी असंख्य हैं। मानव अपनी पांच ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से जिन्हें देखता है, सुनता है, चखता है, स्पर्श करता है तथा गन्धान्वित होता है, उनके सम्बन्ध में जब जिज्ञासु बन कर उनकी जानकारी करना चाहता है, तो असीम होने के कारण वह असीम को पूर्णतया पकड़ पाने में कैसे समर्थ हो सकता है ? जब तक वह बहिर्मुखी होकर उनके पीछे भटकता रहेगा, वह सदैव अतृप्त और अशांत रहेगा। मानव जीवन की इस दुर्दशा का वर्णन करते हुए सत्य का दिग्दर्शन कराते हुए वेद ने कहा है—

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी इदं
ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं
स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये।

(ऋ० 6/9/6)

अर्थात् मेरे कान इधर-उधर भटकते रहते हैं। मेरे दोनों नेत्र भी न जाने किसकी खोज में व्याकुल रहते हैं। मेरे मन की तो कुछ न पूछिए। न जाने कहाँ-कहाँ कितनी दूर भटकता रहता है। मेरी समझ में नही आता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि मैं क्या करूं, क्या मानूं, क्या कहूं ? प्रभो, आप ही मुझे स्थिर रहने की शक्ति प्रदान करें, जिससे मैं स्थितप्रज्ञ होकर आप की उपासना से तृप्त हो सकूं ।

उपरोक्त आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव को तृप्ति के लिए अन्तर्मुखी होना है। अन्तर्मुखी होकर उसे अपने भीतर के बन्द पटों को खोलना है और सर्वप्रथम इस जिज्ञासा को तृप्त करना है कि वह स्वतः क्या है, कौन है, कहां से आया है और उसे कहाँ जाना है ? यह आत्मज्ञान ही श्रेष्ठ ज्ञान है। बिना आत्मज्ञान के जिज्ञासु की पिपासा कभी शांत नहीं होती। जिज्ञासु की आत्मतृप्ति के लिए ही परमात्मा ने अपनी अमृत वाणी में उसे यह ज्ञान दिया है—

(1) "अहम् सः अस्मि यः पुरा सुते"

मैं वही हूं जो पहले भी था, पूर्व काल में भी था पर अज्ञान के कारण मैं 'कानि चित् वदामि' कुछ भी बोला करता हूं। अपने वास्तविक स्वरूप को न जानने और अनाप-शनाप बोलने का कारण क्या है ? केवल आत्म अज्ञान जिसकी जननी है आत्म विस्मृति। आत्म-विस्मृति के कारण ही मैं नहीं जानता कि मैं कौन हूं। इसीलिए अपने स्वरूप की मिथ्या अभिव्यक्ति किया करता हूं।

आप यदि किसी से यह प्रश्न करें कि वह कौन है तो आप को विभिन्न उत्तरमिलेंगे यथा मैं हिन्दू हूं, मुसलमान हू, ईसाई हूं, सिख हूं, पारसी हूं, जैनी हूं, बौद्ध हूं। कहीं ऐसा भी उत्तर मिलेगा कि मैं भारतीय हू, जापानी, चीनी, अमरीकी, अफ्रीकी, जर्मन, अरबी आदि हूं। कुछ विरले ऐसा भी उत्तर दे सकते हैं कि वे मानव हैं और मानव शरीर में स्त्री या पुरुष हैं। केवल योगात्मा ही शरीर, मत, जाति तथा देश के भेद भावों से ऊपर उठ कर यह कहेगा कि वह आत्मा है जैसे योगिराज कृष्ण ने अर्जुन से कहा था—'अहम् आत्मा गुडाकेश' अर्थात् हे गुडाकेश ! मैं आत्मा हू जो "सर्व भूताशय स्थितः" सब प्राणियों के भीतर भी स्थित है।

आज यह संसार जो एक दीर्घ रोगालय बना हुआ है, उसका प्रमुख कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है मानव की आत्म विस्मृति, जिससे सर्वत्र पाप पनपते जा रहे हैं। इस दीर्घ रोग की एक मात्र चिकित्सा है उत्तम विचारों की औषधि, जो केवल आत्म-वेत्ताओं के पास उपलब्ध रहती है, क्योंकि संसार के भीतर रहते हुए वे अपने आत्मस्वरूप को जानते हैं। गुरु वसिष्ठ ने भी इस सत्य को पुष्ट करते हुए कहा था—

ससार दीर्घ रोगस्य सुविचारो महौषधम्।
कोऽहं कस्य च संसारो विवेकेन विलीयते॥

सुविचार रूपी सब से बड़ी औषधि की प्राप्ति तब होती है, जब हम विवेक से अपने स्वरूप तथा संसार का विलोकन करते हैं। यह आत्म विस्मृति ही सकल दुःखों, क्लेशों, सतापों और अशान्तियों की उत्पादिका है। जब कोई अपने यथार्थ स्वरूप से अनभिज्ञ हो जाता है, उसे विस्मृत कर देता है, इधर-उधर की व्यर्थ वाणी बोलता है, तब उसे जिस दुरवस्था से पीड़ित होना पड़ता है, उसे अनुभूत कराने के लिए मैं एक दृष्टांत प्रस्तुत करता हूं।

वर्तमान युग में मानव के मनोरंजन के लिए चलचित्र और दूरदर्शन के कार्यक्रमों की जो सुविधायें उपलब्ध हैं, वैसी मेरे विद्यार्थी जीवन में नहीं थीं। तब चलती-फिरती नाटक मंडलियां होती थीं, जो नगरों और ग्रामों में तमाशे दिखाती थीं। उस समय अधिकतर नाटक धार्मिक, ऐतिहासिक और सामाजिक होते थे जैसे सती सावित्री, राजरानी मीरा, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, शराबी घर की बरबादी, आदि, पर कभी कभी इन्द्र सभा भी दिखाई जाती थी। एक बार इन्द्रसभा नाटक में जो इन्द्र रूपी पात्र का अभिनय करता था वह अस्वस्थ हो गया। उसके स्थान पर किसी लम्बे-चौडे स्वस्थ गौर वर्ण व्यक्ति को खोजा गया। संयोग-वश गली-गली भटकने वाले तथा ठेले पर सामान बेचने वाले एक व्यक्ति पर नाटक मंडली के संचालक की दृष्टि पड़ गई। उसे इन्द्र का अभिनय करने का प्रलोभन दिया गया। सस्ता जमाना था। पांच रुपये पर मामला तय हो गया। इन्द्र रूपी पात्र को कुछ विशेष नहीं करना था। इन्द्र को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंहासन पर बैठ कर संकेत करना था और उसे उर्वशी, रम्भा, मेनका आदि अप्सराओं का नृत्य देखना था। नारद मुनि के पधारने पर संकेत द्वारा नृत्य को बन्द करने का आदेश देना था और केवल एक वाक्य बोलना था—"मुनिवर, देवलोक के क्या समाचार हैं ?

चरण दास ठेले वाला इन्द्र बन कर सिंहासन पर बैठ गया, नृत्य गान हुए, नारद मुनि पधारे, देवलोक के समाचार सुनाये। पटाक्षेप हो गया पर चरण दास इन्द्र के सिंहासन पर यथावत् विराजमान रहे। अगले दृश्य के लिए उन्हें हटाना नितान्त आवश्यक था। जब संचालक महोदय ने उन्हें यह आदेश दिया तो श्री चरणदास जो अपने को सचमुच इन्द्र मान कर सिंहासन पर विराजमान थे, आवेश पूर्ण स्वर में बोले—"प्रतिहारी! यह कौन धृष्ट है, जो हमें सिंहासन पर से उठने का आदेश दे रहा है। इसे तुरन्त बन्दी बनाकर बन्दीगृह में डालो।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि अभिनय करने वाली नाटक मण्डली के संचालक महोदय ने दो बलिष्ठ सेवकों द्वारा उठवाकर जब उन्हें बाहर फेंकवा दिया तब श्री चरणदास जी को अपनी विस्मृति का आभास हुआ।

अपने को न जानना ही आत्मविस्मृति है। 'न विजानामि यत् इव इदमस्मि।' मैं क्या हूं, मैं कौन हूं, मैं नहीं जानता और यही अज्ञान है जिसके आधार पर मैं व्यर्थ की बोलियां बोला करता हूं। एक ओर जहां अज्ञानी 'पापोऽहं पाप कर्महिं पापात्मा पापसम्भवः' बोल कर यह कहते हैं कि मैं तो पापों वाला पापी हूं, पापात्मा हूं, इसलिए मुझसे तो पाप सम्भव है। मैं पाप विमुक्त हो ही नहीं सकता। दूसरी ओर ऐसे भी अज्ञानी हैं जो यह घोषणा करते हैं कि 'अहम् ब्रह्मास्मि'। मैं ही ब्रह्म हूं। इस संदर्भ में मुझे एक रोचक प्रसंग स्मरण हो आया है। किसी आर्यसमाज में मेरा प्रवचन हो रहा था, जिसका विषय था 'आत्मा द्वारा परमात्मा का आह्वान'। एक सज्जन जो नियमित रूप से कथा का श्रवण करने आते थे, मुझे अपने निवास स्थान पर ले गये और कहने लगे कि आप की कथा रोचक और ज्ञानप्रद है इसलिए मैं उसका श्रवण करने आता हूं अन्यथा कथा के विषय से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो मेरा मतभेद है। हम सब परमात्मा के अंश हैं। इसलिए हम सब ब्रह्म हैं, आप भी ब्रह्म हैं। ब्रह्म के द्वारा ब्रह्म का आह्वान, इसे छोड़ कर 'अहं ब्रह्मास्मि, का पाठ पढ़ाइये। सभी ज्ञानी हैं, ब्रह्मज्ञानी हैं, ऐसा उन्हें समझाइये। मैंने निवेदन किया कि यदि आप भी ब्रह्म हैं, मैं भी ब्रह्म हूं, आप के पुत्र-पौत्र, पत्नी, माता, पुत्री-पुत्र, बन्धु सभी ब्रह्मस्वरूप हैं तो एक दूसरे का अभिवादन, चरण स्पर्श किस लिए? विराट् के अंश होकर विराट् की उपासना कैसी? शिक्षालयों में अपनी संतति को भेजना बन्द कर दीजिये। वे सब ब्रह्म हैं। सब अपना ज्ञान अपने पास रखें। कौन छोटा, कौन बड़ा, कौन पवित्र, कौन पापी? सभी तो ब्रह्म हैं। वार्तालाप के दौरान जब उनकी पुत्र वधु जलपान की सामग्री लाई तो मैंने कहा कि यदि आपकी इस पुत्र-वधु को कोई कुदृष्टि से देखे अथवा बलात्कार का यत्न करे तो आप क्या करेंगे? "मैं उस दुष्ट की आँखें निकाल लूंगा। उसकी हत्या कर दूंगा—" वे सहसा आवेश में आकर बोले। मैंने कहा 'महाराज, यह तो काबे में कुफ्र हुआ। आप की पुत्रवधु भी ब्रह्म और उसे छेड़ने वाला भी ब्रह्म। तो कहां का पाप और कैसा अपराध?"

वेद वाणी के माध्यम से प्रभु ने यह दिव्य ज्ञान दिया कि मनुष्यो, इधर-उधर की बेकार बातें मत करो। अपने आत्म-स्वरूप को जानो। तुम वही हो जो पहले भी थे। तुम आत्मा हो। शरीरों के आकार-प्रकार कर्मानुसार विभिन्न हैं परन्तु आत्मा तत्त्व वही है। यह आत्मा क्या है? वेद ने इसे संज्ञा दी है "वायु"। यह वायु क्या है, 'अनिलम् अमृतम्' अर्थात् अजर और अमर और काया क्या है 'भस्मान्तं शरीरम्' नश्वर, भस्म हो जाने वाली। वायु में गतिशीलता है। 'वा गतौ' आत्मा शरीर को गतिमान् करता है। आत्मा और दोनों भिन्न हैं। आत्मा चेतनामय है जब कि शरीर जड़ है। शरीर रूपी जड़ को गतिमान् करने वाला चेतन तत्त्व ही आत्मा है। जो आत्म वेत्ता हैं वे स्पष्ट उद्घोषणा करते हैं—'अहम् आत्मा न शरीरम्' अर्थात् मैं आत्मा हूं, शरीर नहीं। शरीर तो आत्मा का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गृह है, साधना का क्षेत्र है। शरीर बदलते रहे हैं और बदलते रहेंगे परन्तु आत्मतत्व रहेगा, जो पहले से था। शरीरों के स्वरूपों का यह परिवर्तन मानव शरीर मानव शरीर में किये गये कर्मों की आधारशिला पर स्थित होता है। सकल आधियाँ तथा व्याधियां कर्मो के फलस्वरूप हैं। मंत्र में स्पष्ट रूप से उपमालंकार में कहा गया है—

(2) वृकः न तृष्ण+जम् मृगम्—जैसे प्यासे मृग को भेड़िया घेर कर मार डालता है वैसे ही— आ+ध्यः तम् मा व्यन्ति आधियां मुझे घेर रही हैं। एक प्रचलित भाव कथा है कि एक भेड़िया किसी झरने का बहता हुआ जल ऊपर के शिखर से पी रहा था। एक प्यासा मृग नीचे को बहते हुए जल को पीने लगा। भेड़िये की मृग पर दृष्टि पड़ी। उसे अपना ग्रास बनाने के लिए वह बोला "मेरा जल जूठा क्यों कर रहे हो ?"

"महाराज, मैं तो आप का जूठा जल पी रहा हूं। ऊपर का जल आप पी रहे हैं और नीचे बहता हुआ मैं।'

'मुझे गाली देता है झूठा बना कर।'

'महाराज, ऐसा दुःसाहस मैं कैसे कर सकता हू ?'

'ठीक है, तूने नहीं, तेरी मां ने मुझे कल गाली दी थी, उसका बदला मुझे लेना है।' और ऐसा कह कर भेड़िया प्यासे मृग पर झपटा और उसे मार कर खा गया।

ये आंधियाँ और व्याधियां किसे सताती हैं ? उस आत्मा को, जो अज्ञान के कारण अपने स्वरूप से अनभिज्ञ होने पर अशक्त बना हुआ है। परन्तु आत्म ज्ञानी कहता है—'अहं इन्द्रः न पराजिग्ये।' मैं इन्द्र हूँ—मेरा पराभव कभी नहीं होगा। किसकी आत्मा इन्द्र है ? जिसकी सकल ज्ञान और कर्म इन्द्रियां तथा मन उसके वश में हैं। भोगों और पापों में आधियों का वास है। जो योगी और पुण्यात्मा हैं, वे आधिमुक्त हैं। आत्म-विजेता ही वास्तविक रूप में वह इन्द्र है, जिसका कभी पतन नहीं होता। अदिति की यह अमृत संतति ही इन्द्र है, जो षड्ऋपुओं को परास्त कर यशस्वी बनती है। वेद के शब्दों में—

(ऋ० 10/48/5)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहि ॥

(अथर्व० 12/1/54)

आत्मज्ञानी जो अविमुक्त है, कहता है कि मैं (सहमानः) सहनशील हूं (भूम्याम् उत्+तरः नाम) पृथ्वी पर उच्च नाम वाला अर्थात् यशस्वी (अस्मि) हूं [क्योंकि] (अभि+षाट्) सर्व जेता (विश्व-षाट्) सबका विजयी तथा (आ+शाम् आ+शाम् वि+सासहिः) प्रत्येक दिशा में जय-विजय सम्पादित करने वाला (अस्मि) हूं।

जो आधियों में फंसे हैं, ऐसे व्यथित भोगात्मा पापात्मा दुरात्मा असहनीय पीड़ाओं के कारण इस मंत्र के अनुसार पुकार उठते हैं--'रोदसी में अस्य वित्तम्'—

हे द्यौ व पृथ्वी मेरी इस दुर्दशा को जानो। व्यथित की जो करुण पुकार होती है, वह वास्तविक आत्मचीत्कार है। दुःखी, अशान्त और व्याकुल व्यक्ति की कामना होती है कि उसकी पीड़ा को सब जानें और उस व्यथा से उसे मुक्त करें, द्यौ और पृथ्वी का शाब्दिक प्रयोग यहां इसी आशय को व्यक्त करता है। मानव का यह स्वभाव है कि जब उसकी पीड़ायें असहनीय हो जाती हैं तो वह आर्तनाद करता है कि कोई तो उसकी व्यथा को जाने मानव भूचर है पर वह आकाश की ओर भी निहारता है। आकाश में द्यौ व्याप्त है। जगमगाते लोक लोकान्तर। उन्हें निहारने से सामान्य मानव को आह्लाद होता है पर जो पीड़ाओं से कराह रहा है, उसे कोई भी वस्तु चाहे वह कितनी ही मनोहर, भव्य, रोचक और आनन्ददायक क्यों न हो, नहीं भाती, क्योंकि उसका ध्यान तो अपनी पीड़ाओं की ओर रहता है, जिनसे वह मुक्ति पाना चाहता है।

जो आत्मज्ञानी हैं, जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार किया है और अपने को सहनशील बना रखा है, वे सब पीड़ाओं को हसते-हंसते सहते हैं, क्योंकि उन्हें यह प्रत्यक्ष अनुभूति है कि सकल वेदनायें उनकी क्रियाओं की ही प्रतिक्रियायें है। महर्षि वेदव्यास ने कहा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति ॥

अर्थात् जैसे गौ का बछड़ा सहस्रों गौवों में से अपनी माता के ही स्तनों को जाकर पकड़ता है, उसी भांति किया हुआ कर्म उसके कर्त्ता को ही पकड़ता है। प्रभु तो न्यायकारी है। गुणगान से वह अपना न्याय तो कदापि नहीं छोड़ेगा। ईश्वरीय ज्ञान स्पष्ट शब्दों में मानव को बोध कराता है—

न किल्विषमत्र नाधारोऽस्ति,
न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्
पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।

(अ. 12/3/48)

कोई संशय नहीं है और न ही कोई आधार है। कोई मित्र भी संगति करते हुए साथ नहीं चलता है। हमारा जीवन रूपी पात्र ऐसा अन्यून रहता है कि पकाने वाला जो पकाता है, वही उसमें पुनः आ समाता है, उसमें निहित हो जाता है।

अतएव अपनी पीड़ाओं के लिए हम स्वयं उत्तरदायी हैं। सारा जीवन रोते-पीटते बीत जाता है पर हम अपने रुदन से भी कोई शिक्षा नहीं लेते। हम जिस भूमि पर रहते हैं वह भी हमारी भांति असीम है पर जिस द्यौ को हम निहारते हैं, वह अनन्त और असीम है। जब हम मर्यादाओं को तोड़कर अमर्यादित हो जाते हैं, अपने जीवन के एक मात्र परम लक्ष्य को विस्मृत कर जब आकाशवत् असंख्य महत्त्वाकाँक्षाओं को अपने भीतर संजो लेते है और उनकी आपुर्ति हमारे क्लेश का कारण बन जाती है, तब भी हम अपने को बोधत्व से वंचित रखते हैं। ठोकर पर ठोकर खाते हैं, फिर भी नहीं सम्भलते। केवल चिल्लाते रहते हैं। चीत्कार से पीड़ायें न कभी शाँत हुई हैं न कभी होंगी। उन्हें केवल आत्मवेत्ता धृतिपूर्वक सहन करता है। वह भूमि से अन्तरिक्ष, अन्तरिक्ष से द्यौ, द्यौ से ज्योति और आनन्द की ओर जाता है। वेद के शब्दों में—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम् ।
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम् ।।
(अथर्व. 4/14/3)

अर्थात् मैंने भूमि से आकाश तथा आकाश से द्यो पर आरोहण किया। द्यो की नाक पृष्ठ से आरोहण करते हुए मैंने ज्योति व आनन्द की प्राप्ति की।

मानव शरीर भूतत्त्व है। हृदय अन्तरिक्ष में जगमगाने वाला आत्मा द्यो है तथा दिव्य ज्ञान का प्रकाश और आनन्ददाता परमात्मा है। अतएव सर्वप्रथम तो हमें भूतत्त्व से ऊपर उठ कर हृदय के अन्तरिक्ष में जाकर आत्मस्वरूप को जानना है। 'स्वराड् मामा' आत्मा ज्योतिर्मय है, ज्योति-स्वरूप है। भूतत्त्व से जिन्हें ऊपर आरोहण करना हैं उन्हें सर्वप्रथम अपने को अहंकार के सर्प से मुक्त करना होगा। यह अभिमान रूपी सर्प है जो हमें बारम्बार, जन्मान्तर तक डसता चला आया है और हम अपने को इस विषधर के विष से मुक्त नहीं कर सके हैं। प्रश्नोत्तर शैली में वेदवाणी कितनी भव्य अभिव्यक्ति करती है—

प्रश्न—क ईमास्कन्दमर्षति ?

उत्तर– शशस्कन्दमर्षति ।

प्रश्न—क ईम् पन्थां वि सर्पति ?

उत्तर—अहिः पन्थां वि सर्पति ।

(यजु. 23-55-56)

मार्ग पर कौन छलांगें मारता हुआ जाता है ? उत्तर है खरगोश।

मार्ग पर कौन घिसटता-पिटता रेंगता है ? उत्तर है सर्प।

जो अहंकार रहित शुद्ध पवित्र हैं वे श्वेत खरगोश की भांति साधना पथ पर मुदित-प्रमुदित होकर द्रुत गति से बढ़ते हैं। जो बाहर से सुन्दर पर भीतर अहकार के विष से युक्त हैं, वे सर्प की भांति पेट से रेंगते रहते है।

आत्मज्ञानी इस रहस्य से अवगत हो जाने पर दो बातों को सर्वथा त्यागता है और अहंकार शून्य हो जाता है। इन्हें दो शब्दों में व्यक्त करें—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'अहम्' तथा 'मम' अर्थात् मैं और मेरा। इनके स्थान पर वह कहता है—प्रभो! तू और तेरा। जो 'मम' को 'त्वम्' और 'मे' को 'ते' में परिवर्तित कर देते हैं, वे सर्वथा अहंकार मुक्त हो जाते हैं और वे ही निरंतर आरोहण कर ज्योति तथा आनन्द को प्राप्त करते हैं। अहंकार से मुक्त होने का एकमेव उपाय है भीतर-बाहर सर्वत्र विराट् का दर्शन और उससे अपनी तुलना। ऐसा करने पर प्रतीत होगा कि हम विशाल सागर की अथाह जलराशि के सम्मुख बूंद मात्र हैं। विराट् प्रकाश की तुलना में केवल जुगनू ही हैं। इस रहस्य का साक्षात्कार हम इस लघु दृष्टांत से करें।

एक सज्जन पुरुष अहंकार से मुक्त करने में अपने को असमर्थ पाते थे। प्रत्येक बात में उनका अहम् भाव मैं और मेरे में झलकता था। विराट् की ओर दृष्टिपात काउन्होंने कभी कोई प्रयत्न नहीं किया था। प्रसंगवश उनके छोटे पुत्र के पास धरती के मानचित्रों की पुस्तक थी, जिसे एटलस कहते हैं। पुस्तक नई थी और बच्चा उसे लगन से देख रहा था। विश्व के मानचित्र देखते हुए मैंने कहा—बेटा, भारत कहां है?

'यह रहा', बच्चे ने चित्र में उस भू भाग को दर्शाकर कहा। मैं बोला--'क्या भारत इतना छोटा है?'

'नहीं, वह तो बहुत बड़ा है' और बच्चे ने वह पृष्ट दिखलाया जिस पर केवल भारत का मानचित्र था।

'इसमें उत्तर प्रदेश कहां है?'

'यह रहा'

'क्या उत्तर प्रदेश इतना लघु है?'

'नहीं तो' यह कहकर पूरे पृष्ठ वाला उत्तर प्रदेश का मानचित्र दिखलाया। मैंने काहा—'इसमें लखनऊ कहां है?' तो उसने उस बिन्दु को दर्शाया जहां लखनऊ शब्द अंकित था।

'क्या लखनऊ इस बिन्दु जैसा छोटा है?'

'नहीं, पर ईस चित्र पुस्तिका में लखनऊ नगर का चित्र ही नहीं है।'

'अच्छा', इस लखनऊ नगर में हमारा मोहल्ला कहां है, उसमें हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मकान कहां है और उस मकान में हम कहाँ बैठे हैं ?' बच्चा निरुत्तर हो गया। वे सज्जन उत्सुकतावश प्रश्न कर बैठे—ये सब किसलिए पूछ रहे है आप ? मैंने कहा—जब इस धरती पर जहाँ हम निवास करते हैं, उसकी विशालता में हम इतने नगण्य है तो परमात्मा के असीम और अनन्त जगत् में हमारा इतना अस्तित्व है, जिसके आधार पर हम रात-दिन में और मेरा किया करते हैं।

अतएव विराट् की उपासना ही हमें हमारे उस लघु स्वरूप का बोध कराती है, जो हमें उस 'अहम्' मम' 'मे' से मुक्त करता है, जो हमारे पापों का मूल है और जिसके कारण हमें वेदनाओं को भोगना पड़ता है। मन्त्र में यही पावन शिक्षा है कि हम तो वही हैं जो पहले थे अर्थात् चेतनामय आत्मायें। अज्ञान वश अपने स्वरूप को न जानने के कारण ही हम अपना वृथा बखान करते हैं। हमारे पाप और दुष्कर्म ही उन आधियों को जीवन में लाते हैं जो हमें घेर कर मारती हैं और हम प्यासे के प्यासे रह जाते हैं। अपनी वेदनाओं के चीत्कार करते रहते हैं, दूसरों को सुनाते है, सहायतार्थ उन्हें पुकारते रहते रहते हैं पर अपने सुधारक स्वयं नहीं बनते।

इस मंत्र के मनन से जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रतिपल आत्मनिरीक्षण करेगा कि क्या मैं वही हूं जो कुछ पहले था, व्यर्थ बोलने वाला, रुदन करने वाला अज्ञानी अथवा कुछ परिवर्तित हो गया हूं, निरन्तर ज्ञानमार्गी होकर अपने को बदल रहा हूं, अपने को पहचान रहा हूं, जो बोल रहा हूं वह सार्थकता को लिए हुए है, अपनी वेदनायें केवल अपने को सुना रहा हूं, उन्हें स्वयं दूर कर रहा हूं, जीवन लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा हूं, उन उच्चताओं पर आरोहण कर रहा हूं जो विमल ज्ञान ज्योति और आनन्द दात्री हैं, तो मैं इस मन्त्र की मन्त्रणा को सार्थक कर रहा हू।

जुआ, शराब, मांस, सिगरेट, नीच-दुष्टो की सेवा, मूर्ख मित्रों से मित्रता अपनों से कड़वा बोलना और बात-बात पर लड़ाई-झगड़ा करना मनुष्य को बिना आग के ही जला देते हैं।

हम आदतों के गुलाम हैं, तो हमें अच्छी आदतें अपननी चाहिये।

—व्यवहार नीति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामानन्द सागर से धर्मपाल शर्मा की भेंटवार्ता

'रामायण' ने युवकों को पश्चिम से पूर्व की ओर लौटाया है रामानन्द सागर

पिछले 6 अगस्त को रामायण धाराबाहिक के निर्मात और फिल्म जगत् के विख्यात निर्देशक, पटकथा एवं संवाद लेखक श्री रामानन्द सागर का दिल्ली में भव्य स्वागत हुआ। प्रस्तुत है इसी अवसर पर उनके साथ हुई बात-चित।

—सम्पादक

रामानन्द सागर निर्मित रामायण सीरियल को आज दूरदर्शन पर लाखों लोग सारे काम छोड़ कर देखते हैं। इस धाराबाहिक को देखने के लिए बड़े-बड़े राजनेता इस समयावधि में अपना कोई कार्यक्रम निर्धारित नहीं करते। रामानन्द सागर ने बात-चीत के दौरान बताया कि उन्हें सब से अधिक भावविभोर करने वाली टिप्पणी विमान यात्रा के दौरान एक विद्वान् सहयात्री की लगी, उसने कहा, रामानन्द सागर जी आप नहीं जानते आपने कितना बड़ा काम किया है। रामायण धारा वाहिक बना कर। इसने पश्चिम के प्रवाह में भटक रहे लाखों युवकों को फिर से पूर्व की धारा में वापस लौटाया है। और इस तरह हमारी संस्कृतिक धारा को मजबूत किया है। रामानन्द सागर से हुई पूरी बात-चीत इस प्रकार है—

प्रश्न—'रामायण' पर इससे पहले भी कई फिल्में बन चुकी हैं परन्तु वे इतनी चर्चित कभी नहीं हुई, जितना यह रामायण धाराबाहिक इस सफलता का रहस्य क्या है?

उत्तर—इसमें केवल प्रस्तुति और उसके पीछे की साधनाका अन्तर है। इस धारावाहिक को तैयार करने के लिए विद्वानों द्वारा रचित विविध रामायणों का संकलन कर उनका गहराई से अवलोकन किया गया। फिर रामचरित में निहित आध्यात्यंकता और दर्शन के मूलभाव को समझा गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'रामायण' धारावाहिक की प्रस्तुति में हमने इस बात का ध्यान रखा कि इसमें राम के जीवन का केवल घटनात्मक विवरण हीन रहे अपितु उसका पूरा दार्शनिक और आध्यात्मिक भाव प्रकट हो। फिर इसके पात्रों ने भी राममय होकर पूरी श्रद्धा और निष्ठा से अभिनय किया। जहां तक इसकी लोकप्रियता का सवाल है, उसका कारण यह है कि व्यक्ति बाहर से वही ग्रहण करता है, मूल रूप से जिसके बीजरूप संस्कार उसके अन्तःकरण में छिपे होते हैं। यह सत्य है कि भारतीय जनमानस में हजारों साल पुराने श्रीराम की परम्परा के उच्च आदर्श आज भी बीज रूप में विद्यमान हैं। इसीलिए उन परम्पराओं और आदर्शों को सही ढंग से प्रदर्शित किया गया तो देश के करोड़ों लोगों ने, विशेष कर युवकों ने, इसे हार्दिक प्रसन्नता से ग्रहण कर लिया।

प्रश्न —'रामायण' धारावाहिक के कारण जनमानस में सांस्कृतिक चेतना की जो लहर पैदा हुई है, क्या उसे और अधिक समृद्ध और शक्ति बनाने का कोई विचार आपके मन में आया है?

उत्तर निश्चय ही, 'रामायण' के स्वागत से और इसकी जनस्वीकृति से मैं बहुत उत्साहित हुआ हूं। मैंने संकल्प किया है कि देश की सांस्कृतिक धरोहर को लोगों तक पहुंचाने के लिए अन्य संस्कृतिमूलक धारावाहिक बनाने का भी प्रयत्न अवश्य करूंगा, क्योंकि इसमें सन्देह नहीं है कि देश की जनता की इस देश की संस्कृति और आदर्शों के प्रति गहरी श्रद्धा है और उसे इस तरह की चीजें मिलें तो वह इनका हार्दिक स्वागत करेगी।

प्रश्न—रामायण धारावाहिक के कारण इसके दर्शकों के जीवन में भी कहीं कहीं गुणात्मक परिवर्तन दिखाई दिये हैं। इसका प्रभाव मनोरंजन से अधिक रचनात्मक परिवर्तन के रूप में दिखाई दिया है। क्या आपको भी ऐसा अनुभव हुआ?

उत्तर—हां, मैंने भी लोगों के जीवन में इसके कारण सुखद परिवर्तन देखे हैं। उनके पास खड़े राम का अभिनय करने वाले अरुण गोविल ने कहा कि राम के प्रति गहरी श्रद्धा रखने वाले हजारों लोग जब राममक्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से प्रेरित होकर मुझमें ही राम की कल्पना करके मुझे आदर देते हैं तो मेरे अन्दर भी स्वयं एक ऐसा आत्म परिवर्तन आ गया है कि मैं इस बात का पूरा ध्यान रखता हूं कि मेरे द्वारा कम से कम कोई ऐसा बाहरी व्यवहार न हो जाये, जो श्री राम के आदर्शों के विपरीत हो। इससे मेरे अपने जीवन में एक संतोषदायक परिवर्तन आया है। इसके बाद श्री सागर ने बताया कि बंगलूर के एक मुस्लिम सज्जन का उनके पास पत्र आया है कि वह उन्हें (श्री सागर को) अपनी 6 एकड़ जमीन देना चाहता है ताकि श्री सागर वहां रहकर कोई और अच्छा काम कर सकें। ऐसे ही अनेक पत्र आते रहते हैं, जिनमें 'रामायण' से उनके बच्चों के जीवन में परिवर्तन के उदाहरण भरे होते हैं।

प्रश्न : 'रामायण' की लोकप्रियता के कारण आपका देश-भर में सम्मान हो रहा है, इस बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?

उत्तर : इस सम्मान और अभिनन्दन के लिए तो मैं जनता का कृतज्ञ हूं परन्तु मुझे यह भ्रान्ति नहीं हैं कि यह केवल मेरा या मेरी प्रस्तुति का अभिनन्दन है। जाहिर है कि अलग-अलग विषयों पर बहुत अच्छी फिल्में और धारावाहिक बने हैं पर उनके निर्माताओं का ऐसा स्वागत जनता ने नहीं किया। वस्तुतः यह उन आदर्शों की अभिव्यक्ति का स्वागत है, जो करोड़ों लोगों के हृदयों में बीज रूप में छिपे हुए हैं और जिनके अंकुरित होने पर वे इस तरह हर्षातिरेक से विभोर हो रहे हैं, जैसे कृषक अपनी धरती पर उगती-फलती फसल को देखकर हर्षित होता है। यह अभिनन्दन अपने मन में व्याप्त महान आदर्शों के अंकुरण का है।

प्रश्न—'रामायण' धारावाहिक के पात्र जनता के हृदयहार बन चुके हैं। लोग उन्हें वास्तविक राम, लक्ष्मण, सीता और भरत जैसा ही मान देते हैं। क्या आपने इन पात्रों के चयन में बहुत सावधानी बरती थी ? कैसे किया आपने यह चयन ?

उत्तर स्वाभाविक है कि 'रामायण' के महान् चरित्र नायकों के पात्रों का चयन खोजबीन के साथ किया जाता। मैंने राम, लक्ष्मण, सीता, भरत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अन्य सभी पात्रों के चयन में केवल यही ध्यान नहीं रखा कि उनके चेहरे उन ऐतिहासिक नायकों से मेल खायें बल्कि यह भी ध्यान रखा कि वे पात्र उन आदर्शों और भावों को भी बखूबी अभिनीत कर सकें। गहरी खोजबीन के बाद मुझे इसमें सफलता मिली। यही कारण है कि राम का अभिनय करने वाले अरुण गोविल के चेहरे पर आप एक मंदस्मित हास्य देखते हैं, जो उन्हें आदर का पात्र बनाता है तो लक्ष्मण का अभिनय करने वाले सुनील लहरी के चेहरे पर चपलता और सजगता के भाव दिखाई देते हैं। सीता की भूमिका करने वाली दीपिका के चेहरे कीं अदभुत सौम्यता सबका मन मोह लेती है। सारे पात्रों का चयन इसी सादृश्य और भाव साम्य की दृष्टि से किया गया है, इसमें सन्देह नहीं कि इन पात्रों ने अपनी असीम साधना से इन भूमिकाओं को जीवन्त कर दिखाया है इसीलिए ये आज उनके प्रिय प्रतीक बन गये हैं।

प्रश्न—इस धारावाहिक में कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की भूलें रह गई हैं जैसे यह कहा जाना कि 'दशरथ का राज्य वहां तक है, जहां तक सूर्य की किरणें जाती हैं।' क्या ऐसी भूलों को इतिहासविदों द्वारा संशोधित नहीं कराना चाहिए था ?

उत्तर—दरअसल 'रामायण' धारावाहिक की रचना सांस्कृतिक आदर्शों की प्रस्थापना के लिए की गई है इसलिए उस पक्ष पर पूरा जोर दिया गया है कि आदर्शों की प्रभावशाली व्याख्या की जाए। रामायण में व्यक्त, राज-नीति, धर्म, परिवार, समाज और इनसे सम्बंधित मर्यादाओं का मार्मिक और सूक्ष्म विवेचन है। इन्हें प्रभावशाली बनाने के लिए आलंकारिक भाषा का भी सहारा लिया गया है। अत उसे उसी रूप में देखा जाना चाहिए। यहां यह आलंकारिक अभिव्यक्ति ही है। इतिहास लेखन दूसरी बात है। उसमें कठोर तथ्य तो रहते हैं पर वह नीरस होता है। यहां हमारा उद्देश्य इतिहास लेखन से नहीं था, अपितु भाव संप्रेषण से था।

प्रश्न—कुछ आलोचकों ने कहा है कि दूरदर्शन ने इस धारावाहिक को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को प्रदर्शित कर साम्प्रदायिकता का परिचय दिया है और इससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ने का खतरा है।

उत्तर—सच तो यह है कि दूरदर्शन ने इस धारावाहिक को दिखाकर मानव मूल्यों को उदात्तता प्रदान की है। रामायण में कुछ भी साम्प्रदायिक नहीं। रामायण में व्यक्त आदर्श किसी जाति या सम्प्रदाय के आदर्श नहीं बल्कि मानव मात्र के लिए कल्याणकारी आदर्श हैं। मेरी जानकारी में इसके प्रदर्शन से कहीं साम्प्रदायिक तनाव नहीं बढ़ा। हां, मेरे पास सभी सम्प्रदायों और धर्मों को मानने वालों के ऐसे पत्र जरूर आये हैं, जिनमें इसे आपसी सद्भाव बढ़ाने वाला सब से सफल प्रयास बताया गया है। जहां तक आलोचकों की बात है, वे स्वतन्त्र हैं लेकिन करोड़ों लोगों द्वारा इसका स्वागत और इससे बढ़ने वाला सद्भाव इस बात का जवाब है कि यह साम्प्रदायिक और विभेदकारी नहीं अपितु संयोजकता का बहुत बड़ा सूत्र सिद्ध हुआ है। ★

महात्मा प्रभु आश्रित की जन्म शताब्दी

करतारपुर (जालन्धर)। गुरु विरजानन्द स्मारक समिति की ओर से गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय में 20 से 27 सितम्बर तक महात्मा टेकचन्द जी प्रभु आश्रित की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। अध्यक्ष का आसन तपोवन देहरादून के महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ ग्रहण करेंगे।

स्वामी वेदानन्द सरस्वती दिवंगत

रोपड़। आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी वेदानन्द सरस्वती का 18 अगस्त को स्वर्गवास हो गया है। 30 अगस्त को स्वामी जी के जन्म स्थान टण्ढेड़ा (जिला मुजफ्फर नगर) उनकी आत्मा की सद्गति के लिए हवन यज्ञ किया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

साम्प्रदायिकता की समस्या

—सत्यपाल शास्त्री

लोक सभा में साम्प्रदायिकता की समस्या पर तीन दिन तक विशेष बहस हुई। राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद का विवाद भी उभरा। बताया गया कि मन्त्रिमंडल की साम्प्रदायिक मामलों की उपसमिति इस बारे में शीघ्र ही फैसला करेगी। यह भी बताया गया कि सरकार ने साम्प्रदायिकता को जड़ मूल से समाप्त करने के लिए योजना बनाई है।

साम्प्रदायिकता की समस्या बहुत पुरानी है। इसकी जड़े बहुत गहरी हैं। इस विष वृक्ष का बीज मुस्लिम साम्प्रदयिक नेताओं ने बोया था। अंग्रेजों ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाया।

पाकिस्तान की कल्पना का आधार ही भारत-द्वेष और हिन्दू-द्वेष है। पिछले दिनों पाकिस्तान की अवामी नेशनल पार्टी के अध्यक्ष और खान अब्दुल गफ्फारखाँ के सुपुत्र खान अब्दुल वली खाँ द्वारा लिखित एक पुस्तक प्रकाशित हुई। नाम है—फैक्ट्स आर फैक्ट्स (तथ्य तो तथ्य ही हैं।) वलीखां लिखते हैं कि पाकिस्तान की स्थापना से पूर्व मुस्लिम लीग के नेता पृथक् मुस्लिम देश की स्थापना के लिए इतने अधिक व्यग्र थे कि उन्होंने केवल चार वर्ष की अल्पावधि में ब्रिटिश शासकों के समक्ष भारत विभाजन के लिए छह योजनाओं के प्रारूप प्रस्तुत किए थे। मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना तो बाद में मैदान में उतरे। उनसे पूर्व केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के छात्र रहमत अली और कवि-दार्शनिक डाक्टर सर मुहम्मद इकबाल पाकिस्तान का स्वप्न देख चुके थे। शुरू-शुरू में जब मिस्टर जिन्नाह को बताया गया कि—"इकबाल पाकिस्तान की बात करते हैं तब मिस्टर जिन्ना ने कहा कि—"इकबाल कवि हैं, कोई राजनीतिज्ञ नहीं।" मिस्टर जिन्ना पहले

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कट्टर राष्ट्रवादी थे। दादा भाई नौरोजी के निजी सचिव थे। सन् 1916 में जब कांग्रेस ने साम्प्रदायिक अवार्ड में प्रति 'न रद्द न कबूल' का विचित्र रवैया अपनाया, तब मिस्टर जिन्ना ने साम्प्रदायिक राजनीति की दिशा में कदम बढ़ाया। स्वाधीनता के बाद भी कांग्रेस ने पंजाब में अकाली दल और केरल में मुस्लिम लीग से समझौता किया। कश्मीर के लिए विशेष स्थिति की खातिर संविधान में धारा 370 जोड़ी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस से यह आशा कैसे की जाए कि वह साम्प्रदायिकता से लोहा ले पायेगी। अनेक मनीषियों द्वारा समझाये जाने के बावजूद कांग्रेस अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण में लगी हुई है। वह भूल रही है कि अल्पसंख्यक कभी सन्तुष्ट न होंगे। उनकी मांगें बढ़ती ही जायेंगी। जैसे मुस्लिम लीग ने पहले सात मांगें की फिर चौदह, उसके बाद इक्कीस और अन्त में वह कहने लगी कि वह पाकिस्तान से कम पर किसी भी हालत में राजी न होगी। कांग्रेस को पिछले अनुभव से शिक्षा लेनी चाहिए। तभी साम्प्रदायिकता की समस्या हल हो सकती है।

पंजाब में क्या हो रहा है ?

पंजाब में पिछले छह साल से अशान्ति और तीव्र क्षोभ का दौर-दौरा है। स्थिति को सामान्य बनाने के लिए कितने प्रयत्न हुए, लेकिन हत्याओं का क्रम जारी है। वैसे तो यह विवाद बहुत पुराना है, लेकिन चौदह वर्ष पूर्व आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पास होने के बाद विवाद ने उग्र रूप धारण किया आनन्दपुर साहब प्रस्ताव में 'खालसा जी के बोलबाले' की बात कही गई है, जिसका आशय स्वायत्त शासन से ही है। इससे पूर्व सन् 1966 में पंजाबी सूबा बनचुका था। अक्सर कहा जाता है कि आर्यसमाज के कहने पर पंजाब के हिन्दुओं ने सन् 1951 की जनगणना में अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई, जिससे समस्या जटिल हो गई लेकिन ऐसा कहने वाले यह भूल जाते हैं कि अकालियों ने पंजाबी सूबा सब पंजाबियों के लिए नहीं, अपितु केवल सिखों के लिए बनवाया। जरनैल सिंह भिंडरांवाले ने अपने दिल की बात कह दी, जब कहा कि 'हमें खालिस्तान नहीं चाहिए, लेकिन यदि कोई देगा तो हमें लेने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में हिचक भी नहीं।" अब तो उनके अनुयायियों को यह कहने की भी जरूरत महसूस नहीं होती कि "हमें खालिस्तान नहीं चाहिए।"

अब एक नई स्थिति पैदा हुई है। आतंकवादियों ने खुल्लमखुल्ला घोषणा कर दी है कि वे किसी की नहीं सुनेंगे। आतंकवादी समझौता वार्ता, चुनाव आदि के पूर्णत: विरुद्ध हैं। वे खालिस्तान की स्थापना से कम किसी बात पर राजी नहीं। मानो मारकाट बढ़ाने के लिए इतना ही काफी न था, सिख राजनीति में गत्थेदार गुरचरण सिंह तोहड़ा सदृश नेता आगे आ गये, जिनके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि वे कब किस गुट के साथ जा मिलेंगे। अकाली नेताओं ने मिल-मिलाकर सिख धार्मिक प्रतिष्ठान की गरिमा और प्रतिष्ठा को जबानी जमा खर्च का मामला बना दिया है। लेकिन पहले जहां अकली नेता उग्रवादियों का इस्तेमाल करते थे, अब आतंकवादी अकाली नेताओं का इस्तेमाल कर रहे हैं। चार अगस्त को हुए सम्मेलन में उग्रवादियों ने अकाली नेताओं को अल्टीमेटम दिया है कि असली ताकत हमारे पास है। हम खालिस्तान लेंगे और बन्दूक से लेंगे। तुम हमारे साथ हो तो ठीक है अन्यथा रास्ते से हट जाओ।

अब पंजाब में बातचीत के जरिये राजनैतिक हल निकालने की सामर्थ्य किसी पक्ष में नहीं। कुछ भी हो, खालिस्तान को मान्यता देने की तो बात ही क्या, खालिस्तान पर समझौता-वार्ता करने का अधिकार भी किसी को नहीं दिया जा सकता।

अगला अंक

अगला अंक बृहत्काय विशेषांक होगा। जैसा आपको पता है, इसमें श्रीमती मृदुलकीर्ति द्वारा किया गया सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है।

विशेषांक का मूल्य आठ रुपये होगा, लेकिन जनज्ञान के सदस्यों को अतिरिक्त मूल्य नहीं देना होगा। प्रेस अंक की तैयारी में व्यस्त है, इसलिए प्रस्तुत अंक में अपेक्षाकृत कम पृष्ठ दिये जा सके हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या हिन्दू साम्प्रदायिक हैं ?

—आनन्दशंकर पंड्या

इन दिनों अनेक मंचों पर और अनेक पत्र-पत्रिकाओं पुस्तकों आदि में साम्प्रदायिकता पर खूब चर्चा हो रही है। विद्वान् लेखक ने इस विषय पर हिन्दू दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

भारत में सांप्रदायिक नफरत व हिंसा की समस्या सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। इसे सुलझाने के सब उपाय असफल हुए हैं। पहले तो उसका सारा दोष विदेशी सरकारों की 'फूट डालो राज्य करो" की नीति पर डाला जाता था पर आजादी के बाद भी हमारी सरकार इस समस्या को हल करने में असफल रही है। इसका कारण यह है कि गांधी, नेहरू और विनोबा की तरह सभी हिन्दू सिर्फ एकतरफा 'सर्वधर्मसमभाव' में विश्वास करते रहे हैं। मुस्लिम लीग जैसी संस्थाओं के कट्टरपंथी नेताओं को हमेशा सौम्य स्वभाव के उन हिन्दू नेताओं को हमेशा सौम्य स्वभाव के उन हिन्दू नेताओं के साथ एक ही तराजू पर तोला गया है, जो बचपन से एक चींटी को मारना भी अधर्म समझते हैं। हिन्दुओं के प्रति इस अन्याय ने ही मुस्लिम नेताओं को अपनी दुस्साहसपूर्ण हिंसा के कार्यों में उत्साहित किया है।

हमारा राष्ट्रीय आदर्श 'सत्यमेव जयते' है पर हम बिल्कुल उल्टा मार्ग ग्रहण कर रहे हैं। उदाहरण-स्वरूप भारत में यदि कोई सत्य बोलता है तो उसका अनादर होता है और वह सांम्प्रदायिक कहलाता है और यदि वह झूठ बोलता है तो उसका राजनैतिक क्षेत्र में आदर होता है और वह सेक्युलर कहलाता है। पर इतिहास बतलाता है कि जो देश झूठ की नींव पर बनता है वह शीघ्र ही विघटित होकर नष्ट हो जाता है। आज भारत में जो भी खराबियाँ उत्पन्न हो गई हैं, वे सिर्फ सत्य के प्रकाशित करने से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूर हो सकती हैं। इस सत्य को छिपाने से सारा देश नष्ट हो जायेगा। फिर इसे कोई भी नहीं बचा सकेगा।

एक ऐसा ही झूठ यह है कि हिन्दू संस्थायें सांप्रदायिक हैं। नीचे लिखे तथ्य इस दोषारोपण का खंडन करते हैं।

हिन्दुओं ने कभी भी अन्य धर्मावलम्बियों के पूजास्थलों, उनकी संस्थाओं व धर्मग्रन्थों को नष्ट नहीं किया यद्यपि उनके हजारों मंदिर, मठ, धार्मिक संस्थायें व धार्मिक ग्रन्थ विधर्मी आक्रमणकारियों द्वारा एक वर्ष तक जलाये जाते रहे। इस तरह दासता के 700 वर्षों में हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार हुए। फिर भी हिन्दू अपने 'सर्वधर्मसमभाव' के आदर्श को आज तक नहीं भूले। सांप्रदायिक कटुता को दूर करने के लिए यद्यपि सैकड़ों धर्मों से कबीर और नानक जैसे सन्तों ने अनेक भावनात्मक व आदर्शवादी बातें कीं पर उससे कोई समस्या हल नहीं हुई।

वेद, गीता और रामायण में लिखित तथा वेदव्यास, शंकराचार्य, महावीर, बुद्ध, गांधी इत्यादि द्वारा प्रचारित 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श के कारण हिन्दुओं ने देश के बटवारे के बाद हिन्दुस्तान को एक हिन्दू राज्य घोषित नहीं किया तथा अल्पसंख्यकों को ऐसे विशेषाधिकार दिये जो हिन्दुओं को भी प्राप्त नहीं है। (पाकिस्तान ने इन सब बातों के विरुद्ध ही कार्य किया।)

मध्य काल मे हिन्दुओं के हजारों मंदिर नष्ट कर दिये गये तथा उन पर मुसलमानों ने कब्जा कर लिया। पर आजादी के बाद भी हिन्दुओं ने उन्हें वापिस मांग कर अपने कानूनी अधिकार का उपयोग नहीं किया। उन्होंने अहमदाबाद, औरंगाबाद, इलाहाबाद जैसे शहरों तथा हजारों सड़कों के मुसलमानी नामों को बदलने की कोशिश नहीं की यद्यपि पाकिस्तान में सभी शहरों व सड़कों के नाम बदल कर मुसलमानी ही कर दिये गये हैं। पचासों मंदिर तोड़ दिये गये हैं। पर हिन्दुओं की इस उदारता व शांतिप्रिय नीति को कायरता समझ कर उनकी एक सर्वोपरि आराध्य भूमि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अयोध्या भी उन्हें वापस नहीं दी जा रही।

गांधी, नेहरू, विनोबा भावे, जयप्रकाश इत्यादि के विचार अत्यन्त उदार व विश्वजनीन थे क्योंकि वे हिन्दू थे। उन्होंने सेक्युलरिज्म का सिर्फ प्रचार ही नहीं किया बल्कि उन्हें मनसा, वाचा, कर्मणा अपने जीवन में उतारा भी।

अपने इन नेताओं के उपदेश मानकर हिन्दुओं ने विश्वास के साथ 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम' के भजन गाये। जब 'हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई' के नारे लगाये गये तब सिर्फ हिन्दुओं ने ही उस पर सच्चाई से अमल किया। अन्य धर्मावलम्बियों ने इसे कायरों का लक्षण मान कर इसकी हंसी उड़ाई। 'हिन्द हिन्दू भाई भाई' ही एक ऐसा नारा है जो उन्होंने कभी नहीं लगाया और यही दुर्भाग्य का कारण रहा है। इस तरह जो उदारता हिन्दुओं ने अपना धर्म मान कर अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति दिखलाई उसे हिन्दुओं की कायरता समझा गया।

महाराष्ट्र जैसे राज्य में जहां मुसलमानों की आबादी 4 प्रतिशत है, एक मुसलमान मुख्य मन्त्री बन सकता है परन्तु जम्मू और कश्मीर में जहाँ 30 प्रतिशत हिन्दू हैं, एक हिन्दू मुख्य मंत्री बनने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारत में बहुत से ऐसे मुसलमानों को राष्ट्रीय सम्मान व अवार्ड मिले हैं तथा सड़कें उनके नाम पर बनाई गई हैं। इस्लाम का प्रसिद्ध विद्वान् केन्टवेल स्मिथ कहता है शायद दुनिया के किसी भी इस्लामी देश में एक मुसलमान इतना स्वतन्त्र नहीं है, जितना वह भारत में है। वह यहाँ ईमानदारी व लगन से अपनी धार्मिक समस्याओं को सुलझाने में लग सकता और निर्भय होकर कुछ भी बोल सकता है अथवा लिख कर छपवा सकता है।

इस्लामी देशों में हिन्दुओं को खुले स्थान में अपने भजन गान व पूजा करने की इजाजत नहीं दी जाती न वे अपने शवों का अग्निदाह कर सकते है। वे अपनी भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते तथा उन्हें सरकारी दफ्तरों में अल्पसंख्यकों के अधिकार के नाम पर नौकरियाँ मिलने में कोई सुविधा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं दी जाती। वे अपने घरों में हिन्दू नेताओं की तसवीरें नहीं लगा सकते। हिन्दू चुनाव में भाग नहीं ले सकते। वे किसी इस्लामी देश के राष्ट्राध्यक्ष गवर्नर, मुख्य न्यायधीश अथवा मंत्री नहीं बन सकते। हिन्दू तब तक व्यापार शुरू नहीं कर सकते जब तक वे किसी मुसलमान को अपने व्यापार में 51 प्रतिशत का हिस्सेदार न बनायें।

इतिहास में हिन्दुओं पर उनके ही देश हिन्दुस्तान में अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा असंख्य अत्याचार किये गये। पाकिस्तान बनने के समय भी उन पर अनेक जघन्य अत्याचार किये गये थे। उन्होंने लगातार विधर्मियों तथा आक्रमणकारियों को क्षमा किया, क्योंकि हिन्दू आत्मत्याग करके भी सांप्रदायिक शांति व सद्भाव बनाये रखना चाहते हैं। संसार के किसी भी देश में बहुसंख्यकों ने अल्पसंख्यकों के लिए इतना आत्मत्याग नहीं किया।

हिन्दू नेता लेखक, कवि और फिल्म बनाने वालों ने भी हमेशा मुसलमानों तथा ईसाइयों के प्रति बहुत आदर दिखलाया है पर उनकी हृदय की विशालता के बदले हिन्दुओं को हमेशा तिरस्कार और गालियां ही मिली हैं। क्या कभी भी किसी ने हिन्दुओं के इस गुण की प्रशंसा की है?

जब किसी हाकी या क्रिकेट के मैच में पाकिस्तानी टीम जीत जाती है तब हिन्दुस्तान के मुसलमान अल्ला हो अकबर चिल्लाते हैं तथा अपने रेडियो को माला पहनाते हैं। उनके घर में आयातुल्ला खुमैनी या सद्दाम हुसैन के चित्र लगे रहते हैं न कि गांधी जी के—यद्यपि गांधी जी ने मुसलमानों की रक्षा करने के लिए अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया।

अतः आज हिन्दू समाज यह अनुभव करने लगा है कि यदि सर्व धर्म समभाव व सेक्युलरिज्म के नाम पर किया हुआ शताब्दियों का हिन्दू समाज का आत्मत्याग व बलिदान इन अल्पसंख्यकों को हिन्दू धर्म व समाज की उदारता के बारे में विश्वास नहीं दिला सका तो फिर इस उदारता का आखिर क्या उपयोग है? धार्मिक सहनशीलता के नाम पर एक बहुत बड़ी कीमत अदा की गई अतः जब हिन्दू संस्कृति पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं तथा हिन्दू का अपनी सहनशीलता व उदारता पर से विश्वास उठ रहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। हिन्दुओं को यह अनुभव होने लगा है कि उन्होंने अल्पसंख्यकों को जितनी अधिक से अधिक सुविधा देने की कोशिश की, अल्पसंख्यक लोग उतने ही आक्रामक बनकर अधिकाधिक अधिकार मांगनेलगे हैं। वे जिस मकान में मेहमान की तरह रखे गये थे उसके मालिक बनना चाहते हैं तथा असली मालिक को निकाल बाहर करना चाहते हैं।

कट्टर पंथी हिन्दू

मुसलमानों के इस देश पर आक्रमण से पहले हिन्दुओं को यह मालूम ही नहीं था कि धर्मान्धता अथवा साम्प्रदायिकता क्या होती है और एक धर्म के अनुयायी अन्य धर्मावलम्बियों के पूजास्थल नष्ट करना भी अपना धर्म मान सकते हैं। आज यदि कुछ हिन्दुओं के कार्य अथवा भाषण साम्प्रदायिक हैं तो वे कट्टरपंथी मुसलमानों के निरन्तर ऐसे कार्यों व भाषणों के प्रतिक्रिया-स्वरूप ही हैं। आखिर सहनशीलता की भी कोई सीमा होती है।

विश्व के विद्वानों ने यह साबित कर दिया है कि हिन्दू धर्म ही विश्व के धर्मों की जननी है और इसने हमेशा अन्य धर्मों को भारत में फलने फूलने में सहायता दी है क्योंकि हिन्दू धर्म 'सर्व धर्म समभाव' तथा सब धर्मों के सह-अस्तित्व की नींव पर ही खड़ा हुआ है, हिन्दुओं का इसमें कट्टर विश्वास है और यही हिन्दू कट्टरवादिता है। उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म व समाज सेक्युलरिज्म का मूर्तिमान् स्वरूप है पर उसकी उदारता का हमेशा उसी के विरुद्ध इस्तेमाल हुआ है।

इस तरह के उदार धर्म व समाज को साम्प्रदायिक कहना दुनिया का सबसे बड़ा झूठ है। यह पाखण्ड की पराकाष्ठा है और एक महान् संस्कृति को नष्ट करने का संगठित प्रयत्न है। आखिरकार इन पाश्चात्य विचार वाले लोगों को किसने यह अधिकार दिया है कि वे इस झूठ का प्रचार करें?

यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि जब मुसलमान, ईसाई, यहूदी इत्यादि विश्व के सब समाज दिन और रात अपने समाज के उत्थान के लिए काम करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं तब पाश्चात्य विचार वाले हिन्दू अपने समाज की रक्षा व नैतिक उत्थान करने वालों को साम्प्रदायिक कहकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनका अनादर करके हिन्दू समाज की नींव खोदना चाहते हैं। वास्तव में यह एक गलत भावना है। यदि अन्य समाज को नुकसान पहुंचाये बिना कोई व्यक्ति या संस्था अपने धर्म व समाज का उत्थान करती है तो वह कदापि साम्प्रदायिक नहीं।

यह स्पष्ट रूप में समझ लिया जाना चाहिए कि देश में साम्प्रदायिकता की जड़ तथा राष्ट्र में विघटनकारी शक्तियों के बढ़ने का प्रथम कारण है, खोखले आदर्शवाद व झूठे नकली सेक्युलरिज्म के नाम पर अल्पसंख्यकों का अन्धाधुंध तुष्टीकरण तथा दूसरा कारण है इस झूठ का प्रचार कि जो हिन्दू संस्थायें अपने समाज की सेवा करती हैं, वे साम्प्रदायिक है। झूठे प्रचार के आधार पर किसी देश में भावनात्मक एकता उत्पन्न नहीं की जा सकती। जब तक इन दो दोषों का परिवर्तन नहीं होता तब तक देश की साम्प्रदायिक व राजनैतिक परिस्थिति बिगड़ती ही जायेगी। इसे कोई रोक न सकेगा।

आज सेक्युलरिज्म का दुरुपयोग

श्री राजगोपालाचारी ने कहा था कि सेक्युलरिज्म एक अत्यन्त गलत समझा हुआ शब्द है अल्पसंख्यकों के साथ न्याय करने का अर्थ यह नहीं कि बहुसंख्यकों के साथ अन्याय किया जाये··· (स्वराज्य वार्षिक अंक 1971)।

हिन्दुओं का, जो भारत की आजादी के 85 प्रतिशत और समस्त विश्व की आबादी के 15 प्रतिशत है, यह पूरा लोकतांत्रिक व संवैधानिक अधिकार है कि वे अपने सांस्कृतिक व नैतिक अधिकारों की रक्षा करें हिन्दुओं को यह समझना चाहिए कि जब कि विश्व में मुसलमानों व ईसाइयों के पचासों देश हैं, उनकी सिर्फ एक ही मातृभूमि हिन्दुस्तान है। अतः उसकी रक्षा करने का उन्हें पूर्ण अधिकार है पर आज सेक्युलरिज्म के नाम पर हिन्दुओं के अधिकारों का हनन हो रहा है, जबकि अल्पसंख्यक उसके नाम से अधिक से अधिक लाभ उठाना अपना अधिकार समझते हैं।

बाबरी मस्जिद पर दिये मुस्लिम नेताओं के भाषण अत्यन्त आपत्तिजनक हैं। विश्व हिन्दू परिषद् जैसी संस्थाओं के अहिंसक नेताओं द्वारा दिये गए भाषणों को उनके समकक्ष रखकर दोनों को एक ही तराजू पर तोलना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झूठी व शर्मनाक बात है। प्रसिद्ध लेखक श्री सीताराम गोयल के अनुसार हिन्दुओं को उन्हीं के देश में साम्प्रदायिक कहना दुनिया का नौवां आश्चर्य है।

आज मुस्लिम नेता यह चिल्लाने लगे हैं कि वे आजादी के 40 वर्षों के बाद भी अपनी गरीबी दूर नहीं कर सके। पर इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मुसलमान स्वयं ही अपने पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार हैं। वे अपना पिछड़ापन आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी बुद्धि व योग्यता बढ़ा कर तथा हिन्दुओं के साथ झगड़ा करने की बजाय प्रेम के साथ रह कर ही दूर कर सकते हैं।

दुर्भाग्य से उनके नेता भी अपने स्वार्थवश उन्हें झूठ-मूठ डराते रहते हैं कि उन्हें हिन्दू समाज से खतरा है जिससे आम मुसलमान उत्तेजित रहता है। अतः प्रेस तथा सरकार को चाहिए कि वे इस सत्य का कि हिन्दू समाज विश्व में सब से उदार है, उदाहरण सहित प्रचार करें। यही आपसी सम्बन्ध सुधारने का एक मात्र मार्ग बचा है।

महात्मा गांधी यह जानते थे कि देश में नागरिकों की स्वतन्त्रता, लोकतंत्र, समाजवाद व सर्वधर्म समभाव तभी तक सुरक्षित रह सकता है, जब तक हिन्दुस्तान में हिन्दू धर्म सुरक्षित है। अतः गांधी जी हमेशा रामराज्य की बात करते थे। गांधी जी कहते थे कि हिन्दू धर्म सब धर्मों व सम्प्रदायों के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है और उनके द्वारा वह समस्त विश्व का कल्याण करना चाहता है। अतः हिन्दू धर्म मानव धर्म के रूप में एक अत्यन्त बहुमूल्य धरोहर है, जिसकी विश्व के समस्त लोगों को रक्षा करनी चाहिए। यदि आज गांधी जी जीवित होते तो वे अपनी पिछली भूलों को स्वीकार करके हिन्दू समाज व धर्म के उत्थान के लिए अवश्य कार्य करते चाहे उन्हें कुछ स्वार्थ हित वाले उनके इस कार्य के लिए साम्प्रदायिक ही क्यों न कहते?

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सफलता अवश्य आपके कदम चूमेगी

आदरणीया बहनजी, सादर नमस्ते ।

मैंने चार अगस्त को आपकी सेवा में एक सौ रुपये का मनीआर्डर भेजा है ।

बहनजी, देश और धर्म की रक्षा में कष्ट तो आते ही हैं । लेकिन कष्टों की चिन्ता न करते हुए निःस्वार्थ भाव से किया हुआ कर्म अवश्य सफलता देता है । आप बालवीर हकीकतराय, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों के अमर बलिदान को स्मरण करके अपना कार्य उत्साहपूर्वक जारी रखें । सफलता अवश्य आपके कदम चूमेगी ।

आपका भाई, नारायण प्रसाद, फरीदाबाद

वेदप्रचार में सहयोग दें

परमादरणीया बहनजी, सादर नमस्ते ।

मैं नियमित रूप से जनज्ञान पढ़ता हूं । धार्मिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विषयों पर इसमें प्रकाशित सामग्री इतनी अच्छी होती है कि इसे बार-बार पढ़ने को मन करता है ।

जनज्ञान पत्रिका और दयानन्द संस्थान हिन्दुत्व और राष्ट्र के सजग प्रहरी हैं । वेदों का सन्देश विश्व शान्ति का सन्देश है । दयानन्द संस्थान वेदों का प्रचार कर रहा है । इस कार्य में सबका सहयोग मिलना चाहिए ।

—रवीन्द्र सिंह, गोंडा

मुझे आपकी पत्रिका से प्रेरणा मिली

महोदय, नमस्ते ।

मेने आपकी पत्रिका जनज्ञान पढ़ी । पढ़कर लगा कि हिन्दुओं की आवाज उठाने वाली वाली भी कोई पत्रिका देश में प्रकाशित होती है । अधिकतर अन्य पत्र पत्रिकायें तो धर्म निरपेक्षता की वकालत करती हैं । आपकी पत्रिका पढ़कर मुझे उत्साह मिला—प्रेरणा मिली । मैं आश्वस्त हुआ कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
हिन्दुओं की रक्षा के लिए भी कोई मैदान में निकला है। मुझे आपकी पत्रिका इतनी अच्छी लगी कि मेरा इरादा इसका आजीवन सदस्य बनने का है।

सुखविन्दर सिंह
लोहगढ़ (जिला सिरसा)

जनज्ञान अपने नाम को सार्थक कर रहा है

महोदय,

आपका उद्देश्य महान् है। जनज्ञान वस्तुत: जन-जन को ज्ञान प्रदान करता है। यह पत्रिका प्रत्येक भारतीय के पढ़ने योग्य है। यह देश की सही स्थिति प्रस्तुत करती है। संक्षेप में यह अपने नाम को सार्थक कर रही है।

मेसरा (रांची) —रामनारायण महता

आप वीरांगना हैं

आपकी भेजी राखी मिली। मैंने उसे बांधना अपना सौभाग्य समझकर रक्षा बन्धन के दिन इसे अपनी कलाई पर धारण किया। मेरा संकल्प है कि मैं तन-मन-धन से आपकी रक्षा करूंगा। वस्तुत: आज देश में आप एक सच्ची लक्ष्मी बाई, दुर्गावती सदृश वीरांगना हैं। चरण स्पर्श के साथ आप को बार-बार नमस्ते।

—श्याममुरारी आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज शिकरना (अलीगढ़)

मैं अपने आप को अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं

आदरणीया बहन जी, सादर सप्रेम नमस्ते।

आपकी भेजी राखी और पत्र मिले। इसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आपके सहज स्नेह को पाकर आज मैं अपने आपको अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। स्नेह रसन्वित राखी के धागे जहां एक ओर भाई के प्रति बहन के असीम अनुराग और ममत्व को प्रकट करते हैं, वहीं भाई को बहन की रक्षा हेतु सर्वस्व त्याग की प्रेरणा भी देते हैं। आपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस बात को असत्य सिद्ध कर दिया है कि नारी अबला है। हमें आपके साहस और शौर्य पर गर्व है। हमें आपके कर्मठ जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और आप द्वारा प्रारम्भ किये गये नये धर्म प्रचार यज्ञ में सक्रिय सहयोग करना चाहिए।

मेरा आदर्श है—

या तो कह दो इन छन्दों में जान नहीं है,
या कविता की हुई तुम्हें पहचान नहीं है।
मेरी वाणी है पुकार जलते भारत की,
हास्य और शृंगार रसों की तान नहीं है॥

आपका अपना भाई
रूपकिशोर गुप्त
बहजोई (मुरादाबाद)

आप लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं

पूज्या बहन जी,

सादर चरण स्पर्श।

आप लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। वास्तव में आप वर्तमान परिवेश में अपनी वाणी तथा लेखनी से विधर्मियों द्वारा किये जा रहे कुचक्रों का साहसपूर्ण सामना करती हुई निर्बाध गति से लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। भारतीय जनता अब यह अनुभव करने लगी है कि उसका सच्चा पथप्रदर्शक तथा हिन्दू धर्म का रक्षक आप के सिवा अन्य कोई नहीं। आप इस युद्ध में अपने को अकेली अनुभव नहीं करेंगी। आप के पीछे करोड़ों लोग हैं, जो समय आने पर अपनी शूरता दिखला देंगे। हम सभी हिन्दू यह प्रतिज्ञा करें कि हिन्दू धर्म तथा आप की रक्षा सदृश यज्ञ में अपने प्राणों की भी आहुति देने में सहर्ष तैयार रहेंगे। साथ ही मैं भारतीय हिन्दू जनता तथा जनज्ञान के पाठक बन्धुओं से यह करबद्ध प्रार्थना करना अपना कर्तव्य समझता हूं कि आप सभी बहन राकेश रानी को निराधार आरोपों से मुक्त घोषित कराने हेतु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यथाशक्ति धन राशि समय-समय पर भेजने की कृपा करेंगे क्योंकि को
भी काम धन के बिना नहीं होता।

—ध्रुवकुमार ला
आमड़ा पाड़ा, साहब गंज (बिहार)

परमात्मा आपको दीर्घायु प्रदान करे

आदरणीय बहन जी, सादर प्रणाम।

परमात्मा आपको दीर्घायु प्रदान करे।

देश की रक्षा के लिए आपका बलिदान प्रशंसनीय है। आप जैसी देवियों ने ही देश का उद्धार किया है। आपके प्रेरणादायक प्रकाशनों से प्रेरणा लेकर देश अंगड़ाई लेगा और उठ खड़ा होगा। मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह आपको दीर्घयु प्रदान करे।

—सहदेव प्रसाद सिं
शोभनाथपुर / भागलपुर

आर्यसमाज विनय नगर का उत्सव

नई दिल्ली। आर्यसमाज विनय नगर का वार्षिकोत्सव सोमवार 1 सितम्बर से रविवार 20 सितम्बर तक सरोजिनी नगर मार्किट पार्क में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। प्रातः 7 से 8-30 बजे तक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है। रात्रि 8-30 से 9-30 बजे तक वेद कथा होगी कथा से पूव भजन होंगे।

19 सितम्बर को दोपहर 2-30 बजे आर्यसमाज सफदरगंज एन्कलेव से भव्य शोभा यात्रा प्रारम्भ होगी।

20 सितम्बर को प्रातः बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति और 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की आवश्यकता त्यागी मंत्री, मिली-जुली सरकार

—सीताचरण दीक्षित

प्रस्तुत लेख बीस वर्ष पूर्व लिखा गया था। पाठक इसे इसी परिप्रेक्ष्य में पढ़ें। लेखक महोदय दैनिक हिन्दुस्तान के भूतपूर्व सम्पादक हैं।

आज देश में राष्ट्रीय चारित्र्य की जो कमी दिखलाई पड़ती है और असंतोष तथा संघर्ष का जो वातावरण उन्नति के प्रयत्नों में बाधक हो रहा है, उसे दूर करने के लिए शासन के वर्तमान ढंग को बदल कर कोई नया ढंग अपनाना आवश्यक आवश्यक प्रतीत होता है। वह नया ढंग क्या हो, इस सम्बन्ध में एक मत नहीं हो सकता। कट्टरता से भी काम नहीं लिया जा सकता।

सब बुराइयों का मुख्य और बुनियादी कारण जनता में नव-निर्माण के प्रति पर्याप्त उत्साह का अभाव है। यदि जनता सारी बुराइयों को मिटा कर कम से कम समय में अधिक-से-अधिक नव-निर्माण कर लेने पर तुल जाये, तो सब समस्याएं उतने ही कम समय में हल हो सकती हैं। उत्साह फूंकना भारत में अब तक बड़े-बड़े नेताओं से ही संभव हुआ है। ऐसे नेता सदा निःस्वार्थ सेवा, तप और त्याग से उभरे हैं। इस समय सर्वत्र पर-सेवा का स्थान आत्मसेवा ने, तप का अनर्जित सुख ने और त्याग का भोग ने ले लिया है। ऐसी स्थिति में बडे और सार्वलौकिक नेताओं का अभाव आश्चर्य की बात नहीं है। तब जनता में उत्साह फूंकने का काम केवल सरकार के लिए संभव रह जाता है। सरकार भी उसे तभी कर सकती है, जब उसे सब समझदार लोगों का बल प्राप्त हो। जनता जिन लोगों को अपना प्रतिनिधि चुनती है उन्हें समझदार तो मानती ही हैं, उनका उस पर दूसरों से अधिक प्रभाव भी होता है। अतएव सरकार को, अर्थात् जो लोग सत्ता का संचालन करते हैं उन्हें, सब प्रतिनिधियों का बल मिले और सबका बल मिला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर सरकार का बल बड़े-बड़े नेताओं के बल के बराबर या उससे भी अधिक हो जाये, तो वह सरलता से देश की जनता को उत्साहित कर सकती है।

वह व्यक्ति मेरा नेता कैसे हो सकता है, जो मुझे चिथड़ों में लिपटा हुआ देख कर भी दिन में चार-बार बार कपड़े बदलता है

सत्ताधारियों को यह बल कैसे मिले ? जनता जिन लोगों को चुनकर निर्वाचित राज्य-संस्थाओं में भेजती है उनके अपने कुछ निश्चित विचार होते हैं और उन्हीं के कारण जनता उन्हें चुनती है। ये चुने हुए प्रतिनिधि विभिन्न दलों में बंटे हुए होते हैं, जिनके अपने कुछ विशेष लक्ष्य और उन्हें प्राप्त करने के विशेष तरीके होते हैं। सबके तरीके अलग-अलग हों तो कैसे वे किसी एक ही निश्चित कार्य में, जो उनकी नीति के अनुकूल हो या न हो, अपना योग प्रदान करें। प्रश्न बहुत कठिन है, पर असाध्य नहीं है।

चीन और पाकिस्तान के युद्ध के समय हमने देखा कि सारा देश एक स्वर से बोल उठा था—कितना भी बलिदान क्यों न करना पड़े, शत्रु को सबक सिखाएंगे ही। लोगों ने सारे देश पर संकट महसूस किया और सब अपने मतभेद भुला कर कंधे से कंधा मिला कर खड़े हो गए।

यदि एक अस्थायी संकट के समय सब लोग मिलकर खड़े हो सकते हैं तो क्या बात है कि पिछड़ेपन, भूख, बीमारियों, सार्वजनिक अभाव का जो संकट निरंतर हमारी जड़ें खोखली करता रहता है उसके विरुद्ध हम मिल कर खड़े नहीं हो सकते ?

सारा झगड़ा सत्ता का है

झगड़ा सत्ता का है, भोग का है। बात तीखी है, पर है सत्य। यदि सत्ताधारियों के लिए भोग वर्जित हो जाये, सत्ता और भोग को अलग-अलग कर दिया जाये, तो जो लोग भोग की आकांक्षा से राजनीति में आते हैं वे आयेंगे। भोग के अवसर से विहीन सत्ता तपस्या बन जायेगी। तब सत्ताधारी पूजा जाने लगेगा। उसकी बात मानी जायेगी। अथवा उसके लिए सत्ता त्याग देना भी कठिन न होगा। इस दृष्टि से सत्ताधारियों का निर्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने के लिए यह आवश्यक है कि सत्ता से भोग के अवसर निकाल दिये जायें। सत्ताधारी की पहली कसौटी यह होनी चाहिए कि वह कितना त्यागी है, कितना सत्यनिष्ठ है, कितना परिश्रमी है, कितना कुशल है, कितनी सादगी से रहता है और कितना कम वेतन लेकर अपने और परिवार पर कितना कम खर्च करता है। सत्ताधारी बनने के बाद किसी व्यक्ति का रहन-सहन उसके पहले के रहन-सहन से ऊंचा हो जाये तो वह श्रद्धा का पात्र कैसे बन सकता है?

यह स्थिति पैदा हो जाने पर नेता-निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा और पारस्परिक झगड़ों तथा अनावश्यक विवाद, आरोप-प्रत्यारोप आदि का अन्त निकट आ जायेगा। ये नेता आपस में एक-दूसरे का आदर करेंगे और जनता पर इनका माता-पिता के समान प्रभाव पड़ेगा। वह व्यक्ति मेरा नेता कैसे हो सकता है जो मुझे भूखा देखकर भी खुद मोहन-भोग का आनन्द लेता हो, जो मुझे चिथड़ों में लिपटा हुआ देखकर भी दिन में चार बार किमती कपड़े बदलता हो या जो मुझे ठंडे में ठिठुरता हुआ पटरी पर पड़ा देख कर खुद वातानुकुलित महल में आराम करता हो?

इस प्रकार के नेता अपने साथी प्रतिनिधियों की बात ध्यान से सुनेंगे और उसे पूर्ण करने का यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। साथी प्रतिनिधि भी उन से अपनी बातें कहने में उचित, अनुचित, व्यावहारिक-अव्यावहारिक आदि का खयाल रखेंगे। जनता की बात सुन कर भी वे उसे टाल नहीं देंगे। उस पर सच्चे दिल से और खुले मन से विचार करेंगे और जहां तक हो सकेगा जनता के दुःख दूर करने का प्रयत्न करेंगे। यह सब अपने-आप में जनता को प्रोत्साहित करने के लिए पर्याप्त होगा। परन्तु पूरे परिणाम के लिए इस से आगे भी बहुत कुछ करना आवश्यक है।

देश के शासन और नव-निर्माण की पूरी जिम्मेदारी देश के अल्पमत पर चुना हुआ कोई दल नैतिक दृष्टि से अपने सिर पर कैसे ले सकता है? यदि 60-70 प्रतिशत मत किसी दल को प्राप्त न हुए हों फिर भी सरकार बनाने योग्य बहुमत उसे प्राप्त हो गया हो, तो वह अकेले सरकार बनाने का आग्रह नहीं रख सकता। वैसा करने से वह भिन्न दृष्टि रखने वाले दलों का सह-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग प्राप्त न कर सकेगा और जनता पर उसका नैतिक प्रभाव भी मर्यादित रहेगा। ऐसी स्थिति में अच्छा यह होगा कि वह दूसरे दलों को मिलाकर मिली-जुली सरकार बनाये। यदि सब दलों को मिलाकर सरकार होगी—राज्यों में पूरे राज्य की सरकार होगी। ऐसी मिली-जुली सरकार जो काम कर सकेगी और उसे जनता का जो सहयोग प्राप्त होगा उसकी कल्पना भी सुखद है।

मिली-जुली सरकार बनाना कठिन तो है, लेकिन —....

मिली-जुली सरकार बनाने के सम्बंध में सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि जब विभिन्न दलों की विचारधाराओं में मूलभूत अन्तर है, तब वे मिलकर किसी एक कार्य को कर ही कैसे सकते हैं। उदाहरण के लिए, कांग्रेस धर्म-निरपेक्ष राज्य की प्रवर्त्तक है, और जनसंघ हिन्दू राज्य का समर्थक है, इसी प्रकार कांग्रेस लोकतन्त्रात्मक समाजवाद की स्थापना का प्रयत्न कर रही है और स्वतन्त्र दल पूंजीवाद को बढ़ावा देना चाहता है। फिर ये दल मिल कर काम कैसे करें? बात सही है और ऐसी हालत में मिली-जुली सरकार बनाना बहुत कठिन काम है। परन्तु क्या यह असंभव है? रूस और अमेरिका में सहयोग हो सकता है तो क्या हमारे दो दलों में सहयोग नहीं हो सकता? हम स्वयं रूस, अमेरिका और संयुक्त अरब गणराज्य के एक साथ मित्र रह सकते हैं तो क्या अपने ही देश के लोगों के साथ मित्रता और सहयोग नहीं साध सकते? आखिर उनके मन में भी तो देश की भलाई ही है। वे देशद्रोही तो नहीं हैं। यदि हमें देश की भलाई को ही सामने रख कर अपने कुछ आग्रहों को थोड़ा शिथिल करना पड़े तो हम क्यों न करें? न करने से भी तो वांछित परिणाम नहीं हो रहा है।

यदि भारत के एक से अधिक दल एक सर्वसम्पन्न कार्यक्रम निश्चित कर लें और मतभेद के प्रश्नों को प्रतिनिधियों के निर्बाध मत से तय करने लगें, तो मिली-जुली सरकार बनाना अवश्य संभव है। ऐसी सरकार से देश का जो लाभ होगा, वह एक-दलीय सरकार से किसी भी हालत में नहीं हो सकता।

राजनीति के घात-प्रतिघात में जनता को संकट से बचाने का यही सबसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छा उपाय है। धनी और विकसित देशों के लोकतन्त्र से हमें अपनी तुलना नहीं करनी चाहिए—उनकी रीढ़ बकी हो चुकी है। कम्युनिष्ट देशों से भी तुलना करना उचित न होगा, क्योंकि हमारे समाजवाद का आदर्श लोकतांत्रिक है, तानाशाही नहीं। भारत दार्शनिकों और विचारकों के लिए प्रसिद्ध है। उसके लिए अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपना तरीका आप खोज निकालना असाध्य न होगा। अपने तरीकों में संशोधन करना भी उसके लिए कठिन नहीं है।

★

क्या आप जानते हैं ?

प्रश्न

1. वह कौन-सी मछली है जो पानी में तैरती है, जमीन पर चलती है और हवा में भी उड़ती है ?
2 संसार की सबसे कीमती खनिज धातु कौन-सी है ?
3. ताजमहल किस तारीख को बनकर तैयार हुआ था ?
4. वह कौन सा फल है जिसमें सभी प्रकार के विटामिन पाए जाते हैं ?
5. भारत में बने प्रथम लड़ाकू विमान का क्या नाम है ?
6 विश्व में कौन-सा देश है, जहां शोक दिवस पर राष्ट्रीय झंडा नहीं झुकाया जाता।
7. चार दिनों का सप्ताह कहां होता है ?
8. विश्व में किस देश में मच्छर नहीं है ?
9. विश्व का कौन-सा देश है, जहां सांप नहीं हैं ?
10. खट्टा शहद कहां मिलता है ?

उत्तर—

(1) गरनाई मछली (2) रेडियम (3) 7 नवम्बर 1945 (4) पका हुआ पपीता (5) नैट (6) सऊदी अरब (7) तिब्बत (8) फ्रांस (9) हवाई द्वीप (10) ब्राजिल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों को जानिये—समझिये :

– पी. वी. नरसिंह राव

नई दिल्ली। मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने वैदिक संस्कृति के उन मूल्यों को अपनाने पर बल दिया है, जिनसे वर्तमान समस्याओं के समाधान में मदद मिले। उन्होंने कहा कि वेदों में निहित ज्ञान यदि हमारी शिक्षा नीति के बुनियादी उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो तो शिक्षाविदों को उसे अपनाने में संकोच नहीं होना चाहिए। वास्तव में वेद विद्या जनमानस को प्रेरित करने का बहुत असरदार जरिया है।

श्री राव यहां भारत सरकार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान का समारम्भ कर रहे थे! उन्होंने घोषणा की कि सातवीं योजना में वैदिक अनुसंधान पर डेढ़ करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। साथ ही उन्होंने आशा व्यक्त की कि औद्योगिक और निजी प्रतिष्ठानों का उदार सहयोग भी इस कार्य के लिए सुलभ होगा। श्री राव ने कहा कि नव स्थापित प्रतिष्ठान में सरकार का न कोई हस्क्षेप होगा और न बंधन। सरकार इस पर उतना ही नियंत्रण रखेगी, जितना इसके संचालन के हित में जरूरी है।

उन्होंने कहा कि वेदों को पढ़े बिना उसका बखान करने वाले लोग वास्तव में वैदिक संस्कृति का अहित कर रहे हैं। वेदों के बारे में कुछ बोलने से पहले उन्हें जाननी-समझना जरूरी है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की कल्पना का वैदिक अनुसंधान एक मौलिक कार्यक्रम है, जिसकी अपनी विशेषता और अनन्यता होगी। उन्होंने विद्वानों को सुझाव दिया कि वे वेद विद्या और उसमें निहित ज्ञान को अपनी संस्कृति और अपनी समझ के अनुरूप मौलिक रूप से सुलभ करें। यह कार्य पश्चिमी विद्वानों के अध्ययन से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने श्रेष्ठता की दृष्टि की दृष्टि से अनेक भावनाओं और तत्त्वों का नामनिर्देश करते हुए कहा है कि "मैं वेदों में सामवेद हूं।" सामवेद में उपासना का विषय है। इसके मन्त्र गाकर बोले जाते हैं।

अब तक सामवेद के अनेक भाष्य हो चुके हैं। दयानन्द संस्थान ने भी चारों वेदों के भाषा भाष्य में आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री द्वारा कृत सामवेद का भाष्य प्रकाशित किया है। अलग से भी पंडित विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड कृत सामवेद का भाष्य दयानन्द संस्थान से प्रकाशित हुआ।

अब जनज्ञान मासिक के अगले अंक में मेरठ की उदीयमान हिन्दी कवयित्री और रिसर्च स्कालर श्रीमती मृदुलकीर्त्ति कृत सामवेद का हिन्दी पद्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है।

मृदुलकीर्त्ति जी ने यह रचना प्रभु को समर्पित की है। देखिये, कैसे आर्त्तस्वर में वे पुकार रही हैं—

निष्काम कर्म का मर्म यही, ज्ञातव्य रहे प्रभु सदा-सदा।
मुझे हाथ पकड़ कर ले चलना, हे प्रभुवर! जब भी हो विपदा॥

सारा अनुवाद ऐसी ही उदात्त और मर्मस्पर्शी भावनाओं से परिपूर्ण है।

अगला अंक दीपावली विशेषांक होगा। यह अंक लेना न भूलें। यदि आप 501 रुपया देकर भेंट कर आजीवन सदस्य बन जायें तो आप बार बार चन्दा भेजने की असुविधा से बच जायेंगे।

शिक्षा संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा साही ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार वेद है। चारों वेद मानव जीवन की उन्नति की चार सीढ़ियां हैं।

स्वामी दयानन्द और महर्षि अरविंद को स्मरण करते हुए श्रीमती साही ने कहा कि आधुनिक काल में वैदिक ज्ञान को सर्वसुलभ बनाने में इन दो महापुरुषों का विशिष्ट योगदान रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाधीनता संग्राम में भारतीय प्रेस का योगदान

—विपिनचन्द्र

ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने का माहौल तैयार करने में भारतीय प्रेस, खासकर भाषाई अखबारों ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उस समय की सबसे बड़ी जरूरत थी कि आम जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित किया जाये और उसे राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा जाए। अखबारों ने यह काम बखूबी किया और सही बात तो यह है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जनाधार अखबारों के जरिये ही मिल सका था। लेकिन भारतीय प्रेस के लिए काम आसान नहीं था। प्रेस का गला घोंटने के लिए ब्रिटिश सरकार ने ढेरों दमनकारी कानून बना रखे थे। भारतीय प्रेस ने अपने अत्यन्त सीमित साधनों और तंगहाली के बावजूद किस अदम्य साहस के साथ औपनिवेशिक दमन चक्र के खिलाफ लड़ाई लड़ी और बाल गंगाधर तिलक की अगुआई में यह लड़ाई कैसे आगे बढ़ी, प्रस्तुत है इस संदर्भ में तथ्यपूर्ण लेख। —सम्पादक

19वीं सदी की शुरुआत के साथ ही भारत में चेतना की लहरें हिलोर लेने लगी थीं। मानव अधिकारों और खासकर प्रेस की आजादी के सवाल को तीव्रता के साथ महसूस किया जाने लगा था। प्रेस पर तरह-तरह से दबाव डालने की ब्रिटिश सरकार की कोशिशों का विरोध भी अंगड़ाई लेने लग गया था। 824 में प्रेस पर अंकुश लगाने वाले एक कानून के खिलाफ राजा राममोहनराय ने सुप्रीम कोर्ट को ज्ञापन भेजा था। इसमें उन्होंने लिखा 'हर अच्छे शासक को इस बात की फिक्र होनी ही चाहिए कि वह लोगों को ऐसे साधन उपलब्ध कराये, जिनके जरिये उन समस्याओं और मामलों की सूचना शासन को जल्दी से जल्दी मिल सके, जिन समस्याओं के हल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में शासन के हस्तक्षेप की जरूरत है। इस महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह जरूरी है कि प्रेस को अप्रतिबंधित स्वतंत्रता दी जाये।'

1870 से 1918 तक का समय ऐसा था, जब चेतना और जागरूकता की लहर फैलनी तो शुरू हो गई थी, लेकिन सामूहिक भागीदारी वाले राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप पूरी तरह नहीं उभर सका था। जनता को मुद्दों और सवालों से जोड़ने के लिए उस समय न तो छोटी-बड़ी सभाओं का सिलसिला ही शुरू हो सका था और न ही ऐसा कोई राजनैतिक कार्यक्रम सामने आ सका था, जिसमें जनता की भागीदारी हो सकती और जिसे जन-संघर्ष का रूप दिया जा सकता। उस समय सब से पहला राजनैतिक कार्यक्रम यही था कि जनता का राजनीतिकरण किया जाये, राजनैतिक चेतना का प्रचार-प्रसार किया जाये, अपने अधिकारों के प्रति लोगों को शिक्षित किया जाये और राष्ट्रीय विचारधारा का प्रसार किया जाये। चूंकि उस समय भारतीय जनता के पास न कोई संगठन था और न कोई संगठित राजनैतिक कार्यक्रम सामने था, इसलिए प्रेस ही उस समय एक ऐसा हथियार था, जिसके जरिये जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा सकता था और एक राष्ट्रीय विचारधारा का बिरवा रोपा जा सकता था।

यहां तक कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी अपने ज्यादातर कामकाज के लिए प्रेस पर निर्भर थी। राजनैतिक कार्यक्रम चलाने के लिए उस समय तक कांग्रेस का कोई संगठनात्मक आधार नहीं तैयार हो पाया था। इसके प्रस्तावों और कार्रवाइयों को भी जनता के बीच अखबार ही पहुंचाते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन की बुनियाद रखने में अखबारों और पत्रकारो की कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, इसका अन्दाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना जिन लोगों ने की, उनमें से करीब एक-तिहाई पत्रकार थे।

ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष के इस शुरुआती दौर में कई निडर अखबारों ने जन्म लिया। जी. सुब्रह्मण्यम् अय्यर के संपादन में 'द हिन्दू' और 'स्वदेशमित्रन्' बालगंगाधर तीलक के सम्पादन में 'केसरी' और 'मराठा', सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के संपादन में 'बंगाली', शिशिर कुमार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और मोतीलाल घोष के संपादन में 'अमृतबाजार पत्रिका', गोपलकृष्ण गोखले के संपादन में 'सुधारक', एन. एन. सेन के संपादन में 'इण्डियन मिरर', दादाभाई नौरोजी के संपादन में 'हिंदुस्तानी' और 'एडवोकेट ऑफ इंडिया' और पंजाब में 'दि ट्रिब्यून' व 'अखबार-ए-आम' तथा बंगाल में 'इन्दुप्रकाश', 'वंग-निवासी' और 'साधारणी' जैसे अखबार अस्तित्व में आये। दरअसल, उस समय भारत में शायद ही कोई ऐसा बड़ा राजनैतिक नेता रहा हो, जो खुद अखबार न निकालता हो या फिर किसी रूप में अखबार से जुड़ा न रहा हो।

अखबारों का असर सिर्फ पढ़े-लिखे लोगों के बीच ही नहीं था और न ही वे शहरों और बड़े कस्बों तक सीमित थे बल्कि इनकी पहुँच दूर-दराज के गाँवों तक थी। हालांकि गांवों में कोई इक्का-दुक्का शिक्षित व्यक्ति ही होता था, पर अखबार पढ़ कर वह उसकी चर्चा दसियों और लोगों से करता था। फिर धीरे-धीरे पूरे देश में पुस्तकालयों और वाचनालयों की स्थापना की लहर चल पड़ी। अक्सर छोटी जगहों पर 'पुस्तकालय' या 'वाचनालय' में सिर्फ एक ही अखबार आया करता था। ऐसे पुस्तकालयों में फर्नीचर के नाम पर एक मेज, एक या दो बेंचे या चारपाई पड़ी होती थी। अखबारों में लिखे-छपे एक-एक शब्द को लोग बहुत ध्यान से पढ़ते थे या किसी से पढ़वा कर सुनते थे और फिर उस पर चर्चा करते थे। इस तरह, उस समय के अखबार लोगों को सिर्फ राजनैतिक रूप से शिक्षित ही नहीं कर रहे थे, बल्कि वे उन्हें सामूहिक भागीदारी भी सिखा रहे थे। अखबारों में छपी सामग्री को लेकर होनेवाली चर्चायें लोगों को सवालों और मुद्दों से जोड़ती थी और उन्हें राजनैतिक भागीदारी का अहसास कराती थी।

अखबार छपना उस जमाने में व्यवसाय नहीं था और न ही उससे किसी तरह का आर्थिक मुनाफा कमाने की गुंजाइश थी और न ही ऐसी कोई नीयत। अखबारनवीसी तब पेशा नहीं थी। देश या समाज की सेवा के लिए अखबार छापे जाते थे। समाजसेवा से जुड़े लोग अखबारों को अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार चंदा देते थे। पत्रकारिता में आमतौर पर वही लोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाते थे, जो राजनैतिक कार्य कर्ता होते थे और हर तरह के त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहते थे। हालांकि अखबार लगतार चलते रहने के लिए संपादक को आमतौर पर आर्थिक खस्ताहाली और फाकाकशी के दौर से गुजरना पड़ता था, लेकिन अखबार शुरू करने के लिए बहुत ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं होती थी। मिसाल के तौर पर 1868 में 'अमृत बाजार पत्रिका का प्रकाशन शुरू करने के लिए जो साज-समान खरीदा गया था उसकी कीमत थी सिर्फ 32 रुपये! इसी तरह 1879 में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने बंगाली' का पुनः प्रकाशन-अधिकार सिर्फ दस रुपये में खरीदा था और प्रेस बैठाने में सिर्फ 16 सौ रुपये का खर्च आया था।

इन अखबारों में आमतौर पर सभी बड़े राजनैतिक मुद्दों, सवालों और विवादों को उठाया जाता था। इन अखबारों ने सशक्त विपक्ष की भूमिका भी निभाई। आमतौर पर सभी सरकारी नीतियों और कानूनों का वे जम कर विरोध करते। उस समय भारतीय प्रेस का एक ही उद्देश्य था – विरोध विरोध औरविरोध! लेकिन यह विरोध छिछले स्तर का नहीं होता था, बल्कि अखबार सभी मुद्दों को गहराई और बारीकी से और बड़ी जिम्मेदारी के साथ विश्लेषित करते थे। राष्ट्रादी पत्रकारों की भूमिका के बारे में तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड डफरिन ने मार्च 1886 में लिखा-- आये दिन अंगरेज शासकों के खिलाफ इन सैंकड़ों तेज तर्रार बाबुओं का हमला बढ़ता जा रहा है। अंगरेज के खिलाफ ये रोज-ब-रोज रोष, निन्दा ओर कटुआलोचना-भरी बातें लिख रहे हैं। दो-तीन महीने बाद यानी मई में ही उन्होंने फिर लिखा—'इसमें कोई शक नहीं कि अखबार पढ़ने वाले लोगों के दिमाग में यह बात घर करती जा रही है कि हम (अंगरेज) सामान्यतः पूरी मानव जाति के और विशेषकर भारत के दुश्मन हैं।

लेकिन अखबारों के लिए काम आसान नहीं था। वे अगर लोगों में राजनैतिक चेतना जगाने, राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार करने, औपनिवेशिक शासक के शोषण-चक्र को बेनकाब करने और उसके खिलाफ माहौल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनाने की कोशिश कर रहे थे, तो दूसरी तरफ सरकार के पास उन पर अंकुश लगाने की शक्ति थी। 1870 में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय दंड संहिता में धारा 114 ए को जोड़ा, जिसके तहत 'भारत में विधि द्वारा स्थापित ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोध की भावना भड़काने वाले व्यक्ति को तीन साल की कैद से लेकर आजीवन देश-निकाला तक की सजा दिये जाने का प्रावधान था। बाद में इस धारा में कई और कड़े प्रावधान जोड़े गये।

भारतीय पत्रकारों ने बहुत अक्लमंदी से काम लेते हुए कई ऐसे तरीके खोज निकाले, जिनसे उन्हें इन कानूनों की गिरफ्त में फंसाया न जा सके। मिसाल के तौर पर उन्होंने धारा 124 ए से बचने का अनोखा तरीका खोजा। चूंकि ब्रिटिश सरकार के प्रति जिन लोगों की निष्ठा संदेह से परे होती थी, उन पर धारा 124 ए लागू नहीं होती थी, इसलिए भारतीय पत्रकार जब साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ अपने लेखों में आग उगलते थे, तो उसके साथ ही महारानी और ब्रिटिश सरकार के प्रति गहरी निष्ठा जताने वाली बातें भी लिख देते थे। भारतीय पत्रकारों ने एक और तिकड़म ढूंढ़ निकाली थी। लंदन में छपनेवाले समाजवादी और आयरिश अखबारों में छपी साम्राज्यवाद विरोधी सामग्री उठा कर अपने अखबार में छाप लेते थे या इसी तरह सुधारवादी सोच के ब्रिटिश नागरिकों की चिट्ठियां दे अपने अखबारों में छाप देते थे। इन सब के खिलाफ ब्रिटिश सरकार कारंवाई नहीं कर सकती थी, क्योंकि अगर इन मामलों में किसी भारतीय व्यक्ति के खिलाफ मामला चलाया जाता, तो इस मामले में ब्रिटिश नागरिकों या ब्रिटिश अखबारों को भी प्रतिवादी बनना पड़ता। जाहिर है कि ब्रिटिश कानून इसकी इजाजत नहीं देता था, इसलिए ब्रिटिश सरकार मन मार कर रह जाती।

भारतीय पत्रकार कभी-कभी ब्रिटिश नौकरशाही को तंग भी किया करते थे। वे किसी ब्रिटिश अखबार से उठाकर साम्राज्यवाद-विरोधी कोई सामग्री अपने अखबार में छाप देते थे, पर साथ में यह भी उल्लेख नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते थे कि वह अंश उन्होंने किसी ब्रिटिश अखबार से लिया है। ब्रिटिश नोकरशाही इसके चक्कर में आ जाती थी और इस मामले पर कार्रवाई शुरू कर देती थी। पर बाद में अफसरों को पता चलता था कि यह अंश तो अमुक ब्रिटिश अखबारसे लिया गया है, तो वे बेचारे कुढ़ कर रह जाते। मिसाल के तौर पर रूस में जारशाही के खिलाफ रूसी उग्रवादियों के संघर्ष का विवरण कुछ इस तरह से छापा जाता था कि पढ़ने वाले को वह भारतीय स्थितियों (यानी बंगाल और महाराष्ट्र के क्रांतिकारियों के संघर्ष और ब्रिटिश सरकार के दमनचक्र) से काफी मिलता-जुलता लगता। ब्रिटिश अफसर जब इसके खिलाफ कार्रवाई शुरू करते, तो उन्हें पता चलता कि यह अंश तो उस भारतीय अखबार 'लंदन टाइम्स' या ऐसे ही किसी अन्य ब्रिटिश अखबार से उठा कर छपा है।

कभी-कभी भारतीय अखबार ब्रिटिश राज के 'शुभचिंतक' होने का दिखावा करते हुए उसे सलाह देने या समय रहते सचेता हो जाने की चेतावनी देने की आड़ में भी ब्रिटिश सरकार के खिलाफ काफी-कुछ लिख दिया करते थे। वे यह दिखावा करते थे कि जैसे इनके लिखने का मुख्य उद्देश्य सिर्फ सरकार को उसकी गलतियां बताना ही है और लिखने वाले को सरकार के हित की पूरी चिंता है। बाल गंगाधर तिलक और मोतीलाल घोष ने यह तरीका बखूबी इस्तेमाल किया।

पर कुल मिला कर राष्ट्रवादी पत्रकारों का खास कर भाषाई पत्रकारों का काम बहुत कठिन था। एक तो उन्हें ऐसी शैली में लिखना था कि वे ब्रिटिश कानूनों की पकड़ में न आ सकें, फिर उन्हें इस ढंग से लिखना था कि लोग उसे समझ भी सकें। अखबारों के ज्यादातर पाठक अर्द्ध-शिक्षित थे और अखबारों की जिम्मेदारी यह थी कि उन्हें एक बहुत ही जटिल विषय को इन पाठकों तक पहुंचाना था, वह भी कानून से बचते । हुए राष्ट्रवादी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
पत्रकारों ने यह जिम्मेदारी बखूबी निभायी।

प्रेस की आजादी के सवाल को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने शुरू से ही बहुत महत्त्व दिया। जब-जब ब्रिटिश सरकार ने प्रेस पर हमला किया या प्रेस को दबाने की कोशिशें कीं, राष्ट्रीय आंदोलनों ने तब-तब इसके खिलाफ संघर्ष किया। प्रेस की आजादी का सवाल दरअसल आजादी के सवाल से सीधे-सीधे जुड़ गया था और प्रेस की आजादी की लड़ाई, देश की आजादी की लड़ाई का एक जरूरी हिस्सा बन गई थी।

भारतीय प्रेस ने 1870 के दशक में मजबूती से पैर जमाने शुरू कर दिये थे। लॉर्ड लिटन के प्रशासन की तो उन्होंने खुल कर आलोचना की, खासकर 1876-77 के अकाल पड़ितों के प्रति ब्रिटिश सरकार के अमानवीय रवैये की तो जबरदस्त आलोचना उन्होंने की। इसके साथ ही अखबारों का प्रसार भी बढ़ने लगा था और मध्यम वर्ग के पाठकों तक ही वे सीमित नहीं रह गये थे, बल्कि आम आदमी तक पहुंचने लगे थे। इससे ब्रिटिश सरकार की भौंहें टेढ़ी होना स्वाभाविक ही था। उसने अचानक इन अखबारों पर दमन की कुल्हाड़ी चलाई और 1878 में वर्नॅकुलर प्रस ऐक्ट लागू किया। यह कानून भाषाई अखबारों पर अंकुश लगाने के लिए बनाया गया था क्योंकि ब्रिटिश सरकार को उनकी ओर से ही बड़ा खतरा महसूस हो रहा था। वजह साफ थी कि ये अखबार आम जनता में ब्रिटिश शासन के खिलाफ माहौल बनाने लगे थे। 1878 का वर्नॅकुलर प्रेस एक्ट लागू करने का निर्णय अचानक लिया गया था और इस मामले में बहुत गोपनीयता बरती गई थी और लेजिस्लेटिव काउन्सिल ने चन्द मिनटों की चर्चा के बाद ही इस विधेयक को पारित करा दिया था। इस कानून में यह प्रावधान किया गया था कि 'अगर सरकार समझती है कि कोई अखबार राजद्रोहात्मक-सामग्री छाप रहा है या उसने सरकारी चेतावनी का उलंघन किया है, तो सरकार उस अखबार, उसके प्रेस व अन्य सामग्री को जब्त कर सकती है।'

भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस कानून का जम कर विरोध किया। इस मुद्दे को लेकर कलकत्ता के टाउनहाल में एक विशेष सार्वजनिक सभा हुई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसी सार्वजनिक मुद्दे को लेकर यह पहला बड़ा विरोध-प्रदर्शन था। इस कानून के खिलाफ भारतीय प्रेस और दूसरे अन्य संगठनों ने भी संघर्ष छेड़ा। फल स्वरूप 881 में लार्ड रिपन ने यह कानून वापस ले लिया।

ब्रिटिश सरकार की दमनकारी चालों के खिलाफ भारतीय प्रेस ने कितनी चालाकी से काम लिया, इसकी कई दिलचस्प मिसालें हैं। कई बार भारतीय अखबारों ने ब्रिटिश नौकरशाही को बेवकूफ बनाया। वर्नैकुलर प्रेस ऐक्ट की ही बात लें। दरअसल यह कानून खासतौर पर 'अमृत बाजार पत्रिका' के लिए बनाया गया था। उस समय यह अखबार अंग्रेजी और बंगला दोनों भाषाओं में छपता था। कानून का उद्देश्य इस अखबार के खिलाफ फौरी कार्रवाई करना था। लेकिन कानून लागू होने के अगले दिन ब्रिटिश अफसर हक्का-बक्का रह गये। 'अमृत बाजार पत्रिका' के सम्पादकों ने रातोंरात इस अखबार को सिर्फ अंग्रेजी अखबार में तब्दील कर दिया था।

इसी तरह की एक दिलचस्प घटना 1905 में हुई। कलकत्ता विश्वविद्यालय में दीक्षन्त भाषण देते हुए लार्ड कर्जन ने कहा—'सत्य का उच्चतम आदर्श दरअसल काफी हद तक पश्चिम की अवधारणा है। निःसंदेह सत्य को पूर्व में उच्चतम स्थान मिला, उससे कहीं पहले पश्चिम ने इसे वह स्थान दिया था। लार्ड कर्जन के कहने का मतलब यह था कि अंग्रेजों ने ही सत्य की अवधारणा को भारतीयों तक पहुंचाया है।

अगले दिन 'अमृत बाजार पत्रिका' ने लार्ड कर्जन के इस भाषण को प्रथम पृष्ठ पर छापा, लेकिन इसी खबर के साथ ही अखबार ने लॉर्ड कर्जन की किताब पूर्व की समस्याएं (द प्राब्लम्स ऑफ द ईस्ट) का एक अंश भी बॉक्स' बना कर छापा। इससे लॉर्ड कर्जन ने अपनी कोरिया यात्रा के दौरान अपने एक 'झूठ' का बखान गर्व से किया था उन्होंने लिखा था कि कोरियाई विदेश मन्त्रालय को उन्होंने अपनी उम्र 40 साल बताई थी, जबकि उस वक्त वे 33 साल के थे। इसकी वजह यह थी किसी ने उन्हें बताया था कि पूर्वी देशों में उम्र-दराज लोगों की बहुत इज्जत की जाती है। जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनसे पूछा गया कि चेहरे-मोहरे से जो वे कम उम्र के लगते हैं, तो उन्होंने कहा कि इसका कारण कोरिया की स्वास्थ्यवर्धक जलवायु है।' इसी तरह कोरियाई राष्ट्रपति से हुई बातचीत के बारे में भी कर्जन ने लिखा था कि जब राष्ट्रपति ने उनसे पूछा कि क्या महारानी विक्टोरिया से उनके नजदीकी रिश्ते हैं, तो मैंने जवाब दिया—नहीं, पर इस जवाब के बाद जब मैंने राष्ट्रपति के चेहरे पर जरा दूसरे किस्म के भाव देखे, तो मैंने तड़ से जोड़ा—'बहरहाल, मैं अभी अविवाहित ही हूं। इस तरह अपनी इस अनैतिक टिप्पणी के जरिये मैंने राष्ट्रपति का विश्वास प्राप्त कर लिया'

लार्ड कर्जन के 'सच' के इस रहस्योद्‌घाटन से सारे बंगाल में उनकी मिट्टी पलीद हो गई। कदम-कदम पर भारतीयों का अपमान करने और उन्हें उपदेश दिलाने का चस्का रखने वाले लार्ड कर्जन की अच्छी-खासी बदनामी हो गई। ब्रिटेन के साप्ताहिक 'टाइम्स' ने भी यह खबर छाप दी और लिखा—'लगता है कि सत्य का सम्मान करना लार्ड कर्जन ने अपने विवाह के बाद पत्नी के मार्गदर्शन में ही सीखा है; यह अमरिकियों का गुण है, (कर्जन की पत्नी अमरीकी थी।)

पत्रकारिता के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा सजा पाने वाले पहले भारतीय थे सुरेन्द्रनाथ बनर्जी। वे राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म देने वाले नेताओं में से भी थे। श्री बनर्जी को एक मुकद्दमे के फैसले के खिलाफ लिखने के लिए सजा हुई थी। कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नारिस की अदालत में 'शालिग्राम' की एक प्रतिमा को लेकर मुकद्दमा चल रहा था। प्रतिमा कितनी पुरानी है, इसका फैसला करने के लिए नारिस ने उसे अदालत में मंगवाया और फिर उसे देखकर घोषणा की कि यह प्रतिमा सौ साल से ज्यादा पुरानी नहीं हो सकती। नॉरिस की इस कारंवाई से बंगाली जन-मानस की भावनाओं को बहुत ठेस पहुँची। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 2 अप्रैल, 1883 को अपने अखबार 'बंगाली' में इसके खिलाफ बहुत रोषभरे शब्दों में संपादकीय टिप्पणी लिखी। उन्होंने लिखा था कि 'नॉरिस ने सबूत दे दिया है कि वह इस उच्च और जिम्मेदार पद के लायक नहीं है। इस युवा और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नौसिखिया न्यायाधीश की सनक पर लगाम लगाने के लिए कुछ-न-कुछ किया ही जाना चाहिए।'

इसका जो नतीजा होना था, वही हुआ। उच्च न्यायालय में उनके खिलाफ अदालत की मानहानि का मुकद्दमा चला। इस मुकद्दमे की सुनवाई पांच जजों की बेंच ने की, जिसमें चार यूरोपीय थे। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को दो मास कैद की सजा दी गई। बेंच में शामिल भारतीय जज रमेश चन्द्र मित्र इस फैसले से असहमत थे। इस फैसले की खबर फैलते ही जनता का गुस्सा भड़क उठा। कलकत्ता के जिन हिस्सों में भारतीय आबादी रहती थी, वहां पूर्ण हड़ताल हो गई। छात्रों ने उच्च न्यायालय के समक्ष उग्र प्रदर्शन किया, अदालत की खिड़कियों के शीशे तोड़ डाले और पुलिस पर पथराव किया। इन छात्रों का नेतृत्व करने वालों में युवा आशुतोष मुखर्जी भी थे, जिन्होंने बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अत्यधिक ख्याति अर्जित की। कलकत्ता समेत बंगाल के कई इलाकों और लाहौर, अमृतसर, आगरा, फैजाबाद, पूना व अन्य शहरों में विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला चला। कलकत्ता में विशाल आम सभा हुई।

आजादी की लड़ाई के दौर में प्रेस की आजादी के सवाल को लेकर सबसे जुझारू संघर्ष उग्र राष्ट्रवादी नेता बाल गंगाधर तिलक ने किया। 1856 में जन्मे तिलक ने स्नातक उपाधि हासिल करने के बाद अपना पूरा जीवन देश-सेवा में लगा दिया।

जी. जी. आगरकर के साथ उन्होंने 1881 में मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा' नाम से दो अखबारों का प्रकाशन शुरु किया। 1888 में उन्होंने खुद इन दोनों अखबारों का संपादन संभाला और उसके जरिये ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनता में जागरूकता पैदा करनी शुरू की। साथ ही ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने के लिए भी जनता को प्रेरित करने का काम शुरू किया। तिलक एक निडर, साहसी और बेलाग बोलने वाले पत्रकार थे, जिनकी भाषा स्पष्ट, सरल और सीधी चोट करने वाली थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार-प्रसार करने का एक और अद्भुत तरीका खोजा। सारे महाराष्ट्र में अत्यधिक उत्साह और श्रद्धा से मनाये जाने वाले गणपति महोत्सव को उन्होंने पहली बार, 1893 में राष्ट्रीयता के प्रसार-प्रचार का माध्यम बनाया। दस दिन तक चलने वाले, गणपति पूजा के इस महोत्सव में गीतों, भाषणों और अन्य तरीकों से उन्होंने लोगों में राष्ट्रीय प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी। इसके बाद 1896 में शिवाजी जयन्ती पर मनाये जाने वाले समारोहों का भी उन्होंने इसी तरह इस्तेमाल किया और राष्ट्रीय संघर्ष के लिये युवा मराठियों को तैयार किया। इसी साल उन्होंने कपड़े पर लगे उत्पाद-शुल्क के विरोध में सारे महाराष्ट्र में 'विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन' चलाया। शायद वे पहले राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने इस तथ्य को पहचाना कि राष्ट्रीय आंदोलन में निम्न मध्यवर्ग, किसान, मजदूर और दस्तकार कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और इसलिये इन लोगों को भी कांग्रेस के साथ जोड़ा जाना चाहिये।

अपने इसी तथ्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने 1896-97 में पूना सार्वजनिक सभा के युवा कार्यकर्त्ताओं की मदद से सारे महाराष्ट्र में 'कोई टैक्स नहीं' अभियान चलाया। अकालग्रस्त क्षेत्रों के लिये सरकार द्वारा तय की गई संहिता की मराठी प्रतियां छपवा कर उन्होने सारे महाराष्ट्र में बंटवाईं और किसानों से अपील की कि अगर अकाल के कारण उनकी फसलें नष्ट हो गईं हों, तो वे भू-राजस्व कतई अदा न करें।

1897 में पूना में प्लेग फैल गई। सरकार ने घर-घर तलाशी ली, ताकि रोगियों को बाकी लोगों से अलग ले जाकर अस्पतालों वगैरह में रखा जा सके। प्लेग फैलने के कारण कई नेता पूना छोड़ कर चले गये थे, लेकिन तिलक वहीं रहे। उन्होंने प्लेग से निपटने की सरकारी कोशिशों का समर्थन किया और खुद भी राहत कार्य किया, लेकिन प्लेग-पीड़ितों के प्रति सरकारी अफसरों के बेरहम और हृदयहीन रवये की उन्होंने कटु आलोचना की। सरकारी अफसरों के रवैये के प्रति जनता में जबरदस्त गुस्सा था और यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुस्सा फूटा 27 जून 1898 को, जब चाफेकर बंधुओं ने पूना की प्लेग कमेटी के अध्यक्ष रैंड और लेफ्टिनेन्ट ऐम्हर्स्ट की हत्या कर दी।

यों सरकार के प्रति जनरोष 1984 से ही उभरना शुरू हो गया था। सरकार की लेवी और कर नीति, मुद्रा नीति और अकाल नीति को लेकर लोगों में खासा असन्तोष था। भारतीय अखबारों ने भी इस असन्तोष को स्वर दिया और सरकार पर तीखे प्रहार किये। माहौल कुछ ऐसा बनने लगा था कि राष्ट्रवादी नेताओं का रुझान धीरे-धीरे जुझारू संघर्ष की दिशा पकड़ता जा रहा था। जाहिर है कि ब्रिटिश सरकार को स्थिति का पूरा अहसास था और वह भारतीय प्रेस को सबक सिखाने का मौका तलाश कर रही थी। महाराष्ट्र में तिलक एक ऐसी हस्ती थे, जो जुझारू संघर्ष की जमीन तैयार कर रहे थे और राष्ट्रवादियों में सबसे अग्रणी गिने जाते थे। उनकी पत्रकारिता भी बहुत मुखर थी; लोगों पर उनका जबरदस्त असर था। रैंड की हत्या से सरकार को बहाना मिल गया। ब्रिटिश स्वामित्व वाले अखबारों और नौकरशाही ने तिलक के खिलाफ तूफान खड़ा कर दिया। रैंड की हत्या को लेकर आरोप लगाया गया कि तिलक के नेतृत्व में पूना के ब्राह्मणों ने यह साजिश की थी।

सरकार ने पूरी कोशिश की कि तिलक को सीधे-सीधे इस हत्याकाण्ड के लिये जिम्मेदार ठहरा दिया जाये। लेकिन उनके खिलाफ वह कोई सबूत ही नहीं जुटा सकी। फिर तिलक ने अपने अखबारों के जरिये इस हत्याकाण्ड की निन्दा भी की थी और कहा था कि यह पागलपन की हद है। लेकिन साथ ही इस मामले में उन्होंने सरकारी रवैये की आलोचना भी की और कहा कि यह प्रेस का बुनियादी काम है कि वह गलत बातों को उजागर करे लोगों को यह बताये कि उन्हें अपने अधिकारों के लिये किस तरह लड़ना चाहिये। सरकार ने फैसला किया कि तिलक को भारतीय दंड संहिता की धारा 124ए के तहत राजद्रोह के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया जाये, क्योंकि 'वे लोगों में सरकार के प्रति नफरत फैला रहे हैं।'

27 जून 1897 को तिलक गिरफ्तार कर लिये गये। न्यायाधीश स्ट्राची की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अदालत में मुकद्दमा चला। जूरी में 6 यूरोपीय और 3 भारतीय सदस्य थे। तिलक पर जो आरोप लगाये गये थे, उसके लिए 'केसरी' के 15 जून के अंक में छपी दो सामग्रियों को आधार बनाया गया। एक तो तिलक का भाषण, जिसमें उन्होंने शिवाजी द्वारा अफजल खां की हत्या किये जाने का औचित्य सिद्ध किया था, दूसरी एक कविता, जिसका शीर्षक था—'शिवाजी के उद्गार।' यह कविता एक युवक ने कुछ दिन पहले शिवाजी जयंती समारोह पढ़ी थी।

'शिवाजी के उद्गार' कविता में उस युवा कवि ने लिखा था, 'शिवाजी वर्तमान युग में फिर पैदा हो गये हैं और अपने देशवासियों से कह रहे हैं—उफ, मैं अपनी आंखों से देख रहा हूं अपने देश की तबाही…हमारे देश से लक्ष्मी को विदेशी अपने करों (कर का मतलब हाथ भी और टैक्स भी) से खींचे लिये जा रहे हैं…लोगों पर तरह-तरह के अत्याचार हो रहे हैं पापी अकावाया (दुर्भाग्य का प्रतीक) अपने साथ अकाल को लेकर देश भर में बरबादी मचा रहा है—और यह सब देखते हुए भी कैसे ये सारे राजा (नेता) 'जनाने' बने हुए बैठे हैं…शतरंज के मोहरों की तरह निरीह!'

तिलक ने अफजल खां की हत्या के बारे में जो कुछ कहा था, उसे सरकार ने भड़काने वाली कार्रवाई माना और आरोप लगाया कि रैंड की हत्या इसी नतीजा था। कुल मिलाकर तिलक पर यह अभियोग लगाया गया कि वे अपने अखबारों के जरिये यह प्रचारित करते रहे हैं कि अंगरेजों को भारत में बने रहने का कोई अधिकार नहीं और किसी भी कीमत पर उन्हें देश से बाहर निकाला जाना चाहिए। जाहिर है कि तिलक पर लगा यह अभियोग गलत नहीं था। पर तब तक गांधी युग शुरू नहीं हुआ था। यह रणनीति नहीं बनी थी कि अदालतों में स्वतन्त्रता सेनानी अपने खिलाफ लगे अभियोग की सफाई न दें। त्याग की राजनीति और सत्याग्रह का जमाना शुरू नहीं हुआ था। उस समय तिलक को यह साबित करना था कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वह कानून की सीमा के भीतर रह कर रहे हैं। इसीलिए उन्होंने सरकार द्वारा लगाये गये अभियोगों का खंडन किया और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा कि विदेशी शासन के प्रति नफरत फैलाने की उनका कोई मंशा नहीं थी। विदेशी शासकों का मुकाबला करने की अपनी इस 'पुरानी' शैली का इस्तेमाल करते हुए तिलक ने त्याग और दृढ़ता का अनूठा उदाहरण पेश किया। वह जानते थे कि वे एक नये किस्म की राजनीति शुरू कर रहे हैं, जिसे जनता का विश्वास तभी मिल सकता है, जब इस राजनीति को नई किस्म का नेतृत्व दिया जाये। यानी जल्दबाजी से काम न लेकर धीरे-धीरे बुनियाद को पुख्ता किया जाये। सम्पूर्ण परिवर्तन की बात अभी ही कहने का मतलब होगा, सत्ता के दमन को बुलावा देना। किसी संगठित प्रतिरोध के अभाव में यह दमन इतना निरंकुश हो जायेगा कि समूचे संघर्ष का ही गला घोंट देगा और नेताओं से जनता को काट देगा।

कुछ दोस्तों ने तिलक पर दबाव डाला कि वह अपने भाषण में कहे गये कुछ आपत्तिजनक शब्द वापस ले लें। तिलक ने साफ मना कर दिया। उनका जवाब था—लोगों के बीच मेरी स्थिति (एक नेता के रूप में) इस पर निर्भर करती है कि मेरा चरित्र क्या और कैसा है। उनका (सरकार का) लक्ष्य यह है कि पूना के नेताओं को किसी तरह बेइज्जत कर दिया जाये, कुचल दिया जाये। लेकिन कम-से-कम मेरे मामले में वे ऐसा नहीं कर पायेंगे। फिर आपको इस बात का ध्यान होना चाहिए कि हम सब जनता के सेवक हैं। अगर इस नाजुक घड़ी में हम साहस से काम नहीं लेंगे, तो इसका मतलब होगा जनता के साथ विश्वासघात करना।

तिलक के मुकद्दमे में जूरी ने 6-3 मतों से तिलक को अपराधी ठहराया। तीनों भारतीय सदस्यों की राय में तिलक ने अपराध नहीं किया था। पर न्यायाधीश स्ट्राची और जूरी के 6 यूरोपीय सदस्यों के इरादे तो कुछ और ही थे। तिलक को 18 महीने की कड़ी कैद की सजा दी गई। वह भी तब, जबकि तिलक बम्बई विधान सभा के सदस्य थे। इसी तरह बम्बई प्रेसीडेंसी के कई अन्य सम्पादकों को भी विभिन्न मामलों में कड़ी सजायें दी गईं।

तिलक को सजा दिये जाने के फैसले का देश भर में जबरदस्त विरोध किया गया। राष्ट्रवादी अखबारों और राजनैतिक संगठनों ने मानव अधिकारों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और प्रेस की आजादी पर हुए इस हमले के खिलाफ देशव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया। इस संघर्ष में वे लोग भी साथ थे, जो तिलक की थोड़ी-बहुत आलोचना भी किया करते थे। कई अखबारों ने अपने प्रथम पृष्ठ पर चारों तरफ काली पट्टियाँ छापीं और कई अखबारों ने विशेष संस्करण निकाले, जिसमें प्रेस की आजादी के लिए तिलक के संघर्ष की सराहना की गई थी। लंदन में भारतीय बाप्रवासियों की एक सभा में भाषण करते हुए दादाभाई नौरोजी ने कहा कि 'ब्रिटिश सरकार अब प्रशासन के रूसी (जारशाही) तरीके अपनाने लगी है। प्रेस का गला घोंटने का नतीजा उसके लिए आत्मघाती साबित होगा।

इस तरह तिलक रातों-रात आखिल भारतीय स्तर के नेता के रूप में लोकप्रिय हो गये; लोगों ने उन्हें लोकमान्य की उपाधि दी। आत्मबलिदान की वह साकार प्रतिमा माने जाने लगे। उनकी एक छवि बनी। एक ऐसे नेता की जिसकी कथनी और करनी में फर्क न हो। तिलक जनता से संघर्ष के लिए अपीलें करते थे, तो उन्होंने खुद भी संघर्ष करके दिखाया। जब 1897 में अमरावती के कांग्रेस अधिवेशन में सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने बहुत भावुक होकर तिलक के संघर्ष की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें सजा मिलने पर 'आज सारा देश रो रहा है, तो सारे लोग तिलक के सम्मान में खड़े हो गये। तालियों की गड़गड़ाहट ने काफी देर तक माहौल को गुंजाये रखा।

1898 में ब्रिटिश सरकार ने धारा 124 ए में संशोधन किया और दंड संहिता में नई धारा 153 ए जोड़ी। इसमें यह प्रावधान किया गया कि 'अगर कोई व्यक्ति सरकार की मानहानि करता है या विभिन्न वर्गों में नफरत फैलाता है या अंग्रेजों के खिलाफ घृणा का प्रचार करता है, तो यह भी अपराध होगा। इस नये कानून के खिलाफ भी देश में एक बार फिर विरोध की आंधी उठ खड़ी हुई।

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को लेकर चले आंदोलन के कारण अंग्रेजों ने फिर दमन चक्र चलाया। लोगों में क्षोभ और निराशा बढ़ने लगी। इसी निराशा के फलस्वरूप बंगाल के आत्माभिमानी युवकों ने उग्रवाद और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आतंकवाद का रास्ता पकड़ा। 1908 के शुरू में सरकारी अफसरों पर बमों से हमले किये जाने की कई वारदातें हुईं। सरकार के छक्के छूट गये। उसने फिर अखबारों को निशाना बनाया। प्रेस पर अंकुश रखने के लिए नये कानून बनाये गये। बहुत-से अखबारों और सम्पादकों के खिलाफ मुकद्दमे चलाये गये और प्रेस की आजादी लगभग पूरी तरह कुचल दी गई। ऐसे माहौल में यह मुमकिन ही नहीं था कि तिलक की खबर न ली जाती। बंगाल के बाहर तिलक ही तो 'बहिष्कार आंदोलन' और जुझारू राजनीति के अगुआ थे।

भारतीय संघर्ष में 'बमों' यानी आतंकवाद के प्रवेश पर तिलक ने एक लेखमाला लिखी। उन्होंने व्यक्तिगत हत्याओं और हिंसा की निंदा की। उन्होंने इस प्रवृत्ति को 'एक जहरीला पेड़' कहा। लेकिन साथ ही उन्होंने सरकार को भी दोषी ठहराया कि वह असंतोष और आलोचना का निर्ममतापूर्वक दमन कर रही है और लोगों के अधिकारों को कुचल रही है। ऐसे माहौल में हिंसा, चाहे वह कितनी भी निंदनीय क्यों न हो, अपरिहार्य हो गई है। अपने एक लेख में उन्होंने कहा—'सरकारी अफसर जब बिना किसी कारण के लोगों को आतंकित करने लगें और जनता को तरह-तरह से डरा-धमका कर उसमें निराशा फैलाने की कोशिशें हों, तब बम की आवाज अफसरों और सरकार को सच्चाई से आगाह कराती है कि लोग निस्तेज और निर्जीव बैठे रहने और दमन व शोषण को बर्दाश्त करते रहने की सीमा से आगे बढ़ चुके हैं और अब वे कुछ करना चाहते हैं।

सरकार को भला क्यों रास आतीं ये सब बातें। उसने फिर 24 जून 1908 को तिलक को गिरफ्तार कर लिया और इन लेखों को प्रकाशित करने के लिए उनके खिलाफ राजद्रोह का मुकद्दमा दायर किया। तिलक ने एक बार फिर जबरदस्त हिम्मत का परिचय दिया। उन्होंने तर्क पेश किये कि वे निरपराध हैं। दरअसल उन्हें यह सब पहले से ही पता था। उनके एक दोस्त पुलिस अफसर ने उन्हें आगाह कर दिया था कि वे गिरफ्तार किये जाने वाले हैं, इसलिए होशियार हो जायें। तिलक यह सुनकर हंस पड़े और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने अपने शुभचिंतक मित्र से कहा—'सरकार ने तो पूरे देश को ही एक विशाल जेल में बदल कर रख दिया है। हम सभी लोग तो कैदी ही हैं। हां, जेल जाने का मतलब सिर्फ यह होगा कि आप एक कमरे से एक छोटी कोठरी में पहुंचा दिये गये।' अदालत में तिलक ने सवाल उठाया—यहां सवाल तिलक का नहीं। सवाल है कि क्या सरकार वाकई प्रेस की आजादी के प्रति ईमानदार है। क्या वह भारत में भी प्रेस को उतनी आजादी देने को तैयार है, जो आजादी इंग्लैंड में प्रेस को मिली हुई है ?

बहरहाल इस अदालती बहस का जो नतीजा होना था, वही हुआ। जूरी के दो भारतीय सदस्यों की असहमति के बावजूद तिलक को अपराधी ठहराया गया।

इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई। अखबारों ने घोषणा की कि तिलक का अनुकरण करते हुए वे भी जी-जान से प्रेस की आजादी के लिए संघर्ष करेंगे। 22 जुलाई को तिलक को सजा सुनाई गई थी। उस दिन बम्बई के सारे बाजार बंद रहे और एक हफ्ते तक यह 'बंद' जारी रहा। बंबई की सभी 80 कपड़ा मिलों और रेल मजदूरों ने छह दिन की हड़ताल की। पुलिस ने जब मजदूरों को काम पर वापस भेजने के लिए मजबूर किया, तो मजदूरों ने उसका जम कर विरोध किया। पुलिस और मजदूरों के बीच कई जगहों पर संघर्ष हुआ। ब्रिटिश सरकार ने मजदूरों के दमन के लिए सेना बुलाई। 16 मजदूर मारे गये और लगभग 50 मजदूर गंभीर रूप से घायल हुए। मजदूरों के इस संघर्ष की सराहना लेनिन ने भी की कि भारत का मजदूर वर्ग अब राजनीति में सक्रिय हिस्सा लेने लगा है।

ब्रिटिश सरकार लगातार प्रेस का गला घोंटने की कोशिश करती रही। तिलक के मामले में उसने जो कुछ किया था, उसकी पुनरावृत्ति तिलक के राजनैतिक उत्तराधिकारी गांधी जी के खिलाफ चले मुकद्दमे में हुई। गांधी जी ने 'यंग इण्डिया' में कुछ लेख लिखे थे। इन लेखों के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1922 में उन पर धारा 124 ए के तहत राजद्रोह के अभियोग में मुकद्दमा चलाया और उन्हें भी तिलक की तरह छह साल की कैद की सजा सुनाई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गई। गांधी जी ने सजा सुनकर जवाब दिया—'आप लोगों ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के खिलाफ चले मुकद्दमे की पुनरावृत्ति कर मेरा सम्मान किया है। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि मेरे लिए यह सबसे अधिक गर्व और प्रतिष्ठा की बात है कि तिलक के साथ मेरा नाम भी जुड़ गया।

तिलक और गांधी के खिलाफ चले मुकद्दमों में बस यही फर्क था कि गांधी जी ने अपने खिलाफ लगाये अभियोगों को स्वीकार किया था, जबकि तिलक ने अभियोगों का खंडन किया था। दर असल यह फर्क बताता है कि 1903 से 1922 तक आते-आते राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप और संघर्ष के तरीकों में कितना फर्क आया था। राष्ट्रीय आंदोलन को इस पडाव तक पहुंचाने में तिलक की राजनीति और पत्रकारिता का योगदान अविस्मरणीय है।

('रविवार' से साभार)

जो भी है हिन्दू का घर—गूंजे वहां वेद का स्वर

परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(तन्त्र-शब्दार्थ छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

सम्पर्क करें :

दयानन्द संस्थान,

2286, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग

नई दिल्ली-110005

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू, हिन्दुत्व और हिन्दुस्तान

—डा. कैलाश चन्द्र कोटिया

वसुधैव कुटुम्बकम् सारा विश्व हमारा कुटुम्ब है। यह उक्ति एव भावना हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों और प्रवचनों में बार-बार परिलक्षित होती है। कितना महान् आदर्श है। कितनी ऊंची भावना है। ये शब्द संवेदनशीलता के द्योतक और मानव प्रेम के परिचायक हैं। इनमें हमारे ऋषि-मुनियों के गहन-मनन चिन्तन की अभिव्यक्ति है।

परन्तु विगत इतिहास की तरफ मुड़े, तो हिन्दुओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में वसुधैव कुटम्बकम् की खंडित व्यवस्था ही नजर आ रही है। कथनी और करनी का विरोधाभास ही सर्वत्र दिखाई देता है। वास्तविकता इन शब्दों की भावना के विपरीत ही है।

सारे विश्व को कुटुम्ब मानने की बात तो कथन तक ही रही है। हिन्दुओं ने स्वयं को ही कभी एक कुटुम्ब नहीं माना। इनकी वर्णव्यवस्था एक ऐसी विशेषता रही है जो संसार के किसी और धर्म में नहीं पाई जाती। कर्म प्रधान वर्णव्यवस्था का शनैः-शनैः जन्म पर आधारित होना, हिन्दू समाज

वसुधैव कुटुम्बकम् सारा विश्व हमारा कुटुम्ब है. यह उक्ति एवं भावना हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थों और प्रवचनों में बार-बार परिलक्षित होती है। कितना महान् आदर्श है। कितनी ऊंची भावना है। ये लब्द संवेदनशीलता के द्योतक और मानव प्रेम के परिचायक हैं। इनमें हमारे ऋषि-मुनियों के गहन-मनन-चिन्तन की अभिव्यक्ति है। परन्तु विगत इतिहास की तरफ मुड़ें, तो हिन्दुओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में वसुधेव कुटुम्वकम् की खंडित अवस्था ही नजर आ रही है। कथनी और करनी का विरोधाभास ही सर्वत्र दिखाई देता है। वास्तविकता इन शब्दों की भावना के विपरीत ही है। प्रस्तुत है एक विचारोतेजक विश्लेषण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की विकृतियों की शुरुआत थी। वर्णों और उपवर्णों में विभाजित होते रहे हिन्दू इतने दुर्बल होते गए कि वेद, उपनिषद्, गीता रामायण और महाभारत जैसी धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक धरोहरें भी उनको एकता के सूत्र में बांधे हुए नहीं रख सकी।

मूल वर्णव्यवस्था में कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एव शूद्र होने की व्याख्या थी। इस व्यवस्था का आधार ही उच्च और निम्न वर्गों की स्थापना था। बड़े-छोटे की विचारधारा और श्रेष्ठता-हीनता का मनोविकार उत्पन्न कराने वाला आधार विकृतियों का जनक होना ही था। ऐसी विकृतियां जिन्होंने वीरता, शौर्य, पराक्रम की पर्यायवाची हिन्दू जाति को इतना छिन्न-भिन्न कर दिया कि उनके पराभव का जो अध्याय 1192 ई० में, अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की पराजय से आरम्भ हुआ, उसका अन्त आज भी नजर नहीं आता। ऐसा नहीं कि अंधकार के गर्त्त में डूबने की शुरुआत सन् 1192 ई. में ही हुई हो। विदेशी शक्तियों के आक्रमण और हिन्दुओं के पददलित होने का सिलसिला तो ईसा के 300 वर्ष पूर्व सिकन्दर के समय से ही शुरू हो गया था।

वर्णों-उपवर्णों, जातियों और उपजतियों में विभाजित हिन्दू समाज इस सीमा तक अपनी सामूहिक पहचान खोता जा रहा था कि विदेशी शक्तियों के आक्रमण का सिलसिला सिकन्दर से शुरू होकर अंग्रेजों की भारत विजय तक चलता रहा।

अंग्रेजों की दासता से मुक्ति का मूल्य चुकाना पड़ा देश के विभाजन के रूप में। साम्प्रदायिकता एवं अलगाववाद के लिए मूलतः अंग्रेजों को दोषी ठहराया जाता रहा है। स्वतन्त्रता के 40 वर्ष पश्चात् भी इन प्रवृत्तियों की समाप्ति और कम होने का आभास तो दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहीं हो रहा!

साम्प्रदायिकता की अग्नि के ताप से आज भी देश झुलस रहा है। हम स्वयं ही अपने समाज को अलग-अलग दिशाओं में जाने देते रहे हैं। सदियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक सुषुप्त रहे हिन्दू समाज में से व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से लोग टूट-टूट कर दूसरे धर्मों का आलिंगन करते रहे और हिन्दू समाज पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। यह कैसा समाज था जो अपना बिखराव तटस्थता से देखता रहा। यह निःस्पृहता एवं निष्क्रियता की पराकाष्ठा थी। विश्व के इतिहास में इस विलक्षण तथ्य को लक्षित करिये—जहां अन्य धर्मों का प्रचार-प्रसार हुआ, जहाँ अन्य धर्मावलम्बियों की संख्या बढ़ती गई वहीं हिन्दू समाज का तुलनात्मक आकार छोटा होता गया। भारतीय-उपमहाद्वीप (भारत, पाकिस्तान एवं बंगलादेश) में आज जहाँ 65 करोड़ हिन्दू हैं वहाँ 33 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनके पूर्वज हिन्दू थे।। भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर श्रीलंका, ब्रह्मा, थाईदेश, कम्पूचिया, लाओस, मलेशिया तथा इण्डोनेशिया के लोगों के पूर्वज भी हिन्दू थे। मारीशस, फिजी, सुरीनाम, गायना, कीनियता, युगाण्डा, तन्जानिया, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी बड़ी संख्या में हिन्दू ले जाकर बसाये गये।

क्या यह सही नहीं है कि शताब्दियों पूर्व जो हिन्दू वहाँ गये थे उन्हें भारत के हिन्दुओं ने विस्मृत कर दिया। उनसे भावनात्मक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी नहीं रखे। भारत के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् भी यहीं उदासीनता पूर्ववत् बनी रही। यह दूसरी बात है कि वहां गए हिन्दुओं की धार्मिक भावनाएं समय के प्रवाह के साथ क्षीण नहीं हुई और उनकी धार्मिक सामाजिक मान्यताएं एवं परम्पराएं अक्षुण्ण ही बनी रहीं।

फिर स्वतन्त्रता के पश्चात् विदेशों विशेषतया संयुक्तराज्य अमेरिका और इंगलैंड की ओर हिन्दुओं का निष्क्रमण तो गौरव एवं गर्व की अनुभूति देने वाला हो गया।

इन विकसित देशों में गए हिन्दुओं की अवधारणा भी ऐसी बन गई है कि भारत के हिन्दू समाज के उत्थान और पतन में अब न उसकी कोई रुचि है और न भागीदारी की भावना। भारत का हिन्दू समाज पाश्चात्य देशों में जाकर बसे हुए हिन्दुओं की राष्ट्रीयता परिवर्तन को अपना ह्रास नहीं मानता है। दूर भविष्य की ओर देखें तो निस्सन्देह एक कटु सत्य दृष्टिगोचर होगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि यहां की सभ्यता और संस्कृति इस वर्ग के हिन्दुओं को आत्मसात् कर लेगी। उनकी धार्मिक अवधारणाएं भी शनैः-शनैः धूमिल होती जायेंगी। इसका कारण स्पष्ट है। जहां अन्य धर्मावलम्बियों में अपने-अपने धर्मों के प्रति आस्था है और निष्ठा है वहीं हिन्दुओं का जो वर्ग पिछले चार दशक में विकसित देशों में गया है, वह उन हिन्दुओं से भिन्न है जो शताब्दियों पूर्व यहां से गये थे या ले जाये गए थे। इन हिन्दुओं के वंशजों ने आज भी वहां हिंदू धर्म और संस्कृति की अलख जगा रखी है। वे आज भी मार्ग प्रदर्शन के लिये भारत की ओर उन्मुख रहते हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया के देश इण्डोनेसिया, थाई देश, लाओस और कम्पूचिया आज भी प्राचीन हिंदू संस्कृति और साहित्य के प्रभाव का प्रमाण देते हैं। यह तथ्य भी निर्विवाद है कि यहां के निवासियों के पूर्वज हिंदू थे। समय के साथ भारत के हिंदू समाज से उनकी दूरी होती गई और इण्डोनेशिया में इस्लाम, थाई देश, लाओस और कम्पूचिया में बौद्ध धर्म के आगमन के साथ तो वे भारत के हिंदू समाज से भावनात्मक रूप से भी अलग-थलग हो गये। हां, हिंदू संस्कृति का प्रभाव अब भी वहां दृष्टिगोचर होता है। इस तरह भी हिंदू समाज का ह्रास हुआ।

इस प्रकार न केवल हिंदू समाज टूटता जा रहा था, उसके साथ-साथ भारत के विघटन की प्रक्रिया भी चलती रही थी। पाकिस्तान और बंगला देश तो कल तक भारत के ही अंग थे। इतिहास के पृष्ठों को पलटें तो अफगानिस्तान, श्रीलंका बर्मा, नेपाल और भूटान भी भारत के हिंदू समाज के ही अंग हैं।

पाकिस्तान के दस करोड़ इस्लाम धर्मावलम्बी और बंगलादेश के दस करोड़ में से नौ करोड़ इस्लाम मानने वालों के पूर्वज हिंदू ही तो थे। बंगला देश में आज भी एक करोड़ हिंदू हैं।

इस तथ्य के कोई इनकार नहीं कर सकता कि भारतीय उप-महाद्वीप के 30 करोड़ मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू ही थे और उन्होंने न केवल भय, बल-प्रयोग, लोभ-लालच के कारण धर्म परिवर्तन किया था वरन् एक मुख्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण या अपने ही धर्म के लोगों द्वारा तिरस्कार एवं उपेक्षा । परिणामस्वरूप इन 30 करोड़ मुसलमानों के कुण्ठित वंशजों ने हिन्दू धर्म का परित्याग किया । आज भी बाह्य और आंतरिक शक्तियां तो हिंदू समाज एव भारत को तोड़ने तथा दुर्बल करने में लगी हुई हैं परंतु घोर दुर्भाग्य तो यह है कि उनसे संघर्ष करने की बजाय हम स्वयं ही अपने आपको तोड़ रहे हैं । हिंदू समाज के टूटते रहने का जो सिलसिला सन् 1192 ईसवी में भारत के अंतिम शक्तिशाली हिंदू शासक पृथ्वीराज चौहान के अफगान सुलतान मुहम्मद गौरी के हाथों पराभव के साथ शुरू हुआ, वह अनवरत चलता रहा है ।

करोड़ों हिंदुओं का धर्म परिवर्तन होता गया और हिंदू समाज निरीह, निष्क्रिय, निश्चेष्ट, असहाय, तटस्थ, उदासीन एवं अकर्मण्य होकर देखता रहा । इस अनर्थ के लिये मूलतः हिंदू समाज ही उत्तरदायी था क्योंकि न तो हिंदू संगठित रहे, न अपने समाज को भेदभाव, ऊंच-नीच, छोट-बड़े की भावनाओं से ही मुक्त बना रख सके ।

हिंदू इस तरह अपने समाज को दुर्बल करने वालों के हाथ का खिलौना बने रहे हैं । कैसी विषादपूर्ण स्थिति रही है कि हिंदुओं को कमजोर करने वालों की आकांक्षा और उद्देश्यपूर्ति के अभियान में हिंदू ही उनके सबसे बड़े सहायक और सहयोगी रहे हैं । हिंदू समाज को क्षीण और दुर्बल करने में अन्य वर्गों का निहित स्वार्थ रहा है । यह विचारधारा और इसकी षड्यन्त्रकारी क्रियान्विति अंग्रेजी शासनकाल की परम्परा बनी रही ।

हिंदू समाज के बिखराव का सिलसिला उसी दिन आरम्भ हो गया था जिस दिन वर्ण-व्यवस्था को इसका आधार मान लिया गया था । यह कैसी विषादपूर्ण स्थिति थी कि विघटन की चुनौती बने रहने पर भी छोटे-बड़े और ऊंच-नीच की भावना और भी पुष्ट होती गई ।

समाज के एक अंग को शूद्र और अछूत मान गया । हिन्दुओं के विभिन्न धर्मों और मतों को मानने वालों के साथ हिन्दुओं ने ही सदियों तक कितना अमानवीय, कितना निकृष्ट व्यवहार किया, यह संसार के इतिहास का एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभूतपूर्व प्रसंग है। किसी भी देश में किसी भी धर्म में, किसी समाज में हिंदुओं की जैसी इस विचारधारा एवं कार्यकलापों की अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती है।

हिंदुओं की इस शोचनीय और घिनौनी व्यवस्था की पराकाष्ठा हुई उनके धार्मिक स्थलों, उत्सवों आदि में शूद्र कहलाने वाले व्यक्तियों के प्रवेश निषेध के रूप में। यह कैसी व्यवस्था थी कि एक ही धर्म के अनुयायियों में इतना भेदभाव? यह कौन-सा मापदण्ड था जिसके अनुसार इन लोगों को अपने धर्मपालन तक की अनुमति नहीं थी? शासकों और समाज के उच्च वर्ग के प्रोत्साहन से यह घृणास्पद कार्य शताब्दियों तक अनवरत चलते रहे हैं। बार-बार विचार आता है कि इतने करोड़ लोग और इनके पूर्वज क्यों पशुओं का-सा जीवन जीते रहे, क्यों नहीं इन्होंने अपने विद्रोह को सामूहिक संगठित रूप से मुखारित किया, क्यों नहीं हिन्दू समाज को झकझोर दिया, क्यों पददलित, मूक निरीह और असहाय रहते रहे?

अभिशाप यह है कि हिंदुओं का आज का जागृत, शिक्षित वर्ग भी उस विचारधारा का प्रत्यक्ष और परोक्ष में पोषक है। न तो उन्हें अपराध-बोध है और न उनको निम्न वर्ग की अन्यायों के विरुद्ध प्रतिक्रिया एवं आक्रोश के परिणामों का आभास है।

पीछे की ओर मुड़कर देखें तो शूद्रों के साथ सदियों के दुर्व्यवहार और उनकी पीड़ा के प्रति अगर हिंदू समाज संवेदनशील नहीं रहा है तो कम-से-कम आज तो उसके परिणामों का हिन्दू समाज का ह्रास (संख्या और शक्ति में) हुआ और परिणामस्वरूप देश का अंग-भंग हुआ। स्वतन्त्रता के चार दशक पश्चात् भी उस पददलित एवं उपेक्षित वर्ग के लिये संविधान एवं कानून केवल कागजों तक सीमित हैं। उनके उद्धार, सामाजिक उत्थान और उनके समाज में बराबरी का स्थान दिलाने की राजनैतिक संगठनों और शासकों की बातें चुनावों में सफलता, सत्तामोह एवं पद-प्राप्ति का एक साधनमात्र ही रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा गांधी ने अपने जीवन को दाव पर लगा कर अंग्रेजों और डा० अम्बेडकर की उस योजना को विफल कर दिया था। जिसके अनुसार दलितों को हिंदुओं से अलग मानकर अल्पसंख्यकों की तरह उनका भी अलग प्रतिनिधित्व होना था। डा० अम्बेडकर विद्वान् और देशभक्त थे परन्तु हिंदू समाज की व्यवस्था और शूद्रों को अछूत मानने और उनके साथ पशुतुल्य व्यवहार से उनका मानस इतना कुण्ठाग्रस्त हो गया था कि वे उन अंग्रेजों के उस षड्यंत्र में शामिल हो गये। जिसके दूरगामी परिणाम हिंदू समाज के लिये अत्यन्त घातक होते। गांधी जी ने शूद्रों को एक सम्मानजनक नाम दिया—हरिजन। परंतु उनके इस नामकरण से मूलभूत समस्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

उस ऐतिहासिक घटना के बाद भी हिंदू समाज की निद्रा नहीं टूटी। शायद यह भी विधि का विधान था कि अपने पतन का मार्ग भी हिंदुओं ने स्वेच्छा से चुना था। वे इतने जड़ हो गये थे कि अपने को टूटते हुए देखने पर भी उनकी निद्रा एवं तंद्रा भंग नहीं हुई। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है कि—

'दारुण दुख जाहे प्रभु देहि, वाकि मति पहले हर लेहि।'

इस देश को परोक्ष रूप से दुर्बल किया जा रहा है। क्या इस तथ्य को नकारने का कोई भी औचित्य है कि जिस देश के 83 प्रतिशत लोग कमजोर होंगे वह देश मूलतः कमजोर ही रहेगा। फिर प्रत्यक्ष या परोक्ष में स्वतंत्रता के पूर्व और पश्चात् बार-बार यह बात क्यों कही जाती रही है कि हिन्दुओं के संगठित होने का आव्हान और कार्य अन्य वर्गों के लिये संदेह और भय उत्पन्न करने वाले हैं।

यह कैसी त्रासदी रही है कि अपने को हिंदू कहना, हिंदू संस्कृति, साहित्य एवं सभ्यता को अपनी धरोहर मानना हिंदुत्व पर गर्व करना सांप्रदायिकता के पर्यायवाची माने जाते रहे हैं। हिंदुओं के मन में कूट कूट कर यह इस तरह बैठा दिया गया कि कोई भी हिंदू कहलाने में अपराध-बोध होने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या यह सत्य नहीं कि हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख वर्गों के पूर्वज कल तक हिंदू ही थे। क्या इन वर्गों का इतिहास 200-300या700 वर्ष का ही है? इससे पूर्व का इनका इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, भाषा और धर्म तो हिंदुओं के समान रहा है। इनके पूर्वज इसी धरती पर पैदा हुए और इसी मिट्टी में मिल गये। इतिहास साक्षी है कि केवल मुट्ठी भर अफगान, तुर्क, ईरानी और मुगल बाहर से आये थे। यह तो सम्भव नहीं है कि उन मुट्ठी भर बाहर से आये हुए लोगों के वंशजों की संख्या भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान में मिलाकर 30 करोड़ हो गई।

अन्य धर्मों को मानने वालों को भारत के धर्म-निरपेक्ष संविधान ने समान मौलिक एवं नागरिक अधिकार प्रदान किये हैं। यह भी एक तथ्य है कि अन्य धर्मावलम्बियों को शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में भी समान अवसर है। भारत की जनगणना का विश्लेषण करें तो ज्ञात होगा कि अन्य धर्म वालों की आनुपातिक संख्या वृद्धि कुछ अपवादों को छोड़कर हिंदुओं से अधिक हो रही है।

तो इस पृष्ठभूमि में, इस तथ्य को कि मुस्लिम, ईसाई, सिख इसी धरती के पुत्र-पुत्रियाँ हैं और भारत की मुख्य धारा के ही अंग हैं, हिंदुओं को स्वीकार और आत्मसात् कर लेना चाहिये। अगर विभिन्न वर्गों के कुछ लोग इस धारणा के विपरीत मत रखते हों तो प्रतिक्रियास्वरूप हिंदुओं की खिन्नता रुष्टता और आक्रोश भारत को और भी कमजोर कर देंगे।

भारत की शक्तियों के प्रति अगर चिन्ता है तो अंतर्मुखी होकर यह सोचने का समय है कि सदियों से क्यों यह देश बाहरी आक्रमणों का निशाना रहा, सदियों से क्यों हिंदू समाज का विघटन होता रहा, सदियों से क्यों इतनी बड़ी संख्या में होते हुए भी हिंदू अपने ही देश में पददलित होते गये सदियों तक क्यों यह सिलसिला चला कि भारत में और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भारत से पलायन कर गये हिंदुओं ने अपने धर्म को त्याग कर करोड़ों की संख्या में अन्य धर्मों को अपना लिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर क्या इस बात को नकारा जा सकता है कि जिस देश का 83 प्रतिशत वर्ग कमजोर और विभाजित होगा वह देश कभी बलवान् नहीं हो सकता तो फिर हिन्दू समाज को तोड़ने और छिन्न-भिन्न करने वाले विचारों और कार्यों को प्रोत्साहन क्यों? हिन्दू समाज का दारुण दुख तो यह है कि वे स्वयं ही इस आत्मघाती प्रवृति में रत है। हिन्दू समाज सदियों से इतना सुषुप्त रहा है, अपने ह्रास के प्रति इतना अकर्मण्य रहा है कि उसे आज भी जो कुछ शेष है उसे बचाने की भी चिंता नहीं।

पाकिस्तान एवं बांगलादेश से आए हिन्दुओं की त्रासदी का उत्तरदायित्व किस पर है? केवल हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था पर, जिसके परिणामस्वरूप करोड़ों लोगों ने इस ऊंच-नीच, छोटे बड़े, छूत-अछूत से ग्रस्त हिन्दू समाज को त्याग दिया। उन्हीं के वंशजों के हाथों वहां के हिन्दुओं को अपनी ही धरती से खदेड़ दिया गया। उन कश्मीरी पंडितों की आज की त्रासदी पर क्या कहें जिनके पूर्वजों ने गर्व और अभिमान के साथ इतनी बड़ी संख्या में अपने ही लोगों का दूसरे धर्म में पलायन होते देखा। स्वयं शेख अब्दुल्ला ने अपनी जीवनी में इस तथ्य को उजागर किया है। शनै-शनैः अपनी आत्मघाती संकीर्ण मनोवृत्ति के फलस्वरूप पंडितों का वर्ग इतना सिकुड़ता गया कि आज की विषम परिस्थिति में वे अपने को असहाय पाते हैं और कश्मीर से पलायन का मानस बनाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका, चीन और पाकिस्तान प्रत्यक्ष या परोक्ष में भारत से शत्रुता रखते हैं और उनकी विदेशनीति का एक मुख्य अंग है भारत को कमजोर कर उसका विघटन करना।

भारत के पड़ौसी देश बांगलदेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका को भारत के शक्तिशाली होने का भय सदैव सताता रहता है।

इधर कश्मीर और लद्दाख के एक भाग में पाकिस्तान की सत्ता है और दूसरे भाग में चीन की। भारत के अन्य भागों-पंजाब, कश्मीर, नगालैंड, मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा में विघटनकारी शक्तियाँ सिर उठाए हुए हैं। बाकी के भागों में धर्म, भाषा, जाति, पानी का बंटवारा आदि विषयों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेकर लगातार अशान्ति बनी रहती है।

जहां देश के और भी कमजोर होने और टूटने की उपरोक्त पृष्ठभूमि तो बनी हुई हैं वहां देश के 83 प्रतिशत हिन्दुओं को जो सतही एकता रहती रही है उसे भी छिन्न-भिन्न करने के प्रयत्न लगातार किए जा रहे है। किसी भी देश की इतनी बड़ी जनसंख्या उसकी रीढ़ की हड्डी के समान होती है। हरिजनों को हिन्दुओं से अलग बताना हिंदू समाज और देश के प्रति जघन्य अपराध है।

इस अपराध में देश के विभिन्न वर्ग तो लिप्त हैं ही परन्तु स्वयं हिन्दुओं की शोचनीय मनोदशा और कार्यकलापों से हिन्दू समाज की अधोगति हिंदुओं की अवचेतना का बोध कराती है।

शताब्दियों तक टूटते-बिखरते, पददलित होते इस हिंदू-समाज का जागरण ही भारत के शत्रुओं के षड्यंत्रों का मुंहतोड़ उत्तर होगा हिन्दू समाज की व्याधियों का उपचार एक समर्पित एवं निष्ठामय अभियान चाहता है, जिसके प्रमुख अंग होंगे—

1. हिन्दू-उदबोधन एवं हिन्दुत्व पर गर्व। अच्छे हिन्दू होने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि अन्य धर्मावलम्बियों से विमुख हुआ जाए। अच्छे हिंदू और अच्छे भारतीय होने में कोई विरोधाभास नहीं है। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय एवं लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जहां हिंदू धर्म के देदीप्यमान नक्षत्र थे, वहीं उनकी उत्कृष्ट देश भक्ति असंदिग्ध एवं अनुकरणीय थी।

2. उपरोक्त विचारों की अपने कार्यकलापों में परिणति, जिसके फलस्वरूप ऊंच-नीच, छोटे-बड़े की भावना को तिलांजलि। इस अभियान का आरम्भ हिन्दुओं को अपने धार्मिक स्थलों और धार्मिक उत्सवों से करना है। चर्चो, मस्जिदों और गुरुद्वारों में इस समानता का जो अनूठा उदाहरण दृष्टिगोचर होता है वह किसी भी समाज की नींव का पत्थर होता है।

हिन्दू समाज का आत्मविश्वास जगाना है। घरों में, शिक्षण संस्थाओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में, सरकारी सेवाओं में सार्वजनिक जीवन में, हिन्दुओं को दीन-हीन होने का पाठ पढ़ाया जाता रहा है। इस संस्कृति के प्रति विद्रोह इस समाज के जागरण-अभियान का महत्वपूर्ण चरण है। करोड़ों-करोड़ों हिंदुओं को धर्म के नाम पर हिन्दू-हिन्दू का भेद, जड़-मूल समेत उखाड़ फेंकना है। इस महायज्ञ में हिन्दुओं को अडिग होकर दृढ़ता से उन निहित स्वार्थों और शक्तियों का सामना करना है जो सदियों से हिंदू समाज के लिए अभिशाप बने हुए हैं। हिंदू समाज की शक्ति भारत देश की शक्ति का ही पर्यायवाची है। अगर भारत को ऊंचा उठाना है, संसार में अग्रणी बनना है तो यह स्वप्न तभी साकार होगा जब भारत की 83 प्रतिशत जनसंख्या वाला सबसे बड़ा वर्ग हिन्दू समाज एक वज्र के समान बलवान होगा।

जिस देश की 83 प्रतिशत जनसंख्या विभिन्न सामाजिक व्याधियों से ग्रस्त है, कमजोर है और उसे तोड़ने और विभाजित करने के षड्यंत्र और कुचक्र अनवरत चलते रहे हैं, उस देश को शक्तिशाली बनाने का विचार कोरा दिवास्वप्न है। इस देश की मूलभूत समस्या न हिन्दू-मुस्लिम है, न हिन्दू-ईसाई, न हिन्दू-सिख। हिन्दुओं को यह स्वीकार करना ही चाहिये कि भारत के मुसलमान, ईसाई, सिख आदि भारत की मिट्टी से पैदा हुए हैं और यहां की मिट्टी में ही मिलेंगे। वे भारत के अभिन्न अंग है, यहाँ के नागरिक हैं और धर्मनिरपेक्ष संविधान-प्रदत्त अधिकार सम्पन्न हैं।

इस पृष्ठभूमि में हिन्दुओं की वास्तविक समस्या है हिन्दू-हिन्दू का भेदभाव जब इस देश के हिन्दुओं ने अन्य धर्मों का आलिंगन नहीं किया था उस समय भी वर्ण-जनित कुरीतियों एवं दुर्भावनाओं से हिन्दू समाज की अवधारणायें इस समाज का अभिशाप बनी हुई थीं।

हिन्दू सभ्यता, संस्कृति और हिन्दुओं के विभिन्न धर्मों और मतों की एकात्मकता भी समाज के ह्रास को अवरुद्ध नहीं कर सके, क्योंकि हिंदुओं ने अपने आपको ऊंच-नीच, छोटे-बड़े, हीनता-श्रेष्ठता के बंधनों में जकड़ लिया था। समय के साथ बंधनों की जकड़ ने मानसिक रूप से उन्हें इतना क्षत-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विक्षत कर दिया कि अपना विनाश अपने देश का विघटन भी उनकी विचारधारा को स्वस्थ और समयानुकूल नहीं कर सका। हिन्दुओं को अन्य वर्गों की विचारधारा और कार्यकलापों का मूल्यांकन करने की बजाय अपना आत्म-विश्लेषण करना है और विनाशपथ पर चलते रहने की आत्मघाती प्रवृत्ति का त्याग करना है।

हिंदू-हिंदू का भेदभाव केवल एकता के उपदेशों से जाने वाला नहीं है। उपदेश देने वाले व्यक्तियों को अपने जीवन दर्शन में उन उपदेशों को प्रतिबिम्बित करना होगा। आदर्शों के उपदेश और प्रवचन मात्र क्या प्रेरणस्रोत हो सकते हैं? इस जन-जाग्रति का अभियान प्रत्येक हिंदू का कर्तव्य है।

इस कर्तव्य के प्रति हमारी घोर उपेक्षा सदियों तक हमारे नाश का कारण बनी रही। देश और देश के बाहर की चुनौतियाँ हमसे अपेक्षा करती है कि हम अपनी संस्कृति के गौरवशाली इतिहास की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी धरोहर को सच्चे अर्थों में हिंदू समाज की मूल विचारधारा बनायें और पहले हिंदू समाज को एक कुटम्ब बनायें, जिसमें एक ऐसी दृढ़ नीति का निर्माण हो कि भारत के ही नहीं, विश्व के समस्त हिंदू इस बृहत् समाज का अंग होने में गौरव का अनुभव करें। तभी भारत के बाहर हिंदुओं को पाकिस्तान, बांगलादेश, श्रीलंका, बर्मा, कीनिया, युगाण्डा, तन्जानिया, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटिश गायना, सुरीनाम, फिजी आदि देशों में मिलते रहे अन्याय, तिरस्कार और अवमानना से मुक्ति मिलेगी।

'उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत' उठो, जागो और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अग्रसर रहो का उद्घोष हमारे कानों में गूंजना ही चाहिए। तभी हम इस महान् संस्कृति की रक्षा और उन्नति का गहन उत्तरदायित्व उठा सकेंगे।

(आवश्यक नहीं कि लेखक द्वारा अभिव्यक्त सभी विचारों से सम्पादक सहमत ही हो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान को ना ।
पंच तत्त का पुतला ते नानक तेरा नाँ ।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिर हित पूरन होवहिं काम ।
चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजिये सो बिनस है मरी काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छोड़ सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कहु नानक थिर कछु नहीं सुपने जिउं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जिउं जात ।
इनमें कछु तेरी नहिं नानक कहिलो बखाग ।।
बिरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोऊन निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहु विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको परमेश उचरहिं, ते सब नरक कुंड महिपरहिं ।।

दशमेश गुरु गोविंदसिंह जी महाराज

पंजाबी चन्दू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—158. बालकेश्वर मार्ग तीन बत्ती, बम्बई-400006
1. जवेरी बाजार 2. ग्रांट रोड 3. कोलाबा 4. दादर टी. टी. 5. वरली नाका 6. सर्कल 7. ठाकुर द्वार 8. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट 9 घाटकोपर (पश्चिम) 10. लिंकिंग रोड, बांदरा । 11. रेलवे स्टेशन के सामने, सांताक्रुज (पश्चिम) ।

★ कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांड रोड, बम्बई 400007

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलग्न थे पादरी

तीन विदेशी पादरियों को भारत छोड़ने के आदेश

मध्यप्रदेश के सरगुजा जिले के तीन विदेशी पादरियों को भारत छोड़ने के आदेश दिये गये हैं। केन्द्रय-सरकार से तसदीक होने के बाद 'देश निकाला" के आदेश सरगुजा के पुलिस कप्तान ने जारी किये।

रायगढ़ और सरगुजा जिले में सक्रिय छह विदेशी पादरियों को आदिवासियों के बीच शक पैदा करने वाली हरकतों के कारण जुलाई, 1985 और अक्तूबर 1985 में देश निकाला के आदेश दिये गये थे। लेकिन कई दबावों के कारण यह आदेश कभी तीन महीने और कभी छह महीने चुपचाप बढ़ाया जाता रहा। यहां तक कि 1986 में इनमें से चार पादरियों को बेल्जियम सरकार ने नये पासपोर्ट जारी किये तो भारत सरकार ने बगैर एतराज वीजा दे दिया।

जिन तीन पादरियों को देश निकाले के आदेश दिये गये हैं उनके नाम हैं—लुईस द रेडेट (73) बोर्ड जीटर (63) और श्रीमती एम. जे जीटर। फादर रेडेट बेल्जियम के नागरिक हैं और श्रीमती जीटर अमेरिकन।

सूत्रों का कहना है कि सरगुजा के पुलिस कप्तान ने भोपाल पुलिस मुख्यालय को हर बार चेतावनी भेजी थी कि इन विदेशी पादरियों के देश में रहने का समय न बढ़ाया जाये। ये उरांव जाति के आदिवासियों का बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। गैर-सरकारी सूत्रों के मुताबिक सरगुजा और रायगढ़ के उरांव जाति के 90 फीसदी आदिवासियों का धर्म परिवर्तन किया जा चुका है। पिछले दिनों भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष कैलाश सारंग ने आरोप लगाया था कि सोनिया गांधी के दबाव में विदेशी पादरियों का समय बढ़ाया जा रहा है।

बेल्जियम के नागरिक फादर रेडेट 1974 से मध्य प्रदेश में हैं। उन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना पेशा सामाजिक काम करना बताया है। 1986 में वहां की सरकार ने उन्हें पासपोर्ट नं. 029679 जारी किया, जिसकी मियाद 1991 तक है। फादर रेडेट का बीजा नं 344 है। अमेरिकी नागरिक श्री और श्रीमती जीटर सीटपुर सरगुजा जिले में सक्रिय हैं। बी ई. जीटर का पासपोर्ट 1983 में जारी हुआ और मियाद 1988 तक थी। उनका पासपोर्ट नं. 24759701 और गारंटी क्राइस्ट चर्च मिशन इण्डिया विलासपुर की है। 1948 से हिंदुस्तान के अलग-अलग हिस्से में रह रहे फादर जीटर 1984 में सरगुजा आये। उन्होंने अपना पेशा कंप्यूटर सलाहकार और मिशन स्कूल में कंप्यूटर टेक्नालोजी पढ़ाना बताया। उनकी पत्नी एस.जे. जीटर का पासपोर्ट नंबर 24759701 और बीजा नंबर 5980 है। उन्होंने अपना पेशा हटल अधीक्षक बताया है।

—जनसत्ता से साभार

पं० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात

अजमेर विख्यात आर्य विद्वान् एवं अमर शहीद सरदार भगतसिंह के गुरू सांख्य योगाचार्य पं. उदयवीर जी शास्त्री को चार अगस्त को जवाहर लाल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शास्त्री जी की उम्र इस समय 93 वर्ष का है। वे कुछ समय से अपनी धर्म पत्नी सहित यहां अपनी कन्या श्रीमती उषा जी के यहां रह रहे थे। अकस्मात प्रातःकाल संध्या करते समय उन्हें पैरों में सुन-सुन महसूस हुई और फिर उन्होंने दायें भाग में संज्ञान-शून्यता अनुभव की। उन्हें तत्काल तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज जारी है। उनके दौहित्र उनकी सेवा कर रहे हैं। उनकी बीमारी का समाचार मिलते ही परोपकारिणी सभा के सदस्य उनका कुशलक्षेम पूछने पहुंचे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पपीता एक : व्यंजन अनेक

—आभा

पपीता बाजार में आसानी से बारहों महीने उपलब्ध रहता है और सबसे सस्ते फलों में एक है।

यह पाचन शक्ति बढ़ाने वाला, पित्त को शांत करने वाला, आमाशय की नलियों को मुलायम करने वाला, कब्ज दूर करने वाला और बलवीर्यवर्धक फल है।

पपीते के कई व्यजंन बनाये जा सकते हैं। इनमें सर्वाधिक सरल-सरस और सुपाच्य व्यजंनों को बनाने की विधि दी जा रही है।

पपीते को खीर

सामग्री—आधा किलो कच्चा पपीता, एक लीटर दूध, 250 ग्राम चीनी उपयुक्त मात्रा में गोला, चिरौंजी, काजू, बादाम व मोटी इलायची।

विधि—पपीते को छीलकर अन्दर के बीज निकाल कर कस लें। साफ पानी से चार-पांच बार धोए। कुकर में डालकर तीन सीटी लगने तक गैस पर रखें। ठंडा होने पर निचोड़ लें। बर्तन में उबला हुआ दूध लें। उसमें निचोड़ा हुआ पपीता और चीनी मिलाए। खीर को गाढ़ा होने तक पकाएं। ठंडा करने से पहले मेवे के टुकड़े करके डाल दें। छोटी इलायची को पीस कर उसमें मिला दें। यह खीर खाने में रुचिकर तो लगेगी ही, पौष्टिक भी है।

पपीते की बर्फी

सामग्री—एक किलो कच्चा पपीता, आधा किलो खोया, 800 ग्राम चीनी, 200 ग्राम घी, किशनिश, गिरी, चिरौंजी, पिस्ता, छोटी इलायची।

विधि पपीते को छीलकर अन्दर के बीज निकाल दें। फिर पपीते के छोटे छोटे टुकड़े करके पानी में उबाल लें। जब पपीता उबल जाये तो थाली में निकाल कर मसल लें। फिर कड़ाही में घी डालकर भून लें। फिर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थोड़ी देर बाद खोया भी कड़ाही में डाल दें और चलाये। जब महक आने लगे तो उतार लें। फिर चीनी की चाशनी बना कर पपीते और खीर के मिश्रण में डाल कर चलायें। गाढ़ा होने पर बारीक कटा हुआ मेवा डाल दें। अब थाली में घी लगा कर इस मिश्रण को उसमें फैला दें। ऊपर से कटी हुई गिरी चिपका दें। ठंडा होने पर चाकू से छोटे-छोटे टुकड़े काट लें।

पपीते का हलवा

सामग्री—पपीते का एक किलो गूदा, 500 ग्राम शक्कर, 100 ग्राम घी अथवा 250 ग्राम खोया, 4 ग्राम साइट्रिक एसिड लीजिए चुटकी भर पीला रंग व कुछ मेवा।

विधि—हलवा बनाने के लिए अच्छा पका हुआ पपीता लीजिए। पपीते को धो कर छिलका निकाल लीजिए। चाकू से सब गूदा निकालकर कुचल लीजिए। बीज निकालकर किसी छलनी से या पतले कपड़े से उस गूदे को छान लीजिए। इस गूदे को तोलकर ही ऊपर दी गई मात्रा में वस्तुएं डालें।

गूदे को बर्तन में डाल कर आग पर गरम करने के लिए रख दें। उसमें थोड़ी-थोड़ी चीनी डालकर चलाते रहिए। उबाल आने पर साइट्रिक अम्ल डालिए। खोये को अलग बर्तन में गुलाबी होने तक भूनें। जब गुदा गाढ़ा होने लगे तो उसमें खोया और घी डाल दीजिए। आँच कुछ कम कर दीजिए। इसे तब तक चलाते रहिए जब तक यह जमने योग्य हो जाये। अगर इसकी बर्फी बनाना चाहें तो थाली में घी लगाकर मेवा, इलायची पीस कर डालने के बाद चाँदी का वरक लगा दीजिए। जमने पर इच्छानुसार टुकड़ों में काट लीजिए।

पपीते के कोफ्ते

सामग्री—आधा किलो कच्चा पपीता, 250 ग्राम आलू, 250 ग्राम बेसन 200 ग्राम सरसों का तेल, हरी मिर्च, हरा धनिया, अदरक, लाल मिर्च और नमक स्वाद अनुसार।

विधि—पपीते को छान कर अन्दर के बीज साफ कर दें। आलू छील

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लें। आलू और पपीते के छोटे-छोटे टुकड़े करके पानी में उबाल लें। उबल जाने पर थाली में पपीता और आलू मसल लें। उसमें बेसन, कटी हुई हरी मिर्च, अदरक, पिसी लाल मिर्च डाल कर हाथ से मिला लें। कड़ाही में तेल गरम करके छोटी-छोटी गोलियां बना कर तल लें। इन्हें चटनी के साथ खाइये।

पपीते का रायता

सामग्री—एक छोटा पपीता, 400 ग्राम दही जीरा, काली मिर्च, लाल मिर्च, हरी मिर्च, स्वाद के अनुसार हरा धनिया, आवश्यकतानुसार नमक।

विधि—पपीते को कद्दूकस कर लें और पानी में नमक डाल कर उबालें। जब पपीता गल जाए तो उसे छलनी में रखकर अच्छी तरह मसल दें। फिर जीरा, काली मिर्च, लाल मिर्च, भून कर महीन पीस कर व स्वाद के अनुसार नमक डाल कर सब को दही में मिला दें। इसे खूब फेटें। जब अच्छी तरह मिल जाए तो उबाला हुआ पपीता मिला दें। ऊपर से हरा धनिया, हरी मिर्च काट कर मिला दें।

पपीते का अचार

सामग्री—एक किलो कच्चा पपीता, 200 ग्राम सरसों का तेल, एक चम्मच सौंफ, एक चम्मच लाल मिर्च, 50 ग्राम अदरक, पिसी हल्दी, हींग, नमक, राई।

विधि—पपीता धोकर छिलका उतार कर बीज निकाल लें। छोटे-छोटे टुकड़े काट कर उबाल लें। उबल जाने के बाद इन टुकड़ों को सुखा लें। फिर बड़ी कड़ाही में तेल डाल कर हींग, हल्दी, अदरक, सौंफ आदि को भून लें। अब किसी थाली या परात (लोहे और पीतल की न हो) में उबला हुआ पपीता रखें। उसमें नमक और गरम किये सब मसाले हाथ से अच्छी तरह मिला लें। किसी कीटाणु रहित बर्तन में दबा-दबा कर भर लें। एक हफ्ते में अचार खाने लायक हो जायेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान (मासिक) के नियम

1. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जन-ज्ञान' के रैपर पर लिखें पते पर अंकित रहती है।)
2. 'जन-ज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
4. कागज, छपाई और डाक-शुल्क अत्यधिक वृद्धि के कारण फरवरी सन् 1987 से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य तीन रुपये पचास पैसे कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य पैंतीस रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है।
6. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें। मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में 7 रु. 50 पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त लगता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्था को।
7. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापिस आने पर संस्था को 7-50 पैसे की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चों का कोना

नानी और टी. वी.

(एक)

नानी से अब कोई सुनता नहीं कहानी,
जब से आया टी. वी., हुइ रिटायर नानी।

(दो)

अब कहानियां अपनी, उसको लगे पुरानी,
बच्चों संग अब टी. वी., खूद भी देखे नानी,

(तीन)

हर पल नया तमाशा, हर पल नई कहानी,
टी. वी. तो है जैसे, नानी की भी नानी,

—सूर्यभानु गुप्त

आप हमारी सहायता इस प्रकार कर सकते हैं

1. वेद मन्दिर (इब्राहीमपुर) में यज्ञशाला और पन्द्रह हजार रुपये देकर कमरा बनवायें। नाम का पत्थर लगाया जाएगा।
2. संस्थान द्वारा वेदप्रचार और इस्लाम-ईसाइयत व देशद्रोहियों के षड्यंत्र से हिन्दू समाज को सचेत करने के लिए तीस के लगभग ट्रेक्ट करोड़ों की संख्या में प्रसारित किये जा चुके हैं। आप भी इन्हें अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटिये। मूल्य 60 पैसे प्रति है। ट्रेक्टों की सूचि प्रतिमास जनज्ञान (मासिक) में प्रकाशित होती है।
3. धर्म-प्रचार के पावन अपराध में चलाये जा रहे 40 मुकद्दमे लड़ने के लिए यथाशक्ति धन प्रतिमास भेजें।
4. जनज्ञान (मासिक) के सदस्य बने और अधिकाधिक संख्या में अन्यों को बनायें। (वार्षिक मूल्य 35 रुपये)
5. 501 रुपये भेजकर जनज्ञान (मासिक) के आजीवन सदस्य बनें और बनायें। (15 सितम्बर 1987 तक आजीवन सदस्य बनने वालों को बृहत्काय पुस्तक वैदिक सम्पत्ति उपहार-स्वरूप भेंट की जाएगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, हेतु, उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

कैसेट नं		
1.	वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित)	25.00 रु.
2.	भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना वाजपेयी	25.00 रु.
3.	गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में)	25.00 रु.
4.	महर्षि दयानन्द, गायक बाबूलाल राजस्थानी व जयश्री शिवराम	25.00 रु.
5.	आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, रोहिणी, स्मिता व देवव्रत शास्त्री	25.00 रु.
6.	योगासन एवं प्राणायाम स्वयं शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य	25.00 रु.
7.	आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या	25.00 रु.
8-9.	महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन)	50.00 रु.
10.	पथिक भजन सिन्धु, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
11	सत्यपाल पथिक भजनावली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक	30.00 रु.
12.	मुसाफिर भजन सिन्धु, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन	30.00 रु.
13.	श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्म गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान	30.00 रु.
14.	आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा	30.00 रु.
15.	वेद गीताञ्जली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार	30.00 रु.
16.	भजन सुधा, आ. प्रज्ञादेवी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन	30.00 रु.
17-18	वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कैसेट) मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती प्रथम - प्रातः प्रार्थना, सन्ध्या, ईश्वर प्रार्थना, दैनिक यज्ञ, यज्ञप्रार्थना। द्वितीय - स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, बृहद्यज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ पाक्षिक यज्ञ दैनिक उपयोगी मन्त्र, शिवसंकल्प पाठ।	60.00 रु.

कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ अग्रिम भेजिये ।

5 या उससे अधिक कॅसेटों के आदेश पर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री ।

5 से कम के लिये कृपया 13 रू. अतिरिक्त डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये ।

वी. पी. पी. नहीं ।

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ्त ।

प्राप्तिस्थान - संसार साहित्य मण्डल

141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082

फोन-5617137

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिये

1. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की — 60 पैसे
2. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु: — 60 पैसे
3. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु: — 60 पैसे
4. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर — 5 रु.
5. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर — 60 पैसे
6. पोस्टर—दो प्रकार के — 1.20 पैसे
7. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी — 60 पैसे
8. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी — 60 पैसे
9. हिन्दू जागो—देश बचाओ ! — 60 पैसे
10. इस्लाम : एक परिचय — 60 पैसे
11. Bible in the Balance — 1 रु०
12. A Challenge to the Christian Faith — 30 पैसे
13. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु: — 60 पैसे
14. पादरियों को चुनौती — 60 पैसे
15. बाइबिल को चुनौती — 60 पैसे
16. क्या ईसा खुदा का बेटा था ? — 60 पैसे
17. …और पादरी भाग गया — 60 पैसे
18. Christianity Unmasked — 1 रु०
19. The Clarion Call — 60 पैसे
20. जनज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक — 6 रु०
21. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ? — 60 पैसे
22. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? — 60 पैसे
23. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? — 60 पैसे
24. हिन्दू जागेगा : देश का संकट भागेगा — 60 पैसे

1000 पुस्तकें मंगाने पर 50% और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25% छूट
प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम एक चौथाई धन पेशगी भेजें

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेश रानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. अलीपुर दिल्ली-३६ | आश्विन संवत् २०४४ सितम्बर १९८७ | D-C-201 N. R. 10719/65

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य : 500 रु.
2.	सामवेद: आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	80 "
3.	वेद-ज्योति	15 "
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मन्त्रों की व्याख्या)	30 "
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	20 "
6.	अथर्ववेद परिचय	6 "
7.	संस्कार विधि (सजिल्द)	20 "
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	30 "
9.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा. रामनाथ वेदालंकार)	25 "
10.	सत्यार्थ-प्रकाश (10"×15") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	151 "
	" " (आर्ट पेपर पर)	201 "
11.	ज्योति-स्तम्भ	10 "
12.	वैदिक सम्पत्ति	101 "
13.	योगासन	2 "
14.	योग और ब्रह्मचर्य	3 "
15.	Concept of God	50 "
16.	श्रीमद् दयानन्द प्रकाश	25 "
17.	LIGHT OF TRUTH	50 "
18.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	6 "
19.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	50 "
0.	संक्षिप्त महाभारत	50 "
.	संक्षिप्त रामायण	10 "
	गायत्री मन्त्र (चार्ट) हिन्दी व्याख्या सहित	1.50

ोनों ओर पत्ती लगा । कम से कम दस प्रतियां मंगवाये । सूचीपत्र मुफ्त आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें ।

ालय: 5, आर्यसमाज रोड लबाग, नई दिल्ली-110005

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम अलीपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi